शिक्षा विभाग, राजस्थान

के लिए

कृष्णा जनसेवी एण्ड को, बीकानेर

माटी की सुवास

सम्पादक
सावित्री डागा

शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर

शिक्षा विभाग, राजस्थान बीकानेर के लिए

प्रकाशक कृष्ण जनसेवी एण्ड को
दाऊजी मंदिर भवन, बीकानेर

सम्पादक सावित्री डागा

मूल्य चौदह रुपये नब्बे पैसे

आवरण हरिप्रकाश त्यागी

संस्करण प्रथम 1987

मुद्रक एस० एन० प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032

MATI KI SUVAS Edited by Savitri Daga Price Rs. 14 90

आमुख

शिक्षक—सम्मान—समारोह के अवसर पर
शिक्षा विभाग के लेखक कवि अध्यापकों की
कृतियाँ हिन्दी संसार को सादर प्रस्तुत हैं।

ता॰ प्र॰ जोशी

(तारा प्रकाश जोशी)
निदेशक, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान, बीकानेर

शिक्षक दिवस प्रकाशन : परिचय

शिक्षक शिक्षण काय के लिए तो प्रतिबद्ध हैं ही, पर उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के अनेक आयाम और भी हैं। इसी को मद्देनजर रख कर राजस्थान के शिक्षा विभाग ने राजस्थान के सजनशील शिक्षक लेखकों की साहित्यिक प्रतिभा को प्रोत्साहन देने और उजागर करने हेतु वर्ष 1967 में एक योजना तयार की। योजना के तहत शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) के अवसर पर सजनशील शिक्षक लेखकों की रचनाओं के सकलन प्रकाशित करने का काय हाथ में लिया गया। 1973 तक इस योजना के अन्तगत विविध विधाओं के 31 सकलन प्रकाशित किये गये। रचनाओं के चयन सपादन का काय निदेशालय का प्रकाशन अनुभाग करता था। बहुआर से योजना को प्रोत्साहन मिलने पर चयन सपादन का काय भारतीय ख्याति के विधा के ममन लेखकों से करवाकर योजना को एक नया रूप दिया गया। 1974 से अब तक 70 विविध विधाओं के सकलन प्रकाशित हो चुके हैं। इस तरह प्रकाशित सकलनों की कुल सख्या 101 हो गई है।

इस योजना द्वारा प्रोत्साहन पाकर राजस्थान के कई सजनशील शिक्षक लेखकों को आज भारतीय स्तर पर प्रकाशन स्थान प्राप्त हो रहा है। अन्य राज्यों के शिक्षा विभागों व भारतीय ख्याति की पत्रिकाओं ने योजना के अन्तगत प्रकाशित सकलनों की सराहना की है।

वर्ष 1987 के सकलन और सम्पादक निम्नलिखित हैं—

(1) बीच का आदमी तथा अन्य कहानियां (कहानी सकलन) स० शानी। (2) मोतियों का थाल (बाल साहित्य) स० मनोहर वर्मा (3) सिरजण री सौरम (राजस्थानी विविधा) स० नन्द भारद्वाज (4) माटी की सुवास (हिन्दी विविधा) स० सावित्री डागा (5) निर्निमेष (कविता सकलन) स० मेघराज मुकुल।

सम्पादकीय

शिभव मित्रा के रचनासंसार क बीच मुझे आज पुलित्जर की एक उक्ति का सहसा स्मरण हो रहा है कि 'तथ्यों को बहुत ही पावन व पवित्र होना चाहिए। उन पर की गई टिप्पणियाँ चाहे कितनी ही बेबाक और स्वतन्त्र हों।' सच्चे अनुभवों की धरती से उपजी इन रचनाओं के साथ यह कथन सत्य प्रतीत होता है। शिक्षक के अन्तमन मे एक सजक हमेशा विद्यमान रहता है यह एक अकाट्य सचाई है, एक अतर्क वास्तविकता है। विद्यार्थी के भविष्य निर्माण म उसकी सजनाशक्ति का एक बहुचर्चित प्रत्यक्ष आयाम हमें सबको दिखाई देता है, किन्तु वाणी के जिस माध्यम से वह शिक्षा का महत कर्म करता है वह माध्यम अर्थात वाणी भी उसकी आराध्या है। और इसी से वह चाहे तो साहित्य के अमृतकोश को भी भर सकता है। शब्द की साधना अध्यापक के लिए भी उतनी ही आवश्यक है, जितनी एक सजनधर्मी साहित्यकार के लिए अस्तु शिक्षक म भी सजनधर्मिता अन्तर्निष्ठ है। यह कोई विचित्र सयोग नहीं कि 'अरे इतने शिक्षक लेखक भी हैं।' साहित्य के इतिहास म अमर, अनेक ऐसे लेखक हुए हैं जो अपने प्रारम्भिक जीवन म या सम्पूर्ण जीवन म शिक्षक रहे और साहित्याकाश को भी अपनी अविराम लेखनी से समृद्ध करते रहे। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक की सुप्त सृजनधर्मिता को अपनी सम्पूर्ण विराटता के साथ प्रकट होने के अवसर मिलें या उसे मच दिया जाय।

यह एक दूसरी सुखद सच्चाई है कि राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग ने शिक्षक के इस पक्ष को, उस सजन क्षमता के इस आयाम को, आज से ठीक दो दशक (1967) पूर्व पहचान लिया। आज भी यह प्रान्त इस दृष्टि से देश का सम्भवत पहला प्रान्त है जो गत बीस वर्षों से निरन्तर अपने विभाग के सजनधर्मी शिक्षकों की साहित्यिक रचनाओं के सकलन शिक्षक दिवस (पांच सितम्बर) पर प्रकाशित कर उन्हें न केवल प्रेरित, प्रोत्साहित करता है, वरन् उन्हें समकालीन साहित्य की भारतीय धारा से जुडने का अवसर देता है।

अभिव्यक्ति व्यक्ति की एक अनिवार्य विवशता होती है अनभिव्यक्त रह कर व्यक्ति एक मानसिक यत्रणा को भोगता है। अभिव्यक्ति की स्वतत्रता और अवसर व्यक्ति का हित तो करते ही है, समाज और व्यवस्था भी उससे धन्य होती है। व्यक्ति अपने आतरिक व बाह्य परिवेश के द्वन्द्व, घटनाक्रम और उथल-पुथल से चलित विचलित होता है और तब तक तनाव मुक्त होकर सहज नही हो पाता, जब तक वह अपनी तदजन्य अनुभूतिगत प्रतिक्रियाओ को वाणी नही दे लेता। राजस्थान प्रात के शिक्षा विभाग ने शिक्षकों को अभिव्यक्ति का अवसर देकर एक अत्यत प्रशसनीय रचनात्मक कार्य किया है। जिस सस्था की सेवा मे वे हैं, जो समाज और तत्र उन्हे मिला है उसकी परिवेशगत सच्चाइयो के प्रति वे अपनी रचनाओ मे पूरी प्रखरता के साथ मुखर हुए है। शिक्षक की सीमाए और सम्भावनाए भी इससे उजागर हुई हैं कि वे मौलिक चिंतन, सृजन और आचरण के स्तर पर कहा हैं?

प्रस्तुत सकलन गद्य विधाओ पर केन्द्रित है। शिक्षा विभाग से इसके लिये मुझे एक सौ दस अध्यापकों की कुल एक सौ तियालीस रचनाए प्राप्त हुई। इनमे बारह लेखिकाओ की कुल पद्रह रचनाए थी। यह सख्या अपेक्षाकृत कम है। इसका कारण सम्भवत महिला शिक्षकों का दोहरा दायित्व भी हो। फिर भी मेरा निवेदन है कि उन्हे कुछ अधिक श्रम व सघर्ष करके अपनी अनुभूतियो, अनुभवो विचारो एव रचनात्मक प्रतिभा को लेखन के माध्यम से अभिव्यक्त करने का निरन्तर प्रयास करना चाहिए। महिलाओ मे यह क्षमता कम नही होती। इस सकलन की निष्पक्ष भाव से चयनित रचनाओ की सख्या इस बात का ताजा प्रमाण है।

एक सौ तियालीस रचनाए और एक सौ चौवालीस पृष्ठ सख्या की सीमा निर्धारण। ऐसी स्थिति मे मनचाही अधिक रचनाओ का चयन सम्भव नही था। सम्पादक के सामने यह दुविधा भी रही कि वह सामान्य शिक्षक लेखकों की रचनाओ के साथ कैसे न्याय करे? अत कुछ आधारभूत बिन्दु ध्यान मे रखकर ही श्रेष्ठ रचनाओ का चयन किया जा सकता था। इसका यह तात्पर्य कदापि नही है कि शेष रचनाए निम्न कोटि की थी और न उन शिक्षकों मे यह भाव आना चाहिए कि उनकी रचनाओ का तिरस्कार हुआ है। सच यह भी है कि रचनाओ के बीच मे श्रेष्ठता और निम्नता की रेखा खीचना भी एक कठिन कार्य रहा है। इस क्रम मे कई रचनाओ को तीन चार बार भी पढना पडा है और प्रथम अथवा द्वितीय वाचन मे सकलन की पाण्डुलिपि के लिये स्वीकृत रचनाओ मे पुन हेर फेर भी करना पड़ा है। इसके बावजूद भी मन मे यह पीडा बनी रही है कि अस्वीकृत रचनाओ मे अनेक श्रेष्ठ रचनाए रह गई। यहा उन रचनाओ की सूची देने से तो सन्ताप नही होगा स्थान ही घिरेगा। एक कठिनाई विधाओ को लेकर भी रही है। इस

सकलन मे गद्य की प्राय सभी विधाओ का यथासम्भव प्रतिनिधित्व होना चाहिए था। इसलिए अपक्षाकृत कुछ कम श्रेष्ठ होने के बावजूद भी कुछ एसी विधाओ की रचनाओ को सकलन म लेना पडा जिनकी सख्या बहुत कम थी। कुछ श्रेष्ठ रचनाओ को इसलिए भी छोड दना पडा क्योकि वे बहुत लम्बी थी और उसी विधा म कुछ श्रेष्ठ छोटी रचनाए उपलब्ध थी। रचना चयन के आधार बिन्दु और प्रक्रिया का स्पष्ट कर दने के पश्चात मै समझती हू कि शिक्षक लेखको म किसी प्रकार के सन्देह की गुजाइश नही रहनी चाहिए और न उन्ह किसी प्रकार के अस्वीकृत भाव से ही ग्रस्त हाना चाहिए।

जो रचनाए सकलन म प्रकाशनाथ प्राप्त हुइ व कहानी, उपयास अश को छोडकर गद्य की नाना विधाओ मे थी—निबन्ध, एकाकी, पत्र ससमरण, यात्रा, रेखाचित्र, रिपोताज, जीवनी, आत्मकथा, लघुकथा, चितन आदि। कुछ विधाओ में रचनाए बहुत कम थी और कुछ मे अपेक्षाकृत काफी अधिक। चयनित रचनाओ को विधाक्रम म व्यवस्थित कर पृथक्-पृथक स्तम्भो म व्यवस्थित किया है। किसी लेखक को श्लाघा या हीनता का भाव न छू पाय, इसक लिए सभी रचनाओ को विधानुसार अकारादि क्रम म रखा गया है।

चयनित रचनाओं की विषयवस्तु का जब समग्रत विवेचन विश्लेषण करते हैं तो कतिपय सुखद तथ्य सामने आते हैं। सभी रचनाकारो की रचनाओ म समाज हित, मानवकल्याण, परिवेश के प्रति जागरूकता, व्यवस्थातत्र के प्रति सूझबूझ, उदात्त जीवन की प्रेरणा दन वाला आदशभाव विद्यमान है। नारी जीवन की करुण स्थितियो व समस्याओ का चित्रण भी इनमे हुआ है। शिक्षक, शिक्षण सस्थाए शिक्षातत्र एव प्रणाली की विसगतिया पर इन लखको न अधिकाश रचनाओ म तीखा प्रहार किया है जो उनका एक परिवेशगत यथाथ है जिसे पूरी विश्वसनीयता और इमानदारी स शिक्षक लेखक ने अभिव्यक्ति दी है। इनम हल्का फुल्का मनोरजन नही है और न कला रूप व शिल्प का अतिवादी दुराग्रह ही है। अनेक ऐसे लेखक भी है जो एक से अधिक गद्य विधाओ मे सजन करत है, यह उनकी सृजन क्षमता का परिचायक है। सक्षेप म यह कह सकत हैं कि शिक्षक लेखक की लोक चेतना के दायरे काफी विस्तत है। साहित्य, सस्कृति धम पुराण इतिहास स लकर अपन समय के सामाजिक यथाथ का ज्ञान एव सूक्ष्मतम अनुभूति उसे है। प्रस्तुत सकलन की रचनाए इस सत्य की साक्षी है।

इस छाटी सी भूमिका म सकलन की सभी रचनाआ पर समीक्षात्मक टिप्पणिया द पाना सम्भव नही ह और अति सक्षिप्त टिप्पणिया दने की उपादयता भी मुझे नही लगती अत इनक रसास्वादन एव मूल्याकन का काम विन पाठको

के लिए छोड देना ही उचित होगा। फिर भी कुछ रचनाओ की विशेषताओ का उल्लेख अवश्य करना चाहूगी—यह सकेत देते हुए कि शिक्षक लेखकों मे वह साहित्यिक ऊचाई भी विद्यमान है जो स्थापित लेखको म होती है। मीरा चटर्जी औरो के लिए (रेखाचित्र, शशिबाला शर्मा) उनकी यादें,' (सस्मरण श्री प्रेमपाल शर्मा) कैंची (मुरारी लाल कटारिया), वन देवता'(रमेश भारद्वाज) पैर (जगदीश प्रसाद सैनी) टाग और आदमी (माधव नागदा) रक्त बीज (गौरी शकर आर्य) 'नरकवाडा' (पुष्पलता कश्यप), एक परीक्षा केन्द्र का आखो देखा हाल' (आनद तिवारी), कहा छपी हो मा'(सुमन सक्सेना) आदि कुछ ऐसी रचनाए है, जिनमे न केवल भाषा शिल्प की गरिमा के ही दर्शन होते हैं, अपितु रचनाकार की उस गहरी अन्तर्दृष्टि से भी साक्षात्कार होता है जो अपने परिवेशगत यथार्थ का छिद्रान्वेषण कर उसकी मार्मिक सवेदना को पाठक के समक्ष प्रस्तुत करती है। समाज व्यवस्था व प्रतिष्ठा के स्तर पर पसरता हुआ अनैतिकता का भस्मासुर, चारो ओर फैलती कर्त्तव्यहीनता, नीतिनियमो की अराजकता, नारी की करुण दशा आदि के प्रति एक सहज आक्रोश इन रचनाओ म है।

'आखिरी प्रेम पत्र (भगवती लाल व्यास) 'एग्जामिनशन फीवर' (त्रिलोक गोयल) पैदल चलने के फायदे (निशात) म सामाजिक चिन्तन के नये आयाम उदघाटित हुए हैं। यह सामाजिक व्यवस्था की पीडा व्यग्य म भी व्यक्त हुई है। तो दूसरी ओर 'हम प्रकृति से सीखें (शकुन्तला जैन)'अमृत कलश'(श्यामसुन्दर) 'मैं शिक्षक हू (दयावती शर्मा) चरवति चरवति' (रामगोपाल शर्मा) वल्व बुझ जाता है' (विश्वम्भर प्रसाद) 'कैसे भूलू' (गोपी लाल शिल्पक) आदि की रचनाए जीवन जगत के प्रति एक दार्शनिक दृष्टि, चिंतनशीलता गहरी सवेदनशीलता भाषा की साहित्यिक प्राजलता के लिए उल्लेखनीय है। साथ ही समाज के स्वस्थ वर्तमान और भविष्य की भी इनमे चिंता है।
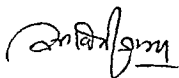
इस सकलन मे तीन प्रकार के निबन्ध व जीवनवृत्त सम्मिलित किये गये हैं आप एसे तो न थे (वासुदेव चतुर्वेदी) 'जीवन मूल्यो की शिक्षा नैतिक शिक्षा (सीताराम स्वामी) पीढियो का तर्क (रूपनारायण काबरा) जीवन के प्रति एक सोच एव विचारो की सुलझी अभिव्यक्ति की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। 'शब्द साधना हो क्यो साहित्य और आधुनिकता कविता के सन्दर्भ म', सत मावजी कालीन साहित्य और कला मे वेणश्वर मे शिक्षक लेखको का साहित्यिक अध्ययन व शोधदृष्टि परिलक्षित होती है। भगवान परशुराम शिक्षामन्त स्वामी केशवानन्द स्वतत्रता सनानी मलाराम वफा' आदि रचनाए भी रचनाकारो के गभीर अध्ययन एव आदर्शवादी दर्शन का रेखाकित करती है। ये शुभ लक्षण हैं कि श्रमसाध्य अध्ययन, शोध और समीक्षात्मक साहित्य सृजन म भी वे पीछे नहीं हैं।

हास्य व्यग्य प्रधान निबधा म और अय विधाआ मे भी जहा हास्य व्यग्य का प्रयोग हुआ है, वह पूणत भद्र और शालीन है। साथ ही वह हमारे वतमान तत्र जीवन शली, और आचरण मे परिव्याप्त विसगतिया और अर्तविरोधो पर तीखा प्रहार करता है।

इस सबके बावजूद यह विश्वास कर लेना कि य रचनाए चरमपूणता लिय हुए हैं, एक प्रवचना भी हा सकती है। इनक रचनाविायास, वस्तु प्रस्तुति, और फिर लय-परिणिति म कही दुबलताए भी दखी जा सकती ह। अत रचनाकम एक निरतर साधना की अपक्षा रखता ह। प्रबुद्ध शिक्षक लेखको का यह सब बतान की आवश्यकता मैं नही समझती। लेखक का स्वय ही अपनी रचना का समीक्षक या पारखी होने का अभ्यास करना चाहिए। इन रचनाआ मे निबधा की सख्या सर्वाधिक थी पर अय विधाआ मे भी लेखका का पर्याप्त सफलता मिली है अत लघुकथा, पत्र, एकाकी, डायरी, रेखाचित्र आदि से भी अपन कथ्य को अधिक सप्रेषणीय बनाया जा सकना ह।

अत म एक बार मैं फिर यह निवेदन दोहराना चाहूगी कि जिन शिक्षक मित्रा की रचनाए इस सकलन म नही आ पाई ह उसके लिए पष्ठसीमा के अवरोध के अतिरिक्त मरी मूल्याकन दष्टि मे भी कोई चूक रही हो किन्तु वे अपन रचना कम का कृपाकर अस्वीकृत और उपक्षित न मानें। इस सकलन म सकलित रचनाआ के लेखका और उन लेखक बधुआ को भी, जिनकी रचनाए इसम नही आ पाई हैं, धयवाद नापित करत हुए यह निवेदन करती हू कि सम्पूण मानवीय आस्था के साथ वे अपना लेखकीय दायित्व निभात रह। म एक बार पुन समस्त रचनाकारा को बधाइ एव शुभ कामनाए अपित करती हू। मरा यह अकिंचन श्रम भी सस्नेह उन्ही का समर्पित ह।

118, नेहरू पाक
जोधपुर (रा०)

सावित्री [signature]

अनुक्रम

निबन्ध

साहित्यिक

हास्य व्यग्य

एकाकी

संस्मरण

रिपोर्ताज

रेखाचित्र

गद्यगीत

लघुकथा

चिन्तन

माटी की सुवास

आप तो ऐसे नहीं थे

*

वासुदेव चतुर्वेदी

अगर किसी से यह कहा जाए कि आप ऐसे तो नहीं थे तो सामने वाला यह सुनकर सोचेगा कि मैं ऐसा नहीं था तो फिर कैसा था? क्या परिवर्तन आ गया मुझमें कौन से सुरखाब के पर लग गए जिससे मुझमें कोई परिवर्तन आ गया मालूम पड़ रहा है इन सज्जन को। हो सकता है सामने वाले का नजरिया बदल गया हो जिससे इनके लहजे में उपहास झलक रहा है। बात अटपटी जरूर है पर आदमी अपने आपको पहचाने इसलिए जरूरी है कि और आदमी उसके बारे में क्या सोचते हैं—इसका भी अहसास हो। इस कथन से यह भी अभिप्राय निकाला जा सकता है कि सामने वाला यह कहना चाह रहा है कि मैं जो बाजी मारना चाह रहा था—जो काबि-लियत मुझे प्राप्त करनी चाहिए थी वह दाल भात में मूसरचंद बनकर आपने प्राप्त करली। आपसे तो ऐसी उम्मीद नहीं थी। आप तो ऐसे नहीं थे। इस प्रसंग में ही चिन्तन के ढेर सारे प्रश्न उभरते हैं। अगर आप ऐसे नहीं थे तो फिर कैसे थे। बदलाव नजरिए में आया या सचमुच में किसी काय कारण सम्बन्ध के उप-स्थित होने पर आप बदल गए। बहरहाल कोई धमाका हुआ जरूर है।

अतीत की उस सुनहरी किताब के फड़फड़ाते पृष्ठों को स्मृतियों की भटकन में देखता हूं—झांकता हूं तो लगता है सुरखाब के पर निकले नहीं लगा दिए गए थे। ठीक उसी तरह जिस मनुष्य ने नकली पंख लगाकर उड़ने की कोशिश की थी। हुआ यों कि जिन्दगी में एक बार मैं भी महामहिम के हाथों से महिमा मंडित हुआ था। जीवन का यही चरमोत्कर्ष था शायद। उस समय न तो मुझमें कोई विकार ही आ पाया था और न भावातिरेक से गद्‌गद होने की स्थिति ही आई थी। जिन

सीढिया स गुजर कर और लोग महिमा मडित हुए थ उन्ही सीढिया पर चढन का माभाग्य मुने भी मिला था। जिन लागा की निगाह म कभी अपात्रत्व झलकता था अब व ही एस मौक पर यह कह कि यार तुम भी बट हुनरबाज निकल तुम ता ऐस नही थ। अब ता तुम्हार सुरखाव क पर लग गए हैं, एमी कौन सी टेक्नीक अपनाइ थी जिसम तुमन यह मदान मार लिया ? अब उन्ह कस समझाये कि यह ता जीवन की तपस्या मरी अपनी क्षमताआ का मूल्याकन और अपने परिश्रम का प्रतिफल था।

अगला प्रश्न व पूछेंगे—जनाब कौन पूछता है इन सबका! य फिकरे तो केवल प्रयाग म लान के हैं। तुम तो यह बताओ कि केस बनान मे कितना रुपया फूका ? पुलिस का कस बनते ही वादी प्रतिवादी अपना पैसा दाव पर लगात हैं। बन्दे सा पाव का फिकरा काम म लें तो पसा फूकते फूकत एक दिन आदमी का जमीर भी फूक दिया जाता है और तो और हालत यहा तक आती है कि आदमी भी फूक दिया जाता है।

दशन की परिभाषा म कहा गया ह कि जा तू है वह मैं नही हू और जो मैं हू वह तू नही है। अगर जीवन का वास्तविक सत्य पाना चाहो ता न मैं और न तू म है, वह छिपा है अपन भीतर उस ढूढ निकालो तो सब कुछ मिल जाएगा।

विडम्बना यह है कि सब कुछ पान के लिए पहल कुछ खोना पडता है। उन महानुभाव ने कुछ खोन की परिभाषा 'कस बनाने मे कितना फूका' से की है। दाप उनका है भी नही। दोप तो आज क युगधम का है जिसम मनुष्य की विकार ग्रस्त मनोवत्ति काम करती है।

मैंने दखा है लोग कुछ पाने के लिए किस प्रकार विभिन्न टोटके अपनाकर झूठे सच्चे सर्टिफिकेट प्रमाणा और तथ्यो की तह जमाकर वेदा की पुस्त की तरह प्लास्टिक कोटेड करवाकर प्रस्तुत करत है। सच मानिए मैंन तो ऐसा नही किया। प्रकरण पर जब सस्तुति टाइप करवाइ जा रही थी तब अधिकारी बोलता जा रहा था और टाइप करन वाला खटाखट टाइप किए जा रहा था। अतिशयोक्तिपूर्ण अभिमत को सुनकर मैने कहा था सर ये गुण ता मुझम नही है।

'चुप रहो। केस जब भारी नही बनगा तो बात कसे बनेगी।'

तब मैंन महसूस किया था कि केस का भारी बनना बाजी मारने के लिए आवश्यक है। भूलकर भी केस का अथ केश स नही है। अगर कोई इस विपरीत अथ म ले तो कनेश का कारण जरूर है।

न तो मैंने कभी सुरखाब का दखा न सुरखाब के परा का ही देखा। रूसी कहानिया की पुस्तका म इस सुरखाब का नाम जरूर पढा था। अब जब बात चलनी है तो लगता है कि यह बशकीमती परिंदा है उससे भी कीमती है उसके पर।

पर भाई लोग जब कहते हैं एवार्डी बन जाने से सुरखाब के पर लग गए हैं तो आजू बाजू ऊपर नीचे दाएं बायें देखता हूं। कुछ भी तो नया नहीं है। कुछ भी तो परिवर्तन नहीं आया है। सबकुछ 'एजयुजअल'' ही है।

यह सही है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का मूल्यांकन उन फाइलों से होता है। इस दृष्टि से व्यक्तित्व मापन की कसौटी सराहनीय काम और प्रशंसनीय सेवाएं हैं। यह लेखा-जोखा ही उसे अवार्डी बनाता है। आप कहेंगे यह सब सिद्धान्त की बातें हैं होता कुछ और है और बताया कुछ और जाता है।

मर्यादाओं की लक्ष्मण रेखा में आबद्ध कर्म पूजा जाता है पर जरूरत इस बात की है उस पूजा को निष्काम कर्म की संज्ञा दी जाए। मैं पूजा पाठ इसलिए नहीं करता कि कहीं भगवान खुश होकर मुझे अपने पास न बुला लें। कर्म ही मेरा धर्म रहा है और कर्म ही मेरी पूजा है। मेरे बाहर भीतर की समरसता ही मेरे व्यक्तित्व की पहचान है इसलिए न तो मुझे फूलों की जरूरत है और न सुरखाब के परों की। आपसे आप आता है तो आने दो की बात जब खरी उतरती है तो मैं अपना मुंह क्या मोड़ूं। निश्चित है इससे कुछ लोगों को ईर्ष्या हुई होगी कुछ को खिन्नता भी हुई होगी। आग कभी ज्वलनशीलता को नहीं छोड़ती। बर्फ कभी शीतलता के गुण को नहीं त्यागती फिर मानस इस प्रवत्ति को कैसे छोड़ सकता है। प्रतिस्पर्धा में एक पक्ष हारेगा और दूसरा जीतेगा। इसमें जीत का सेहरा जिसके माथे पर बंध गया वही सिन्दूर लगा पत्थर बन गया।

आत्मश्लाघा की प्रवंचना हरेक में होती है। ऐसी स्थिति में मनुष्य की आत्म श्लाघा की भूख मिटे। प्रयत्न यही होता है प्रशस्तियां पढ़ी जाती हैं ताकि दायरे में कैद मर्यादित वातावरण में प्रशस्तियां पढ़ी गई। कितनी सच कितनी झूठ पर मौके पर वे प्रशस्तियां ऐसी लगीं मानो किसी कोर्ट के कटघरे में खड़े मुलजिम से यह कहा गया हो कि शपथ लो कि तुम जो भी कहोगे सच के सिवाय और कुछ नहीं कहोगे ? अब जब सच के सिवाय और कुछ नहीं सुना तो तबियत बाग बाग हो गई।

अब एक दर्द आज भी हरा हो जाता है जब सोचता हूं कि 'एवार्डी' शब्द सोच समझकर रखा गया है पर इस सम्मान को संज्ञा दी जाए या पुरस्कार की। पीतल की कटोरी में चांदी का चम्मच बच्चे के लिए आत्मताप का कारण हो सकता है। नारियल पर रुपया रखकर देने की सांस्कृतिक परम्परा आज भी प्रचलित है। पत्रम् पुष्पम् तोयं का स्वरूप बदल गया। भला हो कवियों का जिन्होंने बड़े जोश खरोश के साथ कविता पाठ किया उन्हें भी पत्रम पुष्पम् के नाम पर मान आन ड्यूटी और टी० ए० की सौगात से सन्तुष्ट कर दिया गया। कवि किसी स्थान पर जाते तो पत्रम् पुष्पम् का सिक्का धल्ले से चलता और कुछ लेकर आते, पर वे तो बेचारे मास्टर थे। फिर उनका अपना काम था। एक नाई दूसरे नाई की हजामत

बनाता है तो मुफ्त म। फिर ये पत्रम् पुष्पम् की बात को कैसे रखते।

याद आ रहा है। हमारी लाइन मे आने और इस कायवश उन सीढियो पर चढने का सौभाग्य उन्हे भी मिला, वे चित्तौड जिले के एक सैकेण्ड्री स्कूल के प्रधानाध्यापक रहे। या ता जागे जोगी या जागे भोगी जिस मकान मे वे रहते थे, नीचे थी सुनार की दुकान और ऊपर रहते थे वे। रात चोर आए। सडक पर खडे होकर चोर बातें कर रहे थे। "ऊपर तो वेचारा मास्टर रहता है वहा क्या मिलेगा। अपना काम करना है तो सुनार की दुकान ही ठीक है।" बेचारा मास्टर चोरो की निगाह मे भी 'बेचारा है और प्रशासन की उलझी गुत्थियो मे भी 'बेचारा' ही है। है न यह भी एक ही विडम्बना!

रूप रग नस्ल से एक जसा प्राणी, जिस हम भाई की सज्ञा से विभूषित करे, तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। विश्व के सर्वोच्च मच पर उसने कहा— 'भारतीय कुत्ते है।" उस समय लोगो म जोश फला था। लोग यह भूल गए थे कि यह तो भाई न भाई को पहचाना था। वस्तुत कुत्ते मे जो गुण होते हैं उनकी प्रतीकात्मक व्याख्या करे ता स्थिति साफ हो जाएगी।

कुत्ता वफादार, चाटुकारिता का जीता जागता उदाहरण, गध सूघकर अप राधियो को पकडान वाला, दुश्मन को या बाहरी व्यक्तियो को घेरे मे प्रवेश करने स रोकने के लिए आक्राता बनकर चिथडे चिथडे उडा दता है। कहिए प्रतीकाथ रूप मे भाइ को भाई ने पहचाना था या नही? अपने देश मे वह सम्मानित किया गया तोहफे मे हजार वष लडन वाले सिपाही को प्रधानमन्त्री बना दिया। अ त म उसका क्या हश्र हुआ यह किसी से छिपा नही है।

सम्मान का स्वरूप चाह जा हो पर इतना अवश्य है कि यह एवार्डी का हि दी रूपा तर पुरस्कार का ही रूप है।

आज जब अतीत की झलकियो मे अपने आपको टटोलना हू तो लगता है बात काफी हर्षातिरेक की रही थी जगह जगह शिक्षकत्व का सम्मान था। मैं इस बात से चिंतित अवश्य हू कि जा डाक टिकिट एक बार छाप दिया जाता है वह अनिश्चित काल के लिए प्रचलन से बाहर हो जाता है। तात्कालिक स्थितियो मे भले ही यह कहा गया हो कि सम्मानित किए गए सम्मान का ठप्पा लग गया चला गगा नहाए।' बात को फिकरो म आई गई कर दी।

हर वष जब सम्मान समारोह होना है भाई लोग पूछते हैं—आप भी एवार्डी है न किस सन मे मिला था यह एवाड आपका? हा उस समय सुना तो था कि आपको भी एवाड मिला था। आज जब आपने बताया तो मालूम हुआ अ यथा हम ता यह कहने वाले थे कि इस वष आप भी ट्राय करें।

मुझे उस ट्राय गाड घाडे की याद आ गई जिसमे बठकर जवानो ने यूनान के शहर को जीत लिया था। अब इन सज्जन को कैसे समझायें कि आदमी की पहचान

उसके व्यक्तित्व व कामा से होती है। बाहरी मुलम्मा तो जब उतर जाता है ता असलियत उजागर होकर रह जाती है। इसलिए कही भूलकर उस पहचान के स्वरूप का विकृत करने का प्रयास न कर बैठें। पशु सस्कृति म जिस साड को दागकर सूरज सांड की सज्ञा से पहचान दृढ की जाती है उसी तरह यह एवार्डी शब्द को कही दागने की सलाह न भी दें तो विक्टोरिया क्रॉस की तरह इस एवाड की सक्षिप्त प्रति तैयार कर शट पर अनिवाय रूप से लगाने की सलाह तो दे ही सकते हैं। इस दृष्टि से कम से कम वष मे एक बार उस खिताब का रिन्यूवल भी हो जाए और भूले बिसरे गीतो को एक बार और दोहरा दें ताकि सागा के बार-बार पूछने की जहालत से भी छुट्टी मिले।

जो भी हो कम की पूजा करने वाले इन एवार्डियो का सरस्वती पुत्र कहलाने का जो अधिकार जन्मजात मिला है उसे सहेजने सवारने के लिए यदि खून पसीना एक करना भी पडे तो किसको आपत्ति हो सकती है। सृजन की भावभूमि पर हम अपनी विवशताए पेट दिखाकर करते हैं अभी वह माद्दा हममे पैदा नही हुआ है जब इन पुरस्कारा की अहमियत को जन सामान्य और सत्ता पक्ष समझकर शक्षिक रीति-नीति के क्रियान्वयन मे महती भूमिका निभान मे भागीदार बना सकें। कहत हैं अधिकार मागने स नही मिलते, वे तो प्राप्त किए जाते है उसी प्रकार सुविधाए भी मागने से नही मिलती। उनके लिए तो ऊपर के तबके को जगाकर बात समझाने और अहमियत पैदा करने की जरूरत होती है।

विवशता की आच मे तपन वाले सरस्वती पुत्र के लिए पुरस्कार की राशि ऊट के मुह म जीरे की तरह है। इसलिए कुछ न कुछ तो हो जिससे आत्मतोष पैदा हो सके।

●

जीवन मूल्यो की शिक्षा-नैतिक शिक्षा

*

सीताराम स्वामी

विन पाठका ! यदि मैं आपम प्रश्न करू, 'आप कौन है ?" ता आप म स कोई कह सकता है, ' मैं अध्यापक हू । अध्यापक तो आप पशे से हैं । पच भौतिक तत्त्वा स निर्मित इस शरीर म आप किसी के पुत्र हैं, किसी के पिता हैं । किसी के पति है, किसी के चाचा हैं किसी के भतीजे है, किसी के बहनाई हैं तो किसी के साले किसी के नौकर है तो किसी के मालिक ! आप दृश्यमान बाह्य शरीर मात्र ही नही है जो नाशवान है । आप शुद्ध चेतन अजर-अमर आत्मा है, परम ब्रह्म परमात्मा के अश हैं । अशी के सव-श्रेष्ठ गुण आप म विद्यमान है । इसीलिए हमारे पूवजा ने घोषणा की थी, "अहम् ब्रह्मास्मि ।' सागर क अथाह जल मे से दो चार बूद को अलग कर दिया जाये तो क्या वे बूद यह नही कह सकती कि 'मैं सागर हू । क्या सागर के अथाह जल के गुण बूद मे नही है ?

प्रत्यक बालक जब वह इस विश्व मे पदापण करता है तब सब दुर्गुणो से रहित व इश्वरीय गुणो से सम्पन्न होता है । इस विश्व का दूषित वातावरण उसे विकृत कर देता है । प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री रूसो न कहा है ।

Every thing that comes from the hands of the creater is good but degenrate in the hands of society

इस प्रकार जब बालक सव प्रथम अध्यापक के पास आता है तब वह समस्त दुर्गुणो से रहित सचमुच बाल भगवान होता है । पवित्रात्मा होता है । पर जब वह विद्यालयो महाविद्यालयो म दस पन्द्रह वर्षो तक शिक्षा ग्रहण कर अपने घर लौटता है तब अनेक विषयो का ज्ञान ता उसे जरूर होता है पर वह जन्मजात गुणो से रहित तथा अनेक दुष्प्रवत्तियो का शिकार हो जाता है । जो ज्ञान उसे समाज

राष्ट्र एव मानवता की सेवा करने के लिए दिया गया था उसका उपयाग वह नवीन तकनीक द्वारा बैंक लूटने, तस्करी करने, अपने देश के गुप्त भेद शत्रु को बेचन रक्षा शस्त्रास्त्रो के क्रय मे कमीशन कमान आदि म करता है। समाज अध्यापक को निर्विकार बाल भगवान सौपता है। अध्यापक शिक्षा रूपी साचे म ढालकर उसे देव तुल्य बनाना चाहता है पर वह बन जाता है राक्षस। आखिर एसा क्यो होना है ? मेरी समझ मे इसक दो कारण है—

(1) समाज का दूषित वातावरण।

(2) विद्यालया म नैतिक शिक्षा का अभाव।

1 समाज के दूषित वातावरण का प्रभाव—

विद्यालय म बालक सिफ पाच छ घण्टे रहता है। इससे तीन चार गुना अधिक समय वह परिवार, समाज म बिताता है। वह घर, दूकान व मोहल्ले म बार बार लोगो को झूठ बोलते देखना है, बेईमानी, अन्याय व तस्करी करते दखना है। पिता व बडो को धूम्रपान करते व भाइयो को शराब पीत, झगडते, गालिया देते देखता है। सिनेमा व टी० वी० पर अश्लील चित्र देखता है, गन्दे गीत सुनना है। पडोस मे रिश्वत लेने वाले अधिकारी के परिवार को गुलछर्रे उडाते दखना है तब इन सब कुछ प्रवत्तिया को वह भी अपना लेता है। स्कूल का प्रभाव निष्क्रिय हो जाता है।

2 विद्यालयो मे नतिक शिक्षा का अभाव—

शिक्षा व्यवहार गत परिवतन लाने की प्रक्रिया है। सच्ची शिक्षा बालक की सद्वृत्तिया का विकास करती है। मस्तिष्क के साथ साथ उसके हृदय को भी विशाल बनाती है। पर आज की शिक्षा पद्धति केवल बालको को विषयगत सूचना देती है विद्या नही पढाती ! "विद्या ददाति विनय, विनयात याति पात्रताम !" विद्या से तो बालक विनयी बनता है, अनुशासित होता है। विनय से वह योग्य पात्र बनता है। पर ऐसा तभी होता है जब विद्यालयो म जीवन मूल्यो की शिक्षा, नतिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जाये।

प्राचीन भारत मे गुरुकुल समाज के दूषित वातावरण से दूर सुरम्य वना म हुआ करते थे जहा आचाय अपने तप व त्याग पूण सात्विक जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए, 'मात देवो भव,' पितृ देवा भव, 'सत्य ब्रूयात,' प्रिय ब्रूयात' 'धम चर,' 'अहिसा परमो धम' आदि का उपदश दिया करत थे। वे ज्ञान द्वारा बालक के अन्तर को, अन्त चेतना को प्रकाशित करत थे। सात्विक आहार विहार द्वारा सात्विक प्रवृत्तिया का निर्माण करते थे। "मातवत परदारेषु, पर द्रव्येषु लोष्ठवत। आत्मवत सव भूतेषु य पश्यति स पण्डित।' का उपदेश दिया करते थे।

थे। काम, क्रोध, लोभ, मोह को त्यागने की शिक्षा देते थे। धार्मिक, शिक्षा के द्वारा चारित्रिक गुणो का विकास करते थे। सांस्कृतिक चेतना जगाते थे।

भारत में राजनैतिक पतन के साथ साथ शैक्षिक व सांस्कृतिक पतन का भी प्रारम्भ हो गया। आज निर्धारित अवधि में निर्धारित पाठ्यक्रम को पूरा कर, परीक्षा पास करना मात्र शिक्षा का लक्ष्य रह गया है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षा पद्धति के इस अभाव की ओर राजनेताओं का ध्यान गया प्राय सभी शिक्षा आयोगों ने भी नैतिक शिक्षा के महत्त्व को स्वीकारा है। इस ओर समय-समय पर प्रयास भी हुए हैं पर कोई उल्लेखनीय सफलता नही मिली। अब नई शिक्षा नीति की ओर हम सब की आशा भरी दृष्टि लगी हुई है।

नैतिक शिक्षा कैसे दी जाए—

वास्तव में नैतिक शिक्षा विद्यालयी शिक्षा के अन्य विषयों की तरह जानकारी का विषय नही है। इसका मुख्य उद्देश्य बालकों में नैतिक जीवन के ऐसे संस्कार डालना है जो उन्हें चरित्रवान बनने में सहायक हो सकें। पर नैतिक शिक्षा देने की विधि क्या हो? अन्य विषयों की तरह नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने एवं परीक्षा लेने से बालकों का नैतिक सिद्धान्तों का ज्ञान तो हो जायेगा पर उन पर आचरण करने की प्रवृत्ति नही जगेगी। बालकों में नैतिक जीवन के गहरे संस्कार डालना आवश्यक है।

नैतिकता का सम्बन्ध मानव के आन्तरिक जीवन में है। हम जबरन छात्रों को सत्यभाषी, न्यायप्रिय, दयालु कर्त्तव्यनिष्ठ, दायित्वशील व चरित्रवान नहीं बना सकते। आन्तरिक गुणों का विकास उनमें तभी सम्भव होगा जब वे इन गुणों की आवश्यकता महसूस कर इन्हें धारण करने का स्वयं प्रयास करेंगे। इसके लिए यह आवश्यक है कि अध्यापक स्वयं के जीवन को आदर्श बनावें। नैतिकता का सम्बन्ध बालकों की अनुभूतियों से है और अनुभूतियों का विकास कर्म के माध्यम से ही हो सकता है? अतः विद्यालयों में निरन्तर ऐसे क्रियाकलाप चलाते रहने चाहिए जिनसे बालक नैतिकता की प्रेरणा ग्रहण कर सकें। सामूहिक सफाई करना, विद्यालय में पैसे रख कर स्वतः वस्तु लेवें, ऐसी दूकान चलाना, राष्ट्रीय पर्व व महापुरुषों की जयन्तियां मनाना, महान व्यक्तियों द्वारा प्रवचन करवाना, अच्छे कार्य करने वाले बालक को पुरस्कार देकर या सामूहिक प्रशंसा कर प्रोत्साहन देना आदि कार्य किये जा सकते हैं।

●

पीढियो का तर्क

*

रूपनारायण काबरा

किस्सा तो इसी बीसवी सदी का है। किस्सा क्या है जी, सच्ची बात है पर हम किस्से के रूप म कह रहे हैं। तो सुनिए, एक पिता थे, लीजिए हम नाम रख देते हैं, श्रीकात! उम्र होगी यही लगभग पचास-पचपन। सिर पर छोटे बाल। अपने सीधे सादे लिबास म प्राय परेशान से रहते थे। उनका एक पुत्र था जनादन जिसे प्यार म वे जानी कहते थे। जॉनी पश्चिम की ओर भागती इस युवा पीढी का विशिष्ट प्रतिनिधि था। काफी बडे बाल थ हिप्पिया जैस। मुह म प्राय लम्बा सिगार रखता था। प्रत्यक युवा की तरह उसके दिल और दिमाग म एक विद्रोह था, बगावत थी पतीस वष स ऊपर के हर प्रौढ के प्रति। एक गहरी नफरत सी थी। एक दिन उसन अपने पिता से कहा—

"आपकी पीढी ने सब गुड गोबर कर दिया है। आपकी सनक और पागलपन ने इस समाज का आक्रात कर रखा है। अपने ही दकियानूसी मूल्य और आस्थायें परम्परा के नाम पर आप हम सब पर अपन स्कूला, कॉलिजो एव विश्वविद्यालया के द्वारा थोप चले जा रह हैं, बाज नही आत हो अपनी इस हरकत से! हर तरफ फौज बढा रहे हो। शिक्षा और निर्माण की बजाय ज्यादा धन हथियारगाला पर खच कर रहे हो। बवासीर तक तो बस की नही पर चाद सितारो पर जा पहुचे हो। कितनी जनसख्या बढा डाली है आपने, जिसने सब योजनायें मटियामेट कर दी हैं। आज स्कूला मे भीड, रेल म, बस म भीड और आसमान छूते भाव हो गये हैं चीजो के। जीना दूभर कर दिया है आपन। सार पर्यावरण को दूषित कर रखा है। सब तरफ प्रदूषण। और कितने विध्वसक हाइड्रोजन, परमाणु बम तैयार रखे हैं। और अब तो 'स्टारवार' की तरफ बढ रहे हो। एक बात ...

और कहू डैडी चाद और सितारा पर कबड्डी खेलने का अथवा पिकनिक मनाने का तो शौक है पर धरती पर इसानियत को जिदा रखना नही सिखा पा रहे हैं। आज इसान साप से भी ज्यादा जहरीला हाता जा रहा है।"

पिता समझदार थे, उहोन कहा, "तुम शायद ठीक कहते हो जॉनी। हमारी पीढी बहुत खराब रही है। हमने दुनिया म ऐसे बीज बा डाले है कि दुनिया से खुशहाली भाई चारा एव इसानियत खत्म होती जा रही है। मुझे वास्तव मे बडा अफसोस है इसका।"

और जॉनी सिगार के कश खीचता, धुआ छोडता चल दिया अपने दोस्तो के पास किसी क्लब मे।

पिता काफी सवेदनशील थे। दिल से अपनी पीढी की गलती भी मान रहे थे और सोचते थे कि ईश्वर भी शायद नाराज होगा हमसे। और एक दिन रात म वे हडबडाकर अचकचाकर उठ बठे। कमरे मे तेज रोशनी थी। उन्होंने देखा उनके सिरहाने एक देवदूत खडा है जिसके हाथ मे एक सुनहरी पुस्तक थी। देवदूत ने कहा—

श्रीकात बाबू मै आया हू तुम्हे एक वरदान देने। तुम्हारी एक इच्छा मैं पूण कर सकता हू।"

"मुझे वरदान दे रहे ह ? मुझे क्या ?"

"स्वग म स्थित हमारे कम्प्यूटर ने तुम्ह ही चुना है क्याकि तुम ही तुम्हारी पीढी के सही प्रतिनिधि हा और तुम्ही को पुरस्कृत किया जाना हैं। अपनी शानदार उपलब्धियो के लिए।'

'कही कुछ गलती हा गई दिखती है कम्प्यूटर स। हमन क्या किया, हमने ता प्रजातन्त्र को भी हथियारबन्द कर दिया ह। कितनी फौजे बढ गई है। और यह जखीरा विध्वसक जहाजा, बमा, पनडब्बिया एव हवाई जहाजा (लडाकू) तथा टक, तोपो का। मेरे बचपन म तो कितनी कम फौज थी आज शायद चालीस गुना से भी ज्यादा है और फिर भी अपने को असुरक्षित ही समझते हैं।"

'ठीक है, तुमने यह सब किया लेकिन प्रजातन्त्र की रक्षा के लिए शाति की स्थापना के लिए और सारी दुनिया म आजादी, अमन और प्रजातन्त्र लाने के लिए। तुम्हारा लक्ष्य निश्चय ही सुदर एव श्रेष्ठ रहा है।'

'हो सकता है आप ठीक कह रहे है लेकिन हमने वन काट डाले। सारा वायु मडल प्रदूषित कर डाला और दूर-दूर तक जाने कितनी तरह की गन्दगी फला दा है अन्दर की और बाहर की दोनो ही। यह तो आपको मानना ही होगा।

"लेकिन यह सब तो तुमने लोगा को खुशहाल और सम्पन्न बनाने के लिए किया है उनके जीवन म सुख-सुविधा लाने के लिए ही तो कल कारखाने लगाय और इसके कारण थोडा प्रदूषण हो गया तो कोई खास गलती नही मानता मैं

तो।"

"ठीक है, लेकिन जनसख्या का विस्फोट ? इसके लिए हम नहीं तो कौन जिम्मेदार है ? अकाल, बीमारिया दगे फसाद कितनी गडबडिया है। और यह सब एक चुनौती, एव समस्या बनकर सामने खडी है।"

"अरे भाई, यह तो तुम्हारी साधना और तपस्या का फल है कि तुमने ऐसी दवाइया खोज निकाली, उपचार के ऐसे साधन एव यन्त्रो का निर्माण किया कि मानव की आयु सीमा बढ गई। यह तो कितनी बडी सेवा की है तुमने मानव जाति की।"

"लेकिन हम तो परमाणु बमो के साय मे बढ रहे है। कितना आतक है! सारी दुनिया बारूद के ढेर पर बैठी है।"

एक चिंगारी काफी है और सब कुछ जलकर राख हो जाएगा—श्रीकान्त जी बोले।

"यह सब इसलिए सम्भव हो सका है कि तुम्हारी पीढी ने अणु की भीतरी शक्ति को अपने नियन्त्रण मे कर लिया है इसके रहस्य को समझ लिया है। कितनी शानदार विजय है तुम्हारी! और इस शक्ति का तुम चाहो जैसे उपयोग कर सकते हो। चाहो तो पहाडो को समतल कर डालो अथवा रेगिस्तान को हरा भरा।"

"क्या वास्तव मे आप ऐसा सोच रहे है?" अब श्रीकान्त बाबू थोडा सीधा हुए, तनकर बैठे और मुस्कराये।

"हा?" देवदूत ने कहा और अपनी सुनहरी पुस्तक के पन्ने उलटते हुए बोला, "तुम्हारे उद्देश्य उत्तम रहे हैं, तुम्हारे लक्ष्यो मे कोई दोष नही। तुम्हारी शक्ति असीम है और तुम्हारी सफलता अप्रतिम। मानव सभ्यता के इतिहास मे तुम्हारी पीढी ने एक नया नेतत्व दिया हैं, नई दिशा दी है। और इसीलिए मेरे प्रदत्त अधिकार से मैं तुम्हारी एक इच्छा पूर्ण करने को उत्सुक हू। बोलो तुम मुझसे क्या चाहोगे?"

श्रीकान्त बाबू बोले, "मैं चाहता हू कि आप थोडी देर जॉनी मे बात कर लेते इस सम्बन्ध मे। वह क्लब से लौटकर आने ही वाला है।"

और जब श्रीकान्त बाबू ने नजर उठाकर देखा तो देवदूत गायब हो चुका था।

●

शब्द साधना ही क्यों ?

*

गिरधारी लाल व्यास

मानव समाज के आज तक के सैद्धांतिक और व्यावहारिक विकास का केन्द्रीय माध्यम रहा है—शब्द। शब्द हमारी वह सार्थक ध्वनि है जिसका सम्बंध वाणी, कान, हाथ, आंख आदि के साथ-साथ मस्तिष्क की चिंतन प्रक्रिया और हृदय की संवेदना से भी इतना अभिन्न है कि वह व्यक्ति के मूर्त-अमूर्त अस्तित्व से अलग करके नहीं देखा जा सकता। किसी प्रकार की उस सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना की हम कल्पना तक नहीं कर सकते जिसमें शब्द केन्द्रीय साधन न रहा हो किसी शब्दचित्र को पढ़ सुनकर मस्तिष्क में कितनी ही प्रतिमाओं का अंकन स्वतः ही हो उठता है। कबीर और नानक के शब्द या 'शबद' या कि 'सबद' युगों युगों से जन मानस को अनुप्राणित करते चले आ रहे हैं। आज भी वैदिक आस्थाओं के लोग वेदों के शब्द प्रमाण के सामने किसी भी अन्य तर्क को स्वीकार नहीं करते चाहे उसमें कितना ही वैज्ञानिक सत्य क्यों न हो। यही बात सभी धर्मग्रंथों के शब्द प्रमाण के विषय में कही जा सकती है। शब्द को ब्रह्म कहकर संभवतः किसी मनीषी ने अपने तई कोई अतिशयोक्ति नहीं की। कारण कि शब्द की अभिधा, लक्षणा और व्यंजना शक्तियों से बाहर तो कुछ भी अभिव्यक्त नहीं हो सकता।

भाषा सब विषयों की जीवनी शक्ति है जो व्याकरण के बिना संभव नहीं होती। व्याकरण शब्दों का अनुशासन कायम करता है जिसके बिना बोलना, लिखना, पढ़ना और सोचना वैज्ञानिक स्वरूप धारण नहीं कर सकता यहां तक कि शब्दजाल फैलाने वाले भी शब्दशक्ति और शब्दानुशासन से परे नहीं जा सकते।

शब्द बाण की तरह वेधता है भेदता है। वह चुभता है काटता है, छांटता

है। वह गोली की सी मार करता है। वह जगाता है सुलाता है, सहलाता है। सालता है। वह शान्त करता है, भडकाता है, उत्तेजित करता है, मदहोश करना है। वह दोस्ती करता है, दुश्मनी करता है, मोहब्बत करता है। वह हसाता है, गुदगुदाता है, रुलाता है। वह जिलाता है, मारता है, मरवाता है। वह चलाता है, भगाता है, दहकाता है। वह जिताता है, हराता है, हरवाता है। वह कठोर से कठोर श्रम को आसान करता है, अधिक से अधिक दूरी को पार करवाता है, वह नीचे से नीचे को ऊपर मे ऊपर उछाल देता है। और तो और वह रचता है, तोडता है और पुन रच देता है।

शब्द विश्वव्यापी अनुगूज पैदा करता है। वह काव्य है, साहित्य विविधा है, विज्ञान है मनोज्ञान है, भूगोल है, इतिहास है और ऊचे से ऊचा और नीचे से नीचा व्यवहार-व्यापार है। शिक्षा भी है अशिक्षा भी वह सचेतना भी है और सवेदना भी।

वह स्थूल है, सूक्ष्म है, मूर्त्त है, अमूर्त्त है। वह बोला है, बडबोला है, अनबोला है—अनमोला है। वह कडवा है, मीठा है खट्टा है। वह श्लील है—अश्लील है।

शब्द के प्रभाव को भला कौन नही जानता? उसकी व्यापकता को भला कौन नही स्वीकारता? उसके अनुशासन का कौन नकार सकता है, उसकी आज्ञा को कौन टाल सकता है? दरअसल वह दुनिया पर शासन करता है। ईश्वर कही नही वह अनस्तित्व है किन्तु 'ईश्वर शब्द अमर है। वेदो के रचयिताओ का तो पता नही किन्तु वेद शब्द अमर है। कबीर, सूर, तुलसी, शेक्सपीयर, गालिब और गोर्की तो चल बसे किन्तु वे अपने शब्दो के माध्यम मे सदा समाज के बीच मे रहगे शब्द का आदि ता है किन्तु उसकी सीमा कही नही उसका अत कही नही।

शब्द व्यक्ति का व्यक्तित्व, किसी समाज का व्यक्तित्व राजनीति, सभ्यता और सस्कृति का व्यक्तित्व होता है।

इसी तरह शब्द शिक्षा का व्यक्तित्व तो होता ही है—चाहे वह स्कूल-पूर्व शिक्षा हो अथवा स्कूली, महाविद्यालयी या विश्वविद्यालयी शिक्षा हो, अपितु वह शिक्षा के आदान प्रदान का धुरीय माध्यम भी होता है। इस दूसरी तरह से कहे तो यह कि वह शिक्षक के समूचे चारित्रिक कौशल का सर्वाधिक विश्वसनीय उपकरण होता है।

शब्द के बिना शिक्षा और साथ ही शिक्षक प्रशिक्षक की कल्पना तक नही की जा सकती जैसे कि बिना सतगुरु के 'सबद' के कोई पथी प्रामाणिक नही माना जाता। सतगुरु के शब्द की चोट खाना मायाजाल को तोडने के लिए एक अनिवार्य शर्त मानी गई है।

खैर! यहा 'उपदेश' या प्रवचन' देने का कोई अर्थ प्रतीत नही होता। यहा आज इस देश मे मुख्य प्रश्न है शिक्षा अनुशासन का और वह भी शिक्षक के सदर्भ

म यह तो तय है कि डडे अथवा दड प्रक्रिया से शिक्षा अनुशासन कायम रखने वाले शिक्षक या प्रधानाध्यापक पिटते देखे गए हैं यद्यपि वे शरीर से बड़े रोबीले रहे होंगे और इधर दुबले पतले किन्तु शब्द का सही और प्रभावशाली प्रयोग करने का जिनका चरित्र बन चुका है—शैतान से शैतान छात्र उनके आज्ञापालक शिष्य होते देखे गए हैं।

महात्मा गाधी की शब्दसाधना ने ही भारतीय चितनधारा को स्वाधीनता आन्दोलन से प्रवाह में शामिल होने को प्रेरित अथवा शिक्षित किया। महात्मा ने वाणी द्वारा सूत्रात्मक अनुशासन कायम किया। कालमार्क्स और लेनिन अपनी शब्द सिद्धियो से लाखो-करोडो इसानो को समाज विज्ञान के चतुर्दिक आयामो मे शिक्षित करने में सफल हुए। अत यह कहा जाना चाहिए कि शिक्षक की सफलता और सार्थकता के लिए उसका शब्द सिद्ध होना नितान्त नितान्त आवश्यक है।

स्कूल या कॉलेज हो—घटिया बजती हैं। छात्र वही रहते हैं, पर शिक्षक (एक अध्यापकीयशाला को छोडकर) बदलते रहते है। चेहरे बदलते हैं। व्यक्ति बदलते है। व्यक्तित्व बदलते हैं। वातावरण बदलते हैं। कक्षा के चरित्र बदलते है, छात्रो के चेहरो के रग बदलते हैं, मूड बदलते हैं, वेदनाए बदलती हैं और उनके स्वर या शोर बदल जाते है। हर पीरियड उस कमरे मे एक बदला हुआ शिक्षा अनुशासन लेकर आता है। क्या इस परिवर्तन मे कही शिक्षक की भूमिका नही होती अथवा क्या इस बदलाव मे कही शिक्षक की शब्दसाधना का प्रभाव नही होता? क्या शिक्षक का शब्दमान कक्षा का मान निर्धारित करने मे अहम भूमिका नही निभाता? क्या शिक्षक के जीवन भर का व्यक्त अव्यक्त अभ्यास कक्षा मे अभिव्यक्त होते ही वातावरण को झकृत नही कर देता?

अधिक विस्तार मे न जाकर एक मामूली सा उदाहरण लें तो उपयोगी होगा। जो लोग भूल से गुस्से से हसी मजाक मे, मस्ती मे, ठठ्ठाबाजी मे, तकिया कलाम की आदत की वजह से अथवा अन्य किसी परिस्थिति के वशीभूत होकर अपने मुह से 'मा-बहन, बेटी' की अश्लील गाली निकाल देते है उनमे निश्चय ही शब्दसाधना का एक ऐसा अभाव है जो उनके चरित्र का चरित्र की प्रभावोत्पादकता का अभाव ही कहा जायगा। इसी प्रकार अन्य सार्थक निरर्थक शब्द प्रयोगो की आदतो को रेखाकित किया जा सकता है। इन अभावो का प्रभाव वैसे तो जीवन के सभी क्षेत्रो मे देखा जा सकता है किन्तु शिक्षा के क्षेत्र मे और खास तौर पर शिक्षक के सदर्भ मे तो इस प्रकार के प्रभावो का *मूल्याकन किया जाना* सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण परिलक्षित होता है।

भला कौन ऐसा होगा जो शिक्षा अनुशासन के महत्त्व को कम करके आकेगा? भला कौन ऐसा होगा जो इस क्षेत्र मे शिक्षक की उपेक्षा करेगा? और भला, कौन ऐसा होगा जो शिक्षा और शिक्षक की सार्थकता और प्रभावोत्पादकता के लिए

अभिव्यक्ति की शक्तिमत्ता को अस्वीकार करेगा ?

सवाल है कि क्या शब्दसाधना को शिक्षकों की शिक्षा का अथवा उनकी प्रशिक्षा का एक पाठ्यविषय बनाया जा सकता है या बनाया जाना चाहिए ? इसका जवाब सकारात्मक के अलावा और कुछ हो ही क्या सकता है ? यदि वर्ण ध्वनियों का विज्ञान शिक्षा का विषय हो सकता है तो अपने व्यापकतम अर्थ में शब्दसाधना को चारित्रिक प्रवृति बनाने का विषय क्यों नहीं बनाया जा सकता।

अतः शब्दसिद्धि को शिक्षा प्रशिक्षा का अनिवार्य विषय बनाया जाय ताकि जहाँ शिक्षा-अनुशासन को उन्नत स्तर पर पहुँचाया जा सके वहाँ शोध के अनेकानेक नवाचार प्राप्त किए जा सकें।
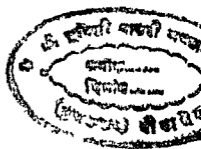
सत मावजी कालीन साहित्य और कला मे वेणेश्वर

*

रवीन्द्र डी पण्ड्या

राजस्थान राज्य के दक्षिणाचल का एक भाग वाग्वर प्रदेश है जो गुजरात, मालवा और मेवाड के मध्य स्थित है। प्राचीन समय स ही यह प्रदेश धम व शौय प्रधान रहा है। मौय काल से राजपूत काल तक इस क्षेत्र म कई भव्य हिदू तथा जन मदिरो का नव निर्माण हुआ। प्राय इस प्रकार की भक्ति तथा धार्मिक भावना के प्रेरणा स्रोत सत और मुनि मानव शरीर धारी देवदूत ही होते हैं अत इस क्षेत्र को भा इस प्रकार की महान शक्तिशाली देवी पुत्र रत्न के रूप मे प्राप्त हुई।

18वी शताब्दी के प्रारम्भिक चरण मे अविकसित वाग्वर प्रदेश के अशिक्षित एव दलित वग का वैष्णव भक्ति माग पर ले जाने के अभियान को छेडने वाला 'मावजी' का ज म सवत 1771 माघ सुदी पचमी 28 जनवरी 1715 ई० म डूगरपुर जिले के साबला नामक ग्राम के निधन ब्राह्मण श्री दालमजी की भार्या केसर बाई की कोख स हुआ। कौन जानता था कि जगलो म गाय भसा को चराने वाला ब्राह्मण का पुत्र वागड की धरती पर भगवान् श्री कृष्ण की तरह लीलाए करेगा। बालक मावजी कृष्ण भक्ति मे खो गया। श्री कृष्ण के गुन भरे स्वरचित गीत, बास की बनी बासुरी के मधुर स्वरो स बेणेश्वर स्थल को आनदित कराता रहा। कृष्ण भक्ति मे खोये हुए इस ब्राह्मण पुत्र मावजी को 'मावजी गाडा के नाम से जानन लगे। जब माव' ने इस क्षेत्र मे वैष्णव धम की धारा को प्रवाहित करना प्रारम्भ किया, तो इनकी चमत्कारिक प्रतिभा को देखकर इस क्षेत्र की जनता उ हे अपनाने लगी। लोग इनके शिष्य व भक्त बन गये। समस्त वागड म वष्णव भक्ति की धारा को प्रवाहित करने का एक मात्र सेवक बना।

18 वी शताब्दी मे कृष्ण भक्त सत मावजी महाराज ने इस प्रदेश म पथ सम्प्रदाय स्थापित कर स्वय का एक पथ चलाया जिसे महाराज पथ कहा जाने लगा मावजी ने अपना शिष्य वग तैयार किया। इनके प्रमुख शिष्या मे जीवनदास प्रमुख था, जिनके सहयोग से पाच बडे सचित्र ग्रथा की रचना हुई। जिसका नाप 2' × 2' वर्गाकार है। इस समय चार सचित्र ग्रथो की प्रतियो के धम ग्रथो के रूप म मावजी महाराज के मदिरों में सुरक्षित है। इन ग्रथा मे वष्णवधम से सम्बधित अनेक चित्रो की रचना हुई। कृष्णलीलाओ का चित्रण इन ग्रथा का प्रमुख विषय रहा। मूल सचित्र ग्रथा के अतिरिक्त अय छोटे छोटे ग्रथो का लेखन कर सत मावजी के उपदश, आगमवाणी भक्तिपद, भजन, बारहमासा, हरिकीतन, छत्तीस राग रागनिया के आधार पर गाये जाने वाले कृष्ण भक्ति के गीत, निष्कलक राय जी रासलीला आदि के लघु गुटके अपने शिष्य वर्गो मे बाटे जाने लगे। वैष्णव भक्ति की धारा इन प्रदेश के लोगो म प्रवाहित होती गई। जगह जगह सत मावजी के मठ मदिर स्थापित हुए। उनके शिष्य मावजी को सत नही वरन साक्षात्त निष्कलकावतार के रूप मे मानने लगे। ईश्वर का स्वरूप मानकर उनकी प्रतिमा की पूजा की जाने लगी। श्रीकृष्ण की भाति सत मावजी ने इस प्रदेश मे अनेक लीलाए की जिहें ततकालीन ग्रथ रचनाकारा न साहित्य कला और सगीत से सवारा।

राग मालाओ व रासक्रीडाओ का अकन—

मावजी कालीन ग्रथा म वेणेश्वर की महिमा का विशद वणन किया गया है। वतमान वागड तीथ 'वेणेश्वर' धाम को ग्रथो म वेण वन्दावन धाम के नाम से उल्लेख किया गया है। 18वी शताब्दी म यह सम्पूण क्षेत्र घन जगलो स आच्छादित था। वेणेश्वर स्थल माही जाखम व सोम नदियो के सगम के मध्य मे स्थित ऊची पहाडी का कुछ भाग है, जिसे स्थानीय भाषा मे 'वेणकु' कहा जाता है। यह स्थल सत मावजी की साधना व रासक्रीडास्थल रहा जहा कृष्ण की तरह मावजी ने इस 'वेण' पर गोपियो के सग रासक्रीडाए की।

मावजी कालीन रचित ग्रथा मे 'वेण वृदावन' की महिमा व रासक्रीडाओ का सुदर वणन व चित्रण हुआ है। जिस तरह भगवान कृष्ण की जमस्थली मथुरा और रासक्रीडा लीला स्थल वदावन रहा, उसी तरह कृष्ण भक्त सत मावजी का जम स्थल 'साबला को रचनाकारो ने मथुरा माना तथा इनकी रासलीला व साधना स्थल वेण वदावन धाम वतमान वेणश्वर को माना। ततकालीन लिपिकारो चित्रकारो ने इस स्थल का विशद वणन साहित्य एव कला के माध्यम से ग्रथो मे अलकृत किया है।

मावजी कालीन रचित इस ग्रथ का अतिम भाग रासलीला एव "महारास लीला" के असख्य चित्रो से सुसज्जित है साबला स्थित मूलग्रथ प्रति की अतिम

पुष्पिका मे 'इति थी निजसुन नीजतार माहारम महारासलीला ग्रथ नाम सम्पूण भवति" का उल्लेख हैं।

ग्रथ चित्रा के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि भागवत पुराण म वर्णित दशम स्कन्ध (पूर्वार्द्ध) की सम्पूण झाकी इन ग्रथो म दखी जा सकती है। श्रीमद भागवत म रासलीला के पाच अध्याय उसके प्राण मान जात है। भगवान श्री कृष्णकी परम अतरगलीला, निज स्वरूप भूता गोपिकाआ और राधाजी के साथ होन वाली भगवान की दियाति दिव्य क्रीडा, इन अध्याय मे कही गयी है। "राम शब्द का मूल रस है और रस स्वय भगवान श्री कृष्ण ही है। जिस दिव्य क्रीडा म एक ही रस अनेक रसो के रूप म होकर अनन्त अनन्त रस का समास्वादन करे, एक रस ही रस समूह के रूप मे प्रकट होकर स्वय ही आस्वाद-आस्वादक, लीला, धाम और विभिन्न आलम्बन एव उद्दीपन के रूप मे क्रीडा करे उसका नाम रास है।

भगवान की वह दिव्य लीला भगवान के दिव्य धाम म दिव्य रूप मे निरन्तर हुआ करती है। यह भगवान की विशेष कृपा से प्रेमी साधको के हिताथ कभी कभी अपने दिव्य रूप से धाम के साथ ही भूमण्डल पर भी अवतीण हुआ करती है जिसको दख सुनकर एव गाकर तथा स्मरण चिन्तन करके रस स्वरूप भगवान की इस परम रसमयी लीला का आनन्द ले सकें और स्वय भगवान भी लीला मे सम्मिलित होकर अपने को कृत कृत्य कर सके।

मावजी कालीन ग्रथ 'महारासलीला म वशी ध्वनि, गोपियो के अभिसार श्री कृष्ण के साथ उनकी वातचीत, रमण श्री राधाजी के साथ अन्तर्धान, पुन प्राकट्य, गोपिया के द्वारा दिय हुए बसनावस पर विराजना गोपियो के कूट प्रश्न का उत्तर, रासनृत्य क्रीडा, जलकेलि और वन विहार आदि का सुदर वणन है। साथ ही उक्त प्रसगा के रगीन चित्र मावजी कालीन साहित्य और चित्रकला के बेजोड उदाहरणा म स एक ह। प्रस्तुत है इने गिने कुछ अश —

18वी शताब्दी म बेणेश्वर धाम पर सत मावजी का पाच वष क काय काल तक लीलारास रचने का सकत हैं।

"सवत 1784 महासुद एकादशी आ आदिन भया आवणो लीलारास रसी
53/1668

सवत् सत्तर नवासीओ, आसाड सुद पुनम
ता दिन धाम पधारिया, वरती कोसल खेम /54/1669

वेण वृन्दावन (वतमान बेणेश्वर) के सुदर दश्याकन का वणन करते हुए ततकालीन रचनाकारा ने यहा का चित्र आका है।

बेण वृन्दावन सरखडी, कदि न खण्डत होय।
शाम विराजे सोक मय, शीतल कदम की छाय,
बेण वन्दावन उपरे, भले भले मोर के गाय
बार हजार से अगना, गोरस ले जाय।
राधा सरिखी ग्वालण, मनोहर सरखा सोर
शेषपुर ग्रथ प० स० 167

कृष्ण भक्त सत मावजी का परम शिष्य ब्राह्मण पुत्र श्री जीवनदास था। ग्रथ रचनाकारो ने जिसका नाम चैतन्य दिया। साबला ग्राम के निकट स्थित सोम नदी को लाघ कर ज्ञान प्राप्ति हेतु बेणेश्वर धाम। बेण-टापू। पर भोग साधना म बैठे सत मावजी के पास उपस्थित हो रहा है। बागडी साहित्य म उल्लेख है।

श्री साम बेण वन्दावन माथे विराज्या से ते वरे
ब्राह्मण ना बालक जीवण ए हुव नामे चैतन्य
सावलापुरी थकी साम उलगी न मनोहर पासे आवे
पसी माम थकी गोष्ठी करवा आव्यो, गोष्ठी करसे।

साबला व बेणेश्वर स्थल जिस प्रकार सत मावजी की तपोभूमि व रासक्रीडा स्थली रही उसी भाति पालोदा व लसाडा ग्राम (जिला-बासवाडा) श्री सत मावजी के साधना स्थल रहे। सत मावजी कालीन रचित ग्रथो मे लसाडापुरी सावलापुरी, हीरापुरी भावपुरी के दृश्यो को चित्रित किया गया है पालोदा ग्राम के मध्य सत मावजी की स्मृति मे बना मदिर जिसमे घोडे पर सवार निष्कलक की चतुभुज मूर्ति विद्यमान है। इस मदिर म सत मावजी के शिष्यो द्वारा लिखित दो हस्तलिखित पाण्डुलिपियो शोध के दौरान मुझे प्राप्त हुई। बागडी साहित्य की अमूल्य इन कृतियो मे कृष्ण भक्ति गीत विभिन्न राग मालाओ, राग रागनियो म गाये जाने वाले भक्ति गीतो की रचना की गई। पालोदा हरि मदिर मे सुरक्षित "निष्कलक राय जी रासलीला" नामक ग्रथ जिसे 'बागडी गीत गोविन्द' के नाम से कहा जाना मेरे ख्याल से उचित है। यह कृति जयदेव कृत गीत गोविन्द की ताजी स्मृति दिलाती हैं। बागडी गीत गोविन्द' म बेण वृन्दावन धाम वर्तमान बेणेश्वर पर *गोप गोपियो की रास क्रीडाए एव लीलाओ, गोप गोपियो का प्रेम मिलन, सवाद,* विभिन्न राग मालाओ पर आधारित कृष्ण भक्ति के गीत अकित है। प्रस्तुत है कुछ अश—

गोपागनाए श्री कृष्ण (श्रीसाम) मिलन के लिए उतारू हो रही है, सखिया आपस म एक दूसरे को श्री कृष्ण मिलन के लिए आमन्त्रित कर रही है।

लाहो लीजे सुख वधे ।
ऐ अचली आवार साहागण सुन्दरी ।।
पीज पीजे प्रमु सग प्रेम ।
अवसर आयारे पेलीवार म ।।
हवे अवसर चूकजे केम सानी ।
ला हा लीजे सख वधे ।। 1/554

'निष्कलक राय जी रासलीला" (वागडी साहित्य) ग्रथ के पृ स 54 पर बेण वन्दावन (वतमान बेणेश्वर) मे श्री शाम (कृष्ण) के मिलन हेतु गोपिया कह रही है —

समर दिपु जातणी, लागी भाव अनत,
मणी माणक्य मोती भरी, लीज्य वधावो कत ।।902।।

हाली सब हल के करो, रमऊम रग पाय ।
मन सुध मोहन भेटिए बेण वन्दावन माहे ।।903।।

इसी क्रम मे आगे वर्णित है —

राय कुवरी—आशय राधाजी से ह । अपनी सभी सखियो के सग श्री भावपुरी (अर्थात आशय सावला ग्राम से ही हैं) से श्री साम (श्याम) अर्थात माव मनोहर श्री मावजी मिलन हेतु वेण वन्दावन (वेणेश्वर) की ओर प्रस्थान कर रही है ।

सखी चला सकलज्यन साथ गरवेज करि
हली भेटीजे भवनाथ नीरमल थई ऐरे ।
ए तो अलख पुरस्य वे आप आणे आवारे,
हली भेटीय त्रय ताप सुन्दर का मारे

कीतन की अतिम चौपाई म वेण वन्दावन धाम पर रासक्रीडा का सुन्दर वणन किया गया है । गोप गोपियो का सवाद व प्रेम मिलन का अत्यधिक श्रृंगारिक वणन किया गया है । अतिम दो छदा के भाव निम्न है—

पीउ कग ग्रहण कर प्रेम आलेगन देसुरे
मुख चुबन करसु तम, मीण्डाले सुरे
सखी फूदडी फरी सुफेर धणी सेज्यु फरती रे ।
हली नेन समस्या करे बडा नखरा करती रे ।।917।।

गोपागनाए वेणेश्वर स्थित अपने नीज मदिर की ओर प्रस्थान कर रही है। श्री साम (श्रीकृष्ण) अर्थात मान मनोहर मावजी वेणेश्वर स्थित सोम नदी के पनघट पर बैठे हुए गोपागनाआ के सग मनोविनोद करत हुए दिखाया गया है। दूसरी ओर ब्रज सुदरिया मदिर मे बैठी हुई अपने समूह के साथ भोजन कर रही हैं, इस अवसर पर वे माव मनोहर को भोजन के लिए आमत्रित कर रही हैं।

साम कहे सुदर प्रत, तुम सुहो ऐ सोहाग।
मदिर पदारो महावजी, भाजन अरोगवा भाग (1186)

अम्यो भोजन तव जीमीऐ, पदरावो महाराज
अत्य मन आनद उपजे सरे मनोरथ काज (1189)

आगे श्री साम अर्थात कृष्ण स्वरूप श्री मावजी गोपियो के सग मनो विनोद कर वेणवृन्दावन धाम (बेणेश्वर) से साबला स्थित अपने निज मदिर की ओर प्रस्थान कर रहे है, इस पर गोपागनाआ की विरह वेदना निम्न शब्दो मे अकित हैं —

साहेब कह हो सुदरी, जे घर जेहवी प्रीति।
तेहने केम वीस्यारी ऐ, राख मु नेहवी कीत्य (1221)

सुदर उभी आगणे, साहेब चालण हार,
अगे प्रेम पीडा होऐ, नयन वैचूटे धार (1222)

स्याहेब चाले हे सखी, कीजे कुण उपाय,
आभूपण अग दूखवे, मदिर रह्यो न जाये (1223)

साहेब चाल्या हे सखी, मुखे न भाय अन।

इस प्रकार अनेक प्रसगा के कीतन विभिन्न राग रागनिया के साथ जोडत हुए श्री कृष्ण की रास लीलाआ का सुदर वण न किया गया है।

प्रति वष माघ पूर्णिमा पर सत मावजी की स्मति मे वतमान बेणेश्वर (ग्रथो मे वर्णित बेणवृदावन धाम) पर विशाल मेले का आयोजन होता है। लाखो लोगो के इस मिलन समारोह म बागड प्रदेश की 'साद' कहा जाने वाली जाति का नृत्य दल इस 'बेण के टापू' पर स्थित विष्णु मदिर के विशाल प्रागण मे कृष्ण रास लीलाओ, नत्यो का आयोजन लगातार चौदह घटा तक करता रहता है। अभी भी

यह सास्कृतिक उत्सव, धार्मिक उत्सव वणेश्वर मेले के अवसर पर देखा जा सकता है।

मूलत मावजी कालीन यह साहित्य बागडी मिश्रित गुजराती एव कतिपय सस्कृत भाषा से अलकृत है। बागड प्रदेश का यह अमूल्य साहित्य अब तक जन मानस तक नही पहुच पाया यह अत्यधिक खेद का विषय है।

भारतीय इतिहासकारो एव साहित्यकारा ने इस प्रदेश के महान् सत मावजी महाराज एव उनके समय के सचित्र धार्मिक ग्रथ साहित्य के प्रति क्या उपेक्षा की ? यह हमारे सामने प्रश्न चिह्न है ? 18वी शताब्दी म इस देश म अनेक सत पैदा हुए, एव अनेक साहित्य एव धार्मिक ग्रथो के साथ साथ चित्रकला की भी रचना हुई। भारतीय इतिहासकारा एव साहित्यकारा न अपनी लेखनी से तत्कालीन महत्त्वपूण साहित्य एव सतो के कृतित्व एव व्यक्तित्व का बडे जोर शोर स उन्हे उभारने म अपनी महत्त्वपूण भूमिका निभाई। किन्तु बागड प्रदेश 'पिछडे' शब्द का अभिशाप बन गया। अत पिछडा प्रदेश मानकर डॉ० गौरीशकर हीराचद *ओझा के अलावा किसी ने इस प्रदेश का पुरातात्विक सर्वेक्षण—साहित्यिक सर्वेक्षण* कर इसका लेखा जोखा तैयार नही किया। बागड की धरती के विद्वानो न इस महान सत का देवता स्वरूप तो माना किन्तु इस सत को एव तत्कालीन उनके साहित्य को देखा अनदेखा कर दिया। घर के लोगो ने इसे ठुकराया एव साहित्य को सदा काष्ठ मजुषाओ मे अब तक कैद रखा, अन्यथा आज इस प्रदेश के महान सत मावजी एव तत्कालीन उनका साहित्य देश के समकालीन साहित्य व कला की धारा से जुड जाता। इस प्रदेश म वैष्णव भक्ति धारा को प्रवाहित करने वाला महान सत मावजी अमर है। जिसकी सचित्र कृतिया रासक्रीडा व लीला स्थल साधना स्थल—बेणेश्वर "वेण व दावन धाम' आज पूजनीय एव तीर्थ स्थल के रूप मे विद्यमान है।

साहित्य और आधुनिकता : कविता के सदर्भ मे

•

प्रेम शेखावत पछी

साहित्य, समाज की तथा समय की धडकन पकडता है। कवि स्थितिया से परिचित होकर काल क उन स्पन्दना का, सहज रूप स अथवा प्रतीका के माध्यम स, प्रस्फुटित करता है तथा उन राजनैतिक, धार्मिक एव सामाजिक विसगतिया की यथास्थिति से मुक्ति हेतु सामाजिक-पशु मानव का एक सकल्पना का आभास देता है। काल एव समाज दोना ही गतिशील हैं तो फिर यह स्वत सिद्ध है कि साहित्य भी गतिशील होगा। समय, समाज और सभ्यता कवि क सोच का प्रभावित करते हैं एव सोच ही कविता की विषय वस्तु व शिल्प का प्रभावित करता है। साहित्य की किसी भी विधा का 'आधुनिकता को भूत का अनुभव व भविष्य की आसन्नता का लाभ मिलता है। स्वाभाविक ही है कि कविता मे शास्त्रीयता व प्रयोगात्मकता का समन्वय होना चाहिए। दर्शचितन, मानव विकास के इतिहास की तरह सरलता स जटिलता है तथा वह सामयिक वातावरण, उपयोगिता व प्रायमिकता के आधार पर परिवर्तित, विकसित एव परिमार्जित होता जाता है। फलत साहित्य समसामयिकता व आधुनिकता से अछूता नही रह सकता।

आधुनिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू भौतिकता का चरम उत्कर्ष व नैतिकता का ह्रास है। जीवन म ऊब, असतोष द्वन्द्व व स्वार्थों का टकराव है। मानव व्यवहार मे जटिलताए व कुठाए विद्यमान हैं तथा सादगी सहजता व नैसर्गिकता का लोप है जिसे प्राप्त करने की समसामयिक मानव म छटपटाहट है। यह छटपटाहट कवि को कुरेदती है तथा वह आम आदमी की कुठाओ का विरूपण आधुनिक सभ्यता व परिवेश से प्राप्त बिम्बो के माध्यम से कर, कविता का सजन करता है। यहा हमे यह नही भूलना चाहिए कि साहित्य के आम आदमी म और

समाज में आम आदमी में जमीन आसमान का अन्तर है। आधुनिक कवि
कवि का यह दायित्व है कि आम आदमी में इस अन्तर को यह दूर कर, व
'कविता' जब कामपर्थी का ढोंग रचकर पाठक को राजनीति से विमुख कर
गहरी साजिश साबित होगा। यहां मेरा आशय, भाषा, शिल्प व शर्म
अबोधगम्यता के कारण नवीनता को स्वीकारने से नहीं, वरन् आम आदमी यानी
समाज के आम आदमी की यथास्थिति यानी न कविता द्वारा उबार सकने क
से है। आधुनिक कविता स्वच्छन्द तो है, लेकिन साथ में आधुनिक
जटिलताओं में उगड़ी उजड़ी छटपटाती, वर्तमान व्यवस्था के प्रति विद्रोह
सामाजिक तनाव को उजागर करती मानव जीवन में उपटाव, भटका
उसके जीवन की गलत दिशा व विकास की शिकायत करती प्रतीत होता है
कश्यप का मेडिया कैलाश मनहर का रात भर थाली पर अकेला बजता
तथा राजाराम भादू का वतात, सामाजिक विसंगतियां मानवीय मूल्यों
तथा यथास्थितिवाद से जूझते रहने का संकल्प प्रदान करती कविताएं तो हैं,
आखिर इसका उपाय क्या है? यह तो मानना ही पड़ेगा कि आज की क
अकाल व सूखे से जूझती जनता, अपने सिकुड़े हुए जंगल को भोगते वन,
वन्द कराहती मानवता प्रदूषण से पीड़ित जनता एवं मानवीय मूल्यों क
निधित्व करती है। तथा न्याय के लिए जोरदार आवाज उठाती प्रतीत होती

कुछ कविताएं ऐसी भी होती हैं जो हर काल मे आधुनिकता से प्र
मालूम पड़ती है। प्रेम सक्सेना की लाशें और चेतना कविता मे 'एक धमाक
हैं कहीं कुछ नहीं होता, गली एक लाश बन जाती है।' बल्लत मानवीय
का सटीक एवं यथार्थ चित्रण उन्होंने किया है। आग किसी जगह व बहुत है
केवल इसलिए दुखी हूं—कि तुम सुखी क्यों हो?

दहेज जाति बन्धन पुलिस अत्याचार आधुनिक सामन्तशाही शोषण म
करण मे बढ़ती बेकारी आदमी की बदलती रुचियां, नीरसता व विद्रू
स्थितियां आज की कविता को एक विस्तृत धरातल प्रदान करती हैं। स्थि
विशुद्ध आकलन के साथ ही कविता म 'कुछ' ऐसा होना चाहिए जो सका
परिणाम प्रस्तुत कर सके। यही साहित्यिक आधुनिकता की सार्थकता है। स
पनप रही विडम्बनाएं एवं विभीषिकाओं के प्रति आज की कविता यद्यपि
तो है किंतु वह उस रोगी शिशु की मां की तरह है जो अपने शिशु की चि
हेतु अभाव मे कलप रही है। कविता की सार्थकता इसी में है कि वह मा
अस्मिता की रक्षा करती हुई अपने शिशु की चिकित्सा करा सके।

ज्ञानपीठ से पुरस्कृत एक कवि ने शिवि व कपोत के मिथक का प्रयोग
हुए कहा है— बाज की दाढ मे खून लग चुका है।' इस बाज से रोगी शिशु
कैसे रक्षा कर पाये?

आधुनिक कविता का उद्देश्य सत्य शिवम् सुन्दरम् तो है ही किन्तु यह शान्ति-दायिनी भी होनी चाहिए। आंग्ल भाषा के प्रसिद्ध कवि टी० एस० इलियट ने 'द वैस्ट लैंड' म उपनिषद के ब्राह्मण और देवताओ क सम्वाद का प्रभावोत्पादक वर्णन किया है। कविता का अन्त ही 'ओऽम शाति शाति' से किया गया है। इसका उल्लेख करने से मेरा तात्पय केवल इतना ही है कि आधुनिक कविता म प्राचीन एव अर्वाचीन का सुन्दर समन्वय ही इसको सार्थकता प्रदान कर सकता है। भारतीय सस्कृति की धरोहर विशाल है प्राचीन वैदिक व लौकिक साहित्य से बिम्ब व सदभ लिए जाकर विरोधाभास तुलना व व्यजना शक्ति को सशक्त किया जा सकता है।

आधुनिक कविता जनवादी साहित्यिक आंदोलन की एक सशक्त प्रवृति क रूप मे उभर कर आ रही है। भूख गरीबी, शोषण, सत्ताधीशो व पुलिस के गठबन्धन से उत्पन्न प्रच्छन्न आर्थिक व सामाजिक अत्याचार व उत्पीडन, जनवादी साहित्य की मूल पहचान है। यह साहित्य अब बगलो व कोठियो से चलकर तग गलियो म स्थित झोपडियो व झुग्गियो मे पहुच गया है कवि का दायित्व है कि कही यह कविता झुग्गियो म ही अपना दम न तोड दे। यह समय सघष एव अपनी पहचान बनाये रख सकने के भागीरथी प्रयासो का समय है। अब समय आ गया है कि कविता 'स्वागत कक्ष साहित्य की लीक' से हटकर गाव गाव और ढाणी ढाणी म प्रवेश करे, जन चेतना को जागृत करे, तथा अपने दायित्वो का वहन करते हुए लोक-कल्याण मे लग जाये।

●

एक परीक्षा केन्द्र का आखो देखा हाल

*

अरविन्द तिवारी

मैं इस समय जब कि घडियो म सात बजकर दस मिनट हुए ह एक परीक्षा केन्द्र म बोल रहा हू । इस परीक्षा केन्द्र पर छात्र छात्रायें दसवी एव ग्यारहवी कक्षा की बोड परीक्षायें दन हेतु एकत्रित हो रही हैं । स्कूल के बाहर दो पुलिसमैन अपने मूल रूप म उपस्थित हैं अर्थात थोडा बहुत नशा किय हुए छात्रा से बतियात और छात्राओ को घूरते हुए पुलिस परम्परा का पालन करते हुए सिगरेट के कश खीच रहे हैं। उनके इस दश भक्ति पूण काय मे कुछ छात्र सहयोग दे रहे हैं जो कि अनुशासन की स्वस्थ परम्परा का निर्वाह कहा जा सकता है। आज छात्राओ का होमसाइस का प्रश्न पत्र है तथा छात्रा का ऐच्छिक गणित का । छात्रायें निश्चिन्त है जबकि छात्र इस जुगाड म हैं कि किसी प्रकार सूत्रा को परीक्षा भवन तक बेरोक-टोक पहुचाया जा सके । युद्ध स्तर पर अलग अलग खेमा म योजनाये तैयार की जा रही हैं । इन योजनाओ मे पुलिसमना का तथा कुछ चतुथश्रेणी कमचारिया का भरपूर सहयोग मिल रहा है। आज रामदीन मास्टर कही नजर नही आ रह है। कल उन्ह छात्रा के एक गुट ने घेर कर साफ साफ कह दिया था अगर तुमन सख्ती नही छोडी तो हम मुर्दाबाद का नारा लगायेंगे। मास्टर रामदीन बीवी बच्चे वाले समझदार आदमी थे सो ड्यूटी कैंसिल करवाकर घर बैठ गय ।

पहली घटी बज चुकी है छात्र छात्राओ न अपन-अपन स्थान ग्रहण कर लिय हैं। अध्यापका के चेहरे उतरे हुए हैं और पूरी परीक्षा समय अर्थात् ढाई-तीन घटे तक यो ही उतरे हुए रहेंगे। परीक्षा समाप्त होते ही उनके चेहरा पर रौनक लौट आयेगी। गणित के छात्रा ने कोडवड मे सूत्र ज्यामेट्री बाक्स म ठूस लिय है। पेपर

बटन की घंटी बजते ही पेपर बटने लगे हैं। छात्र 'अ' भाग पढ़ने में व्यस्त हैं। कमरा नम्बर एक में एक 'मैडम' और एक 'सर' हैं। 'मैडम पूरे मेक अप में हैं अत सर' के साथ-साथ कुछ हायरसेकण्डरी के 'फेलियर' छात्रों को भी आर्शीवत कर रही हैं। दसवीं के छात्र इस आकर्षण बल का फायदा उठाते हुए 'अ भाग के सही उत्तर कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुंचा रहे हैं। कुल मिलाकर इस कमरे में परीक्षा बड़े सौहार्दपूर्ण वातावरण में चल रही है। कमरा नम्बर दो में एक 'मैडम' और दो अध्यापक हैं अर्थात 'सर' हैं। इस कमरे को हाल भी कहा जा सकता है। पूरे कमरे में छात्रायें हैं। 'मैडमों' की बहुमत में ड्यूटी इसलिये नहीं लगाई कि होमसाइंस के पेपर में वे छात्राओं की मदद कर सकती थीं। कहने का तो इस कमरे में दो 'सर' ड्यूटी पर हैं परन्तु थोड़े थोड़े अन्तराल से कई 'सर आ जा रहे हैं। इस सम्बन्ध में यदि गेट पर खड़े चपरासी से पूछो तो यही कहेगा कि कमरा दो में क्रीम ही क्रीम है अत कई 'सरों का आना स्वाभाविक ही है। इस कमरे में ड्यूटी दे रही मैडम को यह बात बड़ी नागवार लग रही है परंतु कर भी कुछ नहीं सकती। लो अब तो हद हो गई। कुछ 'सर बारी बारी से चुनी हुई छात्राओं को उनके प्रश्न पत्र हल करने में मदद कर रहे हैं। उनके इस होम साइन्स के ज्ञान से इस कमरे में ड्यूटी दे रही एक मात्र मैडम' अवाक रह गयी है। इस कमरे में परीक्षा की सरगर्मी कुछ अधिक ही दिखायी दे रही है। छात्राओं को मुफ्त में मिल रही यह मदद उस समय संकट की स्थिति में बदल गयी जब एक 'सर' ने एक छात्रा को जो कुछ लिखाया था दूसरे 'सर' ने गलत कहकर कटवा दिया और उस प्रश्न का उत्तर अपने ढंग से लिखाने लगे। दूसरे 'सर अभी लिखाकर ही गये थे कि तीसरे 'सर' आ गये। उन्होंने इस छात्रा का वही प्रश्न कटवाकर अपने ढंग से लिखवाया। छात्रा की हालत दयनीय हो चली थी। 'मैडम' ने हस्तक्षेप किया और तीसरे 'सर से कहा कृपा कर बेचारी को अपने हाल पर छोड़ दीजिये। जीवन में इस किशोरी को आज पहली बार इस बात का अहसास हुआ कि अच्छी शक्लोसूरत भी एक अभिशाप है। कमरा नम्बर दो का यह क्रम परीक्षा समाप्त होने तक जारी रहेगा।

कमरा नम्बर तीन में सिंह साहब की ड्यूटी है। पर्सनल्टी से वे थानेदार लगते हैं परन्तु दिल उनका गीदड़ से भी उन्नीस है। कमरा नम्बर तीन में वे अपनी ड्यूटी गेट पर खड़े होकर दे रहे हैं। इस कमरे में पन्द्रह छात्र हैं और सभी गणित के छात्र-बेरोक टोक अपनी सीट से उठते हैं और होशियार छात्र की कापी से विधि देखकर फिर अपनी सीट पर आ जाते है। सिंह साहब सिर्फ इस बात का ध्यान रखे हुए हैं कि केंद्राधीक्षक कहीं राउण्ड पर न आ जायें। उन्हें फ्लाइंग का डर इसलिये नहीं है कि बाहर गेट पर ताला लगा हुआ है और जब तक ताला खुलवाकर फ्लाइंग विद्यालय में प्रवेश करती है तब तक सायरन बज चुका होता

है और छात्र छोटी छोटी पर्चियों को डाक्टर की दी हुई गोलियां समझकर निगल चुके होते हैं। कमरा नम्बर चार म दो 'सर हैं और छात्र छात्राओ की मिश्रित बैठक व्यवस्था है। दोना 'सर अपने मरा को मिलाकर इस निष्कष पर पहुचे हैं कि जो छात्रा पहली रा म तीसरे स्थान पर बठी है वह 'प्रिगनेंट' है। इन दोनों सरा को मालूम है कि पिछले वष ही इस छात्रा की शादी हुई थी। इसके अतिरिक्त दो छात्राओ की सुदरता पर भी वे बहस कर रहे हैं। इस सम्बध म वे एकमत नहीं हो पा रहे हैं। जो छात्र केवल 'फामल्टी' के लिए परीक्षा दन आये हैं वे इन दोनों 'सरो की बहस का पूरा आनन्द उठा रहे हैं और हस रहे हैं।

कमरा नम्बर पाच में सभी छात्र हैं और 'इनवीजिलेटर' हैं मिस्टर शर्मा। शर्माजी दुबले-पतले व्यक्तित्व वाले परन्तु नकल न करने देने के लिए सन्नद्ध नजर आते हैं यह अलग बात है कि इस कमरे के छात्र उनका मनोबल गिराने के लिये कई हथकडे अपना रहे है। वे कभी एडमीशन काड को कॉपी के अन्दर रखकर एसा आचरण करने लगते है कि नकल करते हुए प्रतीत होते हैं। शर्माजी फौरन आकर उनकी उत्तर पुस्तिका उलटते हैं और हाथ लगता है एडमीशन काड। इस कमरे के छात्रो ने नकल न करते हुए भी बडी तादाद मे पूरक उत्तर पुस्तिकायें ली हैं। शर्माजी के बार बार कहने पर भी वे इन पूरक उत्तर पुस्तिकाओ का डोरे से नहीं बाध रहे हैं। परीक्षा खत्म होने से पूव चेतावनी की घण्टी बजी। पाच मिनट रह गये है। एक छात्र उत्तर पुस्तिका सहित कमरे से बाहर निकलने का उपक्रम करने लगा। शर्मा जी उसके पीछे दौडे। इस बीच अन्य छात्रो ने अवसर का सदुपयोग करते हुए अपने एक दो सवालो को प्रतिभावान छात्रो की मदद से सही कर लिया। परीक्षा समाप्त होने की घण्टी बज चुकी है। इस कमरे मे छात्र अब फिर सवालो का मिलान करते हुए डोरे बाधने म लगे हैं। कभी वह शर्मा जी को दूसरा डोरा मगाने को कहते और कोई कोई छात्र तो नेताओ के बयान की तरह साफ मुकर गये है कि आपने मुझे डोरा दिया ही कब था। शर्मा जी किसी भी तरह परीक्षा समाप्त होने के दस मिनट बाद कॉपियां बटोरते हुए कमरे से बाहर निकले और परीक्षा कार्यालय की ओर पसीने से लथपथ होकर जा रहे हैं।

आज इसी परीक्षा केन्द्र पर कोई विशेष घटना नही घटी अत कामण्ट्री सुनने वाले बोर हो गये होंगे। अब मैं वापस आपको रेडियो स्टेशन ले चलता हू। कल फिर छह बजकर पचपन मिनट से इस परीक्षा केन्द्र का आखो देखा हाल सुनाया जायेगा।

- ●

पैर

*

जगदीश प्रसाद सैनी

इससे पहले कि मैं बेसिर पैर की बात का श्रीगणेश और इतिश्री पैर से करूं, उस परम पिता परमात्मा के पैरो की (सारी, चरणो की, क्योंकि 'कदली सीप भुजग मुख, स्वाति एक गुण तीन' की तरह पैरो पर भी सगति का असर पडता है। वे ही अग जो किसी अदने के लगे होने पर पग या पैर बने रह जाते है, विद्वानो, श्रीमानो और भगवानो की सगति पाकर पद पद्म या चरण कमल बन जाते हैं। 'मुकुतन' के सग बसने से 'नाक-बास' तो मिलता ही है।) वन्दना करता हू जिनकी कृपा से पगु गिरि लाघ जाते है। चरण वन्दना सदा से ही बडी 'पेइग' चीज रही है। खुशहाली चरण-वन्दको के चरण चूमती है। सफलता रूपी प्रियतम की पग-चाप सिर्फ पगचपी के कानो मे ही सुनाई पडती है। जो इस कला म माहिर है उसे जिन्दगी जीने के लिए और कोई कला सीखने की जरूरत नही है। सातो सुख उसकी झोली मे स्वत आ जायेंगे। जिसे यह 'सुमति' प्राप्त नही उससे यहा से सुख सम्पत्ति सिर पर पाव रखकर भाग खडी होती है। बडी से बडी हस्ती की कमजोरी उसके पैरो मे होती है। कोई चाहे कितनी ही अकड वाला हो, पैर पकडते ही पानी-पानी हो जाता है।

तो चरण वदना से लेकर पगचपी तक की जो लम्बी यात्रा सस्कृति ने तय की है, उसके केन्द्र मे पैर ही रहे है। पद-यात्रा से शुरू हुई मानव सभ्यता आकाश म उडकर पुन पद यात्रा के जरिये पद-यात्रा करने मे जुट गयी है, पर पद का पद कभी कम नही हुआ। आदमी की समूची जिन्दगी को ही अगर पैर का पर्याय मान लिया जाये तो अतिशयोक्ति न होगी। पैरो पर खडे न हो पाने का नाम ही बचपन है, पैर धरती पर न टिकने का नाम ही जवानी है, पैरो का टूट जाना ही बुढापा

है और धरती पर पैरों के पाँव न रह जाना ही मृत्यु है। इस प्रकार 'चिर जन्म मरण के आर पार' पैर ने अपने पैर पसार रखे हैं।

पैरों का महत्व असंदिग्ध है। पैर न होते तो घने जंगलों और दुर्गम पहाड़ों की सैर कैसे होती, पुलिस की रेड और फौज की परेड कैसे होती, धावकों की दौड़ और फुटबाल के खेल कैसे होते, अखाड़ों में पहलवान लंगी कैसे मारते और राजनीति के अखाड़े के पहलवान एक-दूसरे की टाँग कैसे खींचते। पैरों के बिना साइकिल और रिक्शे के पैडिल कैसे मारे जाते, मजदूरों और कुलियों के बाल बच्चे क्या खाते, मोटर-कारों के एक्सीलेटर कैसे दबते, श्रीजदार पैंट और फ्लेयर पायजामे कहाँ फबते? पैर न होते तो जूते क्या बनते? जूते न होते तो जूते वालों की धाक और धाकड़ों में जूतमपैजार कैसे होती?

पैर नहीं होते तो न घुंघरू बाँधकर मीरा नाचती और न ही सिनेमा प्रेमी सपनों में 'रेशमी पाजेब की झंकार' सुन पाते। ऊँट को 'रेगिस्तान का जहाज' की पदवी पैरों के प्रताप से ही मिली है। हरिण की चौकड़ी, कछुए की चाल, गज के गमन, घोड़े की टाप और गधे की लात को जो गौरव प्राप्त है, उसके मूल में पैर ही हैं। वैसे पैर और लात को गिरा अरथ जल बीचि सम अभिन्न ही माना जाना चाहिए। भृगु से लेकर रावण तक लात की जिस सुदीर्घ ऐतिहासिक परम्परा का प्रसार है उसके निर्माण में पैर के 'कन्ट्रीब्यूशन' को भुलाया नहीं जा सकता।

पैर सिर्फ चलने के ही काम आते हों सो बात नहीं है। पैर छुए जाते हैं पैर दबाये जाते हैं, पैरों में पड़ा जाता है, पैर धो धोकर पिये जाते हैं—

पद पखारि जल पान करि आपु सहित परिवार।

भक्त ही भगवान के चरण धोते हों सो बात नहीं है। भगवान ने भी भक्तों के पैर धोये हैं—

पानी परात का हाथ छुयो नहीं
नैनन के जल सों पग धोये।

पैरों से गंगाजी प्रकटी हैं, पैरों ने शिला को नारी बनाया है, पैरों ने तीन कदम में तीनों लोकों को नापा है। पैरों में उन्नत गर्वीले मस्तक झुके हैं—

बार बार झुकते थे पद पर
ग्रीक यवन के उन्नत भाल।

हाथ विधाता ने सिर्फ मनुष्यों को दिये हैं पर पैरों के बिना कोई परिंदा तक नहीं बचा। मक्खी मच्छर तक को पैरों की प्राप्ति हुई है। कहना न होगा कि पैर साम्यवाद के प्रतीक हैं। हाँ, साँपों के लिए साम्यवाद में भी कोई जगह नहीं है।

परो की इतनी 'डिमाड' से विधाना के यहा 'सप्लाई की समस्या पैदा हो गई। फलत परो का 'राशनिंग' हो गया जिससे आदमी तो क्या देवता तक नही बच पाये। विधाता ने कहा—हाथ, मुह आख कान चाहे जितने ले जाओ पर पैर दो से ज्यादा नही मिलेंगे। इसीलिए देवताओ म कोई चतुभुज, कोई पचानन है तो कोई त्रिलोचन। पर पर सबके दो ही हैं। देवताओ को अपने बदीगह मे रखने वाले रावण ने दस सिर और बीस भुजाए जुगाड ली पर पैर उसे भी दो से ज्यादा नही मिले।

पैरो की कई वराइटी होती है। कुछ गड जाते हैं तो फतह करके ही छोडते हैं जबकि कुछ पड जाते हैं तो बर्बाद कर देते हैं—'जह-जह पाव पड़े सतन के तह तह बटाढार। कुछ इतने नाजुक होते हैं कि गुलाब की पखुडियो से छोने पर भी छाले पडिबे' का डर बना रहता है तो कुछ इतने कठोर और खुरदर होते हैं कि भैंस का खुर भी मात मान। कुछ पैर ऐसे होते हैं जो जमीन का छूने से पहले ही काल कवलित हो जाते हैं तो कुछ महाकाल की छाती पर अपने अमिट निशान छोड जाते है। कुछ पैर हल्के होने पर आदमी के चलन म सहायक होते है तो कुछ पर भारी होने पर वश को चलाने म मददगार होते है।

पैर व्यक्तित्व के परिचायक होते हैं। दबे पाव चलने वाला चोर होगा पैर घसीटकर चलने वाला आलसी होगा, घमण्डी के पाव धरती पर पडते ही नही, कायर के पैर उखड जाते है कमजोर के पैर ऊपर हो जाते हैं, नशेबाज क पैर लडखडाने लगते हैं। एक और तरह का नशा भी होता है जिसमे पर सीधे नही पडते—

सूधो पाव न धर सकें, सोभा ही क भार।

परो का दिल से सीधा सम्बन्ध है। खुरदरे पर वालो का दिल कोमल और साफ होता है जबकि कोमल पैरो वाले कठोर हृदय होते हैं। तभी तो कहा गया है—'जाके पाव न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई।' दिल से ही नही, पैरो का हाथो से भी सम्बन्ध है। कोरे हाथ सिर्फ दिखाये जाते है जबकि दुनिया मे कुछ कर दिखाने के लिए हाथ पर मारने की जरूरत पडती है। हाथ की मुट्ठी गर्म होते ही फाइल के पैर उग आते हैं और वह सरपट दौडने लगती है। धर्म के हाथ जब धर्मान्धता की चूडी पहन लेते हैं तो उसके पैर खूनी कीचड म धस जाते है। हाथ का चाटा पर का काटा बन जाया करता है। एक के हाथ पीले होते ही दूसरे के पैरो म बेडी पड जाती है—

पायन बेरी परत है, ढोल बजाइ बजाइ।

औरत का मर्द के परो की बेडी ही नही जूती तक मानने वालो की तूता

बोलती रही है। चूंकि उसका स्थान किसी और के पैरों म पूर्व निर्धारित मान लिया गया है इसलिए उसे उसके अपने पैरो पर खडा करने की जरूरत ही नही समझी जाती। नारी को 'श्रद्धा कहकर सम्मानित करन वाला न भी उसे पद-तल' मे ही रहने की सलाह दी है। जान समाज अपन ही एक पर पर कुल्हाडा मारन स कब बाज आयगा ?

इस युग के मानव को तरह-तरह के परो के करतब देखने का सौभाग्य हासिल है। भ्रष्टाचार का पर अगद का पैर है जो किसी के हिलाय नही हिलता। एक ओर महगाई के पैर है जो धरती पर पडते ही नही ता दूसरी ओर गरीबी के पैर भी है जिनके नीचे स जमीन ही खिसक गई है। कागजी घोडो के पैर हवा स बात करते है जबकि विकास के पैर नौ दिन म अढाई कोस भी नही चल पाते। एक ओर जहा नान की गठरी को पाप की गठरी की तरह सिर पर लादे बेकारो के पैर सडकें नापते नापते घिस जात हैं वहा दूसरी आर सारे कानून कायदो को को कुचलकर 'प्याद से फर्जी' बनकर टेढे चलने वाले पैर अलग ही गजब ढहात है। तलुए चाटन वाले पैरो के तलुए अपनी कोमलता मे हलुए को भी मात करत है जबकि रिक्शे के ठूठ पैंडलो से जूझने वाले पैरो की एडिया ऊट का एडर बनकर रह जाती है। खर्चे के पैरा का भी अपना ही नजारा है। उ हे चाहे जितना सिकोड लो तनखा की चादर के बाहर निकल ही आयेंगे।

'चरननि चलि व दावन जाव कहन वालो ने चरणो की साथकता भल ही व दावन की यात्रा करने मे मानी हो पर आज के चरणा को अपनी साथकता टाग अडाने सिर भिडान और लगी मारन मे प्रतीत हाती है। *उनकी रुचि कृष्ण की* रास लीला मे नही, साम्प्रदायिक दगो के ताडव नत्य से उत्प न लाश लीला म है। वे चरण अपने आपको ध य मानते हैं जो एकता को कुचलते है भाइचारे को रौंदते हैं, धम को बैसाखी बनाते है ईमान को ठुकराते हैं और इसानियत को लतियाते ह। वे चरण फूले नही समाते जो ज्योति से तमस की आर गमन करत हैं, *मयखानो म लडखडाते हैं* नाइट क्लबो मे थिरकते है, चौराहो पर मटकते चलते हैं कुराहो पर भटक जाते है और दिलवरो के दिलो मे ऊची एडी की सडिलो समेत अटक जाते हैं।

ऐसे पैरा, सॉरी चरणो मे मेरा शत शत नमन !

●

गौरीशकर "आर्य"

आज विजयादशमी सोमवार को ही आयी। इसी दिन हमने इस धरती पर पाव धरा था। अधशती और एक दशक के अन्त मे हमारे जन्म दिवस की प्रसन्नता प्रकट करते हुए मित्रो ने शुभकामनाओ के साथ हमे "विजया" का दो चुल्लू प्रसाद दिया तो हमे लेना ही पडा। भोजन से निवृत्त होकर हम निमल शय्या पर लम्बायमान हो अपने पास ही लेटे अपने पोते के सिर पर हाथ फिरा रहे थे। आदत के अनुसार हमार मुख से—सर्वे भवन्तु सुखिन का अस्फुट जाप चल रहा था कि जाने कैसे हम न जागती न सोती अवस्था मे एक तपोवन मे जा पहुचे जहा स सुनाई पडा—सर्वे सन्तु निरामया। अचानक एक प्रकाश हुआ और हम स्वय एक ऋषि के रूप मे हवन करने लगे। "स्वाहा' हमने कहा और हविष्य का एक तिल उचट कर हमारी जाघ पर आ गिरा। हम तिलमिला उठे। उस गम तिल को उठाने हमारा हाथ पहुचा और आखें खुल गईं। देखा उगली के नीचे एक लाल चट्ट मोटा-सा खटमल दबा है। हमने उसे धरती पर रखकर उस योनि से मुक्ति प्रदान की तो उगलियो मे रक्त लग गया। हाथ धोये और फिर लेट गये। श्रीमती जी ने भी अपनी चारपाई पर करवट बदली। पडौस के कमरे की खिडकी से गुप्ता दिखाई दिये झल्ला रहे थे—"इन खटमलो के मारे चैन नही।" हम फिर लेटकर सोचने लगे—खटमल शब्द हिन्दी का है या अरबी-फारसी का? खट याने खाट(चारपायी) और मल अर्थात् मल। मतलब खाट का मल। याने मैल के कारण खाट मे उत्पन्न जीव। लेकिन, सस्कृत मे तो शायद इसे रक्तबीज कहते हैं। रक्त से बीज का क्या सम्बन्ध? रक्तबीज एक असुर था जिसके रक्त की एक बूद धरती पर गिरजाती तो सहस्रो असुर उत्पन्न हो जाते थे। रावण के मस्तक भी कट कर फिर नये उत्पन्न

हो जाते थे। श्रीराम भी उन्हें चाटते-चाटते थक गये थे। श्रीराम! श्रीराम!! हम सौभाग्य से पुनः उसी ऋषि का स्वरूप धारण कर तृषा करने लगे। सहसा एक खटमल वेदी के नीचे से निकल कर भागा। हमने पास रखे कमण्डल से जल लिया और एक मंत्र बोलकर उस खटमल पर छोड़ दिया। खटमल वहीं ठहर गया, वापस मुड़ा और हमारे ठीक सामने आकर मानवी भाषा में बोला। हमें आज तक वह वार्तालाप ज्यों का त्यों याद है—

खटमल हे ऋषि मैं अनाम पिता का पुत्र रक्तबीज आपको दण्डवत प्रणाम करता हूं।

हम कल्याण हो भद्र। तुम कौन हो? कहां के निवासी हो? अपने वंश का परिचय दो।

खटमल भगवत् हमारी सम्पूर्ण जाति खटमल माक्ड आदि नामों से जानी जाती है। हमारा व्यक्तिगत कोई नाम नहीं होता—हम सब एक जैसे हैं अतः सब खटमल ही कहे जाते हैं। हे तपोधन, जहां मानवी सामान्य दृष्टि नहीं पहुंच पाती वहीं हम निवास करते हैं। यों हम यत्र-तत्र सर्वत्र विद्यमान हैं। शीतोष्ण वातावरण हमारे संवधन के अनुकूल होता है। हे देव, हमारे आदि पूर्वज असुराधिपति रक्तबीज थे उन्हीं की वृत्ति प्रवृत्ति और परम्परा लिये हम रक्तबीज ही कहलाते हैं। सुना है महाराज अहिरावण भी हमारे पूर्वजों में ही थे।

हम अहिरावण से भी तुम्हारा सम्बन्ध है?

खटमल हां स्वामी! असुरत्व प्राप्त करने के लिए शान्तिप्रिय लोगों को सताना, उनके सुखों में विघ्न डालना, शोषण करना आदि पर-पीड़न आवश्यक हैं और अहि अर्थात सर्प की भांति दूध पिलाने वाले को भी डसना, दो प्रकार की गति रखना, दंश देकर छिप जाना होता है। ये सब तत्व हममें विद्यमान हैं प्रभो। स्त्री, पुरुष, बालक या वृद्ध, हम किसी पर दया नहीं दिखाते और निशाचरण ही हमारा कर्मकाल है। जिस घर में सर्प होता है उस घर के लोगों को नींद नहीं आती, हम भी तो उन्हीं की भांति हैं।

हमारी कुटिया में हमारे ही सामने एक क्षुद्र जीव की ऐसी निर्भीक वाणी सुनकर हमें क्रोध हो आया, हमने कहा— 'नारकीय कीट, म्लेच्छ तू दस्यु है।" खटमल पर उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। उसने नम्रता में गूढ़ उपहास भर कर कहा—"क्षमा करें ऋषिवर, आप जैसे पारखी लोग हैं ही कितने! हमें कोसने वालों की अपेक्षा पोसने वालों की गिनती अधिक है। और आप शायद यह नहीं जानते कि मैं प्रजातांत्रिक स्वतंत्र भूमि का वासी हूं जहां बहुमत का बोलबाला होता

है।" हम उसकी बात से और क्रोध आ गया। हमने गरजकर कहा—"मूर्ख, हमको ज्ञान देता है, हम सब जानते हैं। यह मत भूल कि तुम मुट्ठी भर हो।" खटमल ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा—"आपका कथन सत्य है किन्तु इस सेवक ने पोसन वालो की सख्या के लिए निवेदन किया है उस पर पुर्नविचार हो जाय तो अच्छा है।" हमे शान्त होना पडा फिर भी पूछा— वे लोग तुम्हारा पोपण क्यो करते हैं ?" खटमल ने सस्मित कहा—तपस्वी श्रेष्ठ, गीता कहती है—"परस्पर भावयन्त।" वे लोग हम नही मारने देत अहिसा की दुहाई देते हैं और हम उनको मरने नही देते। दूसरी बात, कि जीव नित्य है, सभव है हमारे पूवजा का रक्त उनमे भी व्याप्त हो बीज रूप मे रक्त की उपस्थिति ही से तो रक्तबीज नाम चरिताथ हो सकता है, "न त्वेवाह जातु नास न त्व नेमजनाधिपा।" इसके अनुसार । हमे घृणा भी हुइ और अत्यन्त क्रोध भी। हम कडक कर बोले—"शान्त हो जा निकृष्ट! भगवान वासुदेव की वाणी की ऐसी व्याख्या! हम तुझे भस्म कर देगे।" खटमल ने मस्तक झुकाकर शान्त भाव से कहा—"ऋषिवर, वाचालता क्षमा हो, यह सत्य और अहिसा की भूमि है। यहा मानसिक हिंसा के भय से अप्रिय सत्य का भाषण भी निषिद्ध है। आप यह अनीति जैसी बात कृपया मत कहिए। भस्म कर दने का विचार मात्र भी यहा अहिंसा की हिंसा है।" अब तो हमारे नेत्र क्रोध से जलन लगे। हमने उस लघु कीट का सहार करने के लिए दाहिनी तजनी उठाई ही थी कि

"दादा दी", खटमल न तान लिया, कहता हुआ हमारा पोता उठ बैठा और रोने लगा। हम भी उसी क्षण "ए ए" कहते उठ बैठे। टाच से देखा। एक खटमल भागा जा रहा था। हमने उसको स्वगधाम भेजने के लिए खूब धर पकड की लेकिन वह हमारे तकिये के गिलाफ पर जिन रेशमी धागो से बरसो पहले "अहिसा परमोधम" कसीदे से कढा हुआ था उन्ही टूटे फूटे से धागो के बीच जाने कहा जा छिपा। हमारे सभी प्रयास निष्फल हुए।

हमारी खटर पटर स धमपत्नी जी की नीद फिर टूट गई। उन्होन करवट लेकर कुछ नाराजी मे कहा—अजी क्या उठ बैठ लगा रखी है, मैंन मना किया था न कि विजिया मत पीना। अब सो जाओ चुपचाप।

●

ऐग्जामिनेशन फीवर

*

त्रिलोक गोयल

मम्मी अजी सुनते हो

पापा अरी भागवान ! मै क्या अपनी सरकार की तरह बहरा हू जो सुनते हो ! सुनते हो की रट लगा रखी है। क्या आफत आ गई ? कौन सा पहाड टूट पडा ? जो कुछ कहना है कह कर छुट्टी क्यों नही करती !

मम्मी मैंने कहा अपने होनहार, अपने अधेरे घर के एकमात्र दीपक, प्यारे पप्पू को आजकल न जाने क्या हो गया है ! हसना-गाना, टी०वी० सिनेमा देखना, क्रिकेट कमेण्ट्री सुनना, मौज मस्ती तो छोडी सो छोडी भूख नीद तक छूट गई है ! चेहरे पर हमेशा बारह बजे रहते हैं, जब देखो तब कापी किताबो से माथा फोडी। कभी रात रात भर दोस्तो के घर रहना, कभी दोस्तो को घर सुलाना दो बजे रात का स्टेशन चाय पीने जाना, सुबह ऐस्ट्रे भरी हुई मिलना ! और भी न जाने क्या-क्या गडबड घोटाले हैं। भगवान जाने यह कसी बीमारी लगी है !

पापा (हस कर) डीयर ! ये सारे सिमटम्स 'ऐग्जामिनेशन फीवर के हैं ! तुम्हे पता नही है आजादी के बाद से अपने देश मे सर्दी, गर्मी वर्षा केवल तीन ऋतुयें नही होती बल्कि पाच ऋतुयें हाने लगी हैं !

मम्मी पाच ऋतुयें ? पप्पू के पापा कही कुछ पी पुआ तो नही आये, कसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हो ?

पापा मैंने कहा बहकी बातें नही तजुर्बे की बातें कर रहा हू। तीन

विख्यात ऋतुओ के अलावा चौथा सीजन होने लगा है एग्जामिनेशन सीजन ! यह सीजन मार्च से जुलाई तक अर्थात् सैकण्डरी, हायर सैकण्डरी की परीक्षाओ से इसका श्रीगणेश होकर लॉ, पी० एम० टी०, बी० एड, एम० एड० की परीक्षा तक इसकी अन्त्येष्टि हो जाती है ।

मम्मी फिर पाचवां सीजन कौन-सा हुआ ?

पापा मैंने कहा, यह सीजन इलेक्शन-सीजन होता है । जैसे लीप इयर हर चार साल मे आता है वैसे ही यह हर पाच वर्ष म एक बार आता है । कभी-कभी किसी एम० पी०, एम० एल० ए० की बीच मे ही सद्गति हो जाने से यह चाहे जब भी आ सकता है ।

मम्मी मै बात कर रही थी अपने पप्पू की और आप पहुच गये इलेक्शन पर । देश के हर आदमी की खोपडी म घुसा हुआ यह चुनावो का भूत क्या नही कब निकलेगा !

पापा मैंने कहा भूत चुडैलो को अपने पास ही रखो ! मैं कह रहा था कि आजकल एग्जामिनेशन सीजन होने से सारे देश मे परीक्षा के कीटाणु फैल रहे हैं । इन्हे मारने के लिये ट्यूशन, इन्स्टीट्यूशन, नोट्स, कुजिया, सोल्वड पेपर्स, एक रात म गारण्टी से पास करान वाले गाइड, नकल विज्ञान-अनुसधान, कई प्रकार के डी० डी० टी, फिलट, फिनाइल छिडके जाते हैं फिर भी ये कमबख्त सुकुमार छात्रो को कष्ट देने से नही चूकते । बचते-बचते भी मस्त मलग विद्यार्थी तक इसकी चपेट मे आ ही जाता है ।

मम्मी तो अपने सपूत को भी यह रोग लग गया है क्या ?

पापा मैंने कहा, सिमटम्स तो यही कहते हैं । कभी-कभी ये लक्षण इश्क के रोग मे भी हो जाते हैं ।

मम्मी तुम्हारी अक्ल तो सचमुच ही भैंस चर गई है ! बुजुर्ग कह गये है कि इश्क और मुश्क कभी छुपाये नही छुपते ! जरूर अपने सपूत को ऐग्जामिनेशन फीवर ही हो गया है । अब इसका इलाज क्या है ?

पापा मैंने कहा इलाज है और रामबाण इलाज है ! अपने पडौस म ही आचार्य कागभुसुण्ड जी ने एक प्राइवेट इन्स्टीटयूशन खोल रखा है, वहा वे श्योर सक्सेज की गारण्टी लेते हैं ! वृद्ध गद्ध जटायु, रात के राजा उलूक सिंह, मास्टर चमगादडमल, पडित बगुले राम एक से एक धुरन्धर वहा पढाने आते हैं । पप्पू को उसी जारल-वाड मे भर्ती करा देना ही ठीक है ।

मम्मी पर इस दवा-दारू खाने-पीने को क्या दें ! भगवान जाने इसने अपनी सारी सेहत कैसे खराब कर ली है ?

पापा मैंने कहा, इसे दूध अण्डे, चाय-कॉफी, ब्राह्मी, सीरप, च्यवनप्राश, मतलब आमलेट, चॉकलेट, घॉमलेट, मूंगफली-बादाम, सब, बेर अंगूर तक कुछ भी खिलाया पिलाया जा सकता है जिससे तुम और ये मेरी जान खाना, प्राण पीना छोड़ दें !

मम्मी आय हाय ! हम और पप्पू आपकी जान खाने वाले हो गये, जैसे आपकी जान न हुई वाडीलाल की आइसक्रीम हो गई ।

पापा मैंने कहा, घर की मुर्गी दाल बराबर ! मेरी जान तुम दोनों के सिवाय और है ही किसके लिये । स्वाद ले लेकर, चटखारे ले लेकर खाओ ! मैं आज ही अपने पसीने की कमाई को कागभुसुण्ड जी के पाकिट की प्लेट में परसकर उस गधे का नाम लिखा आऊंगा !

मम्मी तो गधे के डंडी ! आज वापस घर में घुसने से पहले उसे इन्स्टीट्यूशन में भर्ती करा आना ।

पापा मैंने कहा, जरूर कराऊंगा ! बचना बचाना ईश्वर के हाथ ! साल भर तक बदपरहेजी करो, केस बिगाड़ो बाद में जब मामला सीरियस हो जाये तब डॉक्टर की याद आये । हूं ये विद्यार्थी हैं या विद्या की अर्थी ले जाने वाले !

●

कैंची

*

मुरारी लाल क्टारिया

पात्र परिचय

एस० एन० टक	अधिकारी
क्रीतदास	अधिकारी का मुह लगा, लिपिक
पी० ए०	भ्रष्टाचार उन्मूलन अधिकारी
रमेश, चन्द्रवदन, नरेशदेव	अन्य कमचारी
	लाला लटोक्न एव कागडी, पुलिस अधिकारी, आदि
गगू	चपरासी

प्रथम दृश्य

[एक बड़ा कक्ष। एक बडी मेज मध्य म। मेज के एक तरफ घूमती हुई कुर्सी, अगल-बगल दो कुर्सिया। मेज पर एक टेबल-लैम्प, कलमदान, दो-तीन फाइलें। अगल-बगल दो दरवाजे। सामने भी एक दरवाजा। पर्दा खुलते समय अधिकारी की पीठ दशकों की ओर, सिगार पीते हुए। टेबल-लैंप जलता हुआ। क्रीतदास का बायीं ओर से प्रवेश।]

क्रीतदास गुड आफ्टरनून, सर।

अधिकारी (बिना मुडे हुए) सेम टू यू डियर क्रीतदास। कहो, क्या खबर

लाये हो ?

क्रीतदास — बास, दास तो आपका बिना दाम का गुलाम है। किन्तु डरता हू कि दीवारो के भी कान होते हैं।

अधिकारी — डरो नही । बेझिझक कहो ।

क्रीतदास — आपसे क्या छिपाना, बॉस । परन्तु

अधिकारी — नानसेंस ! किन्तु परन्तु, अगर मगर, यह क्या बोलता रहता है

(जोर से कश लेते हुये)

क्रीतदास — (जेबों से कुछ निकालते हुये)—बॉस, इस ओर नजर डालें । आपके स्वागत मे लक्ष्मी चरणो मे

अधिकारी — (मुडकर देखते हुये)—कहा है लक्ष्मी ? यहा तो केवल तुम हो, वो भी क्रीतदास ।

क्रीतदास — जी, वो तो हू ही (नोटों की गडडी दिखाते हुये) यह रही लक्ष्मी, आपकी दया से ।

अधिकारी — बहुत खूब ! तो क्रीतदास ने लक्ष्मी को अपनी क्रीतदासी बना रखा है । बोलो, बोलो क्या चाहती है क्रीतदासी ?

क्रीतदास — वो लाला लटोकन दास हैं न । उनका कहना है कि ठेका उनके नाम हो जाये, तो सौगात के रूप म अभी ये, बाद मे पूरे पच्चीस सैकडा ।

अधिकारी — अरे क्रीतदास बात बनाना तो कोई तुम से सीखे । यह कोई पहला अवसर है जो इतनी भूमिका बाधनी पडी । फिर भी हो बडे चालाक ।

क्रीतदास — हुजूर, बडे तो आप है । मैं तो आपका सेवक हू ।

अधिकारी — अच्छा पास आओ (कान मे कहते हुये) समझ गये ।

क्रीतदास — सब समझ गया । अब लक्ष्मी को काबू मे कीजिए बास ।

अधिकारी — (अटची मे रखकर)—गगू को अटची ले जाने को कहना । हा, एक बात और । सुबह आते ही रमेश को मेरे पास भेजना ।

क्रीतदास — परन्तु

अधिकारी — सुना नही ? आई मीन, आई वान्ट ट सी हिम । मैं समझा दूगा ।

क्रीतदास — यस, बास ! अब समझ गया ।

(पर्दा गिरता है)

दूसरा दृश्य

[वही कक्ष। अधिकारी पुन पीठ किये हुये। टेवल लम्प जला हुआ। कॉलबेल बजाता है। चपरासी गगू का प्रवेश—दाहिनी ओर से]

गगू — जी, साब ?

अधिकारी — रमेश को बुलाओ।

(गगू जाने लगता है)

अधिकारी — उसे फाइलें साथ लाने को कहना।

गगू — ठीक है, सा'ब। (जाता है)

[कुछ क्षण सन्नाटा। सिगार का धुआ निकलता हुआ। दाहिनी ओर से रमेश का प्रवेश]

रमेश — गुड मॉर्निंग, सर।

अधिकारी — वेल कम, डियर। आदेश का ध्यान रखा ?

रमेश — मैं कर्त्तव्य पालन मे कभी पीछे नही हटा।

अधिकारी — (सामने मुह करते हुये)—गुड फैलो। लाओ मुझे दो फाइलें (एक के पन्ने पलटते ही, गरजते हुये) यह क्या है ?

रमेश — कर्त्तव्य-पालन के अलावा कुछ नहीं।

अधिकारी — नॉनसेन्स ! बट व्हाट डिड आई आस्क यू टू डू ?

रमेश — सर चादी के चन्द टुकडो पर मैं बिकने वाला नहीं।

अधिकारी — लेकिन कागडी का टेण्डर तुम्हारे पास कसे आया ?

रमेश — आपके चहते की मेज की दराज से।

अधिकारी — तुम्हारी हिम्मत कसे हुई वहा से उठाने की।

रमेश — सर हिम्मत तो उसी दिन आ गयी थी जब नौकरी मे कदम रखते ही दश हित म काम करने की कसम खायी थी।

अधिकारी — (खडे होकर)—आई से, गेट आउट।

रमेश — जाता हू। अपनी कुर्सी सभालिये (जाता है)

अधिकारी — कैंची। आई मीन सीजर्स, टू कट ए बेड फिंगर। (क्रीतदास का प्रवेश)

क्रीतदास — बॉस, कैंची का वार किस पर है ?

अधिकारी — उस पाजी रमेश का पत्ता काट दो।

क्रीतदास — बॉस, आजकल ता सरकार ने कडे कदम उठा रखे हैं।

अधिकारी — यू फूल ! तुम नही समझेगा। सरकारी कडे कदम तो हमारे लिय अमोघ अस्त्र है, वरदान है।

श्रीतदास   बिलकुल सही फरमाया। इस दास की अक्ल तो आपके पास गिरवी है। कहिए क्या-क्या लिख लाऊं ?

अधिकारी   मूर्खराज ! पहले ही न जाने कितनी चकिया चलवा चुके हो। फिर भी पूछते हो

श्रीतदास   बॉस, आपका नमक खाता हूं। अतः जब तक आपके मुख से मीठे-मीठे शब्द नहीं सुन लेता मजा नहीं आता।

अधिकारी   बहुत समझदार हो। ए फेथफुल डॉग

श्रीतदास   ही ही (खीसें निपोरता है)

(पर्दा गिरता है)

तीसरा दृश्य

[वही कक्ष। अधिकारी व गगू दिखाई देते हैं]

अधिकारी   गगू, नरेश देव को बुलाओ।

(गगू का जाना, कुछ क्षण बाद नरेश का प्रवेश)

नरेश देव   गुड मार्निंग, बॉस।

अधिकारी   मे गुड लक फॉलो यू ! बैठो। हां, रमेश की जिद का नतीजा तो देख लिया।

नरेश देव   यस, सर। मैं बिलकुल सचेत हूं। रमेश गधा था, जिसने समय की धारा को नहीं पहचाना।

अधिकारी   वेल-सैड। अच्छा तुम जाओ। (जाता है)

(काल बेल बजती है, गगू का प्रवेश)

अधिकारी   चन्द्र वदन को बुलाओ। (जाता है) (चन्द्र वदन का प्रवेश)

चन्द्र वदन   नमस्ते, सर।

अधिकारी   बैठो बैठो। देखो हम तुम्हें रमेश की राह पर देखना नहीं चाहते।

चन्द्र वदन   जी श्रीमान। रमेश तो अव्वल दर्जे का मूर्ख था। इस समय गलियों की खाक छान रहा होगा।

अधिकारी   बिल्कुल समझदार हो।

चन्द्र वदन   आपकी दया है।

अधिकारी   बस वैसा ही करो, जैसा मैं कहूं। फिर तुम्हें किसी भी प्रकार की तकलीफ नहीं होगी। (चन्द्र वदन जाता है) गगू का प्रवेश—हाथ में कागज का टुकड़ा लिये। अधिकारी आज्ञा देता है। एक नव युवक का प्रवेश। (परिचय-पत्र देता है)

अधिकारी बैठिए-बैठिए ! बडी मुद्दत के बाद पी० ए० की कमी पूरी हुई। वसे तो क्रीतदास से काम चला लेता हू। व्हाट केन आई कॉल यू बाई नेम ?

पी० ए० वैसे तो पी० ए०। लेकिन नाम से सकट मोचन "कैंची" हू।

अधिकारी क्या ?

पी० ए० जी, हा। सकट मोचन 'क ची' (कची शब्द पर जोर देते हुए)

अधिकारी यह 'कैंची' उपनाम क्यो ?

पी० ए० (इधर उधर देखकर)---इसलिए सर, ताकि जो भी सिर उठाये कि उसका पता साफ।

अधिकारी क्या मतलब ! यू मीन, अनफैथफुल डॉग को रास्ते से हटा देना।

पी० ए० यस-यस। बिलकुल ऐसा ही और आपका पूरा पूरा साथ देने को।

अधिकारी (हाथ मिलाता है)---फिर तो साला सभी अन फैथफुल डॉग्स दुम हिलाकर बात करेगा।

पी० ए० क्यो नही ? नही मानेगा, तो गदी नाली का कीडा बनकर सडेगा !

अधिकारी वडरफुल ! एक्सीलेन्ट पी० ए० ! (कुर्सी मोडता है)

पी० ए० (दर्शकों की ओर मुख करके हाथो से कची जसी रचना बनाकर) थैंक-यू माई बॉस (पर से ठोकर का इशारा करता है)

(पर्दा गिरता है)

चौथा दृश्य

[वही कक्ष। अधिकारी फाइल जाचता हुआ। पास ही गगू खडा है। अधिकारी की तीखी आवाज से गगू चौंकता है।]

अधिकारी गगू, काल पी० ए० ! ओह, आई मीन, बुलाओ पी० ए० को (बायीं ओर से पी० ए० का प्रवेश)

पी० ए० देर हो गई, सर। माफी चाहता हू।

अधिकारी लेकिन ठेका फिर से कागडी के नाम कसे कर दिया ? 'कैंची' राम, क्या तुम्हें हमारी कैंची की धार का पता नही ?

पी० ए० आप तो खामख्वाह नाराज हो रहे हैं। अभी आपने सकट मोचन कैंची की धार नही देखी।

(नोटो की गड्डिया दिखाकर)

अधिकारी क्या मतलब ?

पी० ए० मतलब बिलकुल साफ है। लाला लटोकन ने आठ हजार ही

ऑफर किये थे और पच्चीस प्रतिशत बाद मे। लेकिन कांगडी न तो तेरह हजार अभी व तीस सैकन्ड बाद म। लेकिन रमेश। साला, खुद हप्प कर जाना चाहता था।

अधिकारी तुमने आठ हजार की बात कही। इसका मतलब यह हुआ कि क्रीतदास ने भी धोखा दिया।

पी० ए० क्या किया उसने ?

अधिकारी अब उसकी वफादारी म घुन लग गये हैं (कुछ रुककर, फिर कहा) तुम कैसे कह सकते हो कि उसे आठ हजार दिये गये थे ?

पी० ए० हाथ कगन को आरसी की क्या जरूरत सर ! लाला लटोकनदास को दूसरा टेंडर दिलवाने का वादा करके सारा सच उगलवा लिया और इस बार टेंडर वापस लेने को भी राजी करवा लिया। कहो तो अन्दर बुलवा लू, बाहर ही खडे हैं।

अधिकारी नही, उसे नही क्रीतदास को बुलाओ।

(क्रीतदास का प्रवेश। मुह उतरा हुआ)

क्रीतदास बॉस, लाला लटोकनदास बाहर क्यो खडे हैं ?

अधिकारी अपने आठ हजार वापस लेने आये है। दगाबाज। मुझे पाच हजार दिये। मैंने उसमे से एक हजार इनाम दिया किन्तु

क्रीतदास माफ कर दीजिए, हुजूर ! भविष्य मे ऐसी भूल नही होगी।

अधिकारी हम दुबारा भूल करने का किसी को मौका ही नही देता। पी० ए० इन पर कैंची चलाओ।

पी० ए० माफ कर दीजिए, सर ! बाल-बच्चे वाला है।

अधिकारी पी० ए०, तुम्हारी कैंची की धार पर अभी से जग लग गया क्या ?

पी० ए० नो, सर। अभी तो चलाई नही। चलाऊ।

अधिकारी यस-एट-वन्स ! (क्रीतदास से) दूर हट जाओ मेरी नजरो से।

(क्रीतदास जाता है)

पी० ए० बास युवा ठेकेदार कागडी को आपसे परिचित कराने लाया हू।

अधिकारी अभी क्या जरूरत थी ? फिर कभी

पी० ए० जसी आपकी इच्छा। वैसे मैंने लाला लटोकनदास को राजी कर लौटा दिया है। क्रीतदास की बेहोशी की हालत मे घर छोड आया हू। रास्ता साफ है। फिर भी आपकी इच्छा नहीं तो आज लौटा देता हू। (जाने लगता है)

अधिकारी रुको ! लाये हो तो बुला ही लो।

(पी० ए० बाहर जाता है। कांगडी के साथ प्रवेश)

कागडी नमस्ते, श्रीमान् ! (हाथ मिलाता है)

अधिकारी आपसे मिलकर खुशी हुई। हमारा पी० ए० बड़ा स्मार्ट है।

कांगडी आपकी नजर बड़ी पारखी है !

अधिकारी एक बात पूछू ? आप इस ठेके को हासिल करने के लिए इतना क्या खर्च कर रहे हो ?

कागडी टक साहब! मैं हमेशा मुनाफा बांटकर खाने मे विश्वास करता हू।

अधिकारी बिलकुल ठीक कहा। हां, तो कितना देना तय किया ?

कागडी पूरे तेरह हजार पेशगी और तीस प्रतिशत बाद म।

अधिकारी क्वाइट ऑनेस्ट, माई पी० ए०। कागडी साहब हमन इतना इस लिए पूछा कि हमारा पी० ए० भी क्रीतदास तो

पी० ए० सर मैं भला क्रीतदास की जगह कैसे ले सकता हू। अच्छा, अब आप लेन देन कर लें, तो और काय पूरे करें।

अधिकारी पी० ए० गिनकर हमारी अटैची म रख दो!

(कांगडी नमस्ते कहकर प्रस्थान करता है। कुछ क्षण बाद अधिकारी जसे ही अटची उठाता ह, उस पर कची छपी हुई देखकर) चिल्लाता ह।)

अधिकारी पी० ए०! यह क्या मजाक है ? इस पर कची क्या छपी हुई है ?

पी० ए० कैंची! कहां है सर ?

(पुलिस अधिकारी का प्रवेश। अधिकारी के हाथ-पर फूल जाते ह)

अधिकारी, मैंने कुछ भी नही किया।

पु० अधिकारी यह आवाज तो आपकी ही है न ? (टेप रिकार्डर का बटन दबाता ह)

(अधिकारी सिर पकड़कर कुर्सी पर निढाल होकर गिरता ह। चारों तरफ से आवाज आती ह।—कची कची, कची।)

(पर्दा गिरता ह।)

वतन से आया बुलावा है

*

भोगीलाल पाटीदार

पात्र

गोकुल	सेवानिवृत शिक्षक
कमला	गोकुल की पत्नी
सदीप	गोकुल का पुत्र
रमेश	सदीप का मित्र
नरेन्द्र	पत्रकार

[सुबह का समय, आगन म गोकुल आराम कुर्सी पर बठा है। टेबुल पर पेन और कुछ पुस्तकें पडी हैं। सामने दो कुर्सिया हैं। हाथ मे अखबार है, पढते समय उसके चेहरे का हाव भाव बदल रहा है। कमला आती है उसके मुह पर चिन्ता की झलक है।]

कमला (अखबार खींचते हुए) पढने लिखने के अलावा आपको और भी ध्यान रहता है जी ?

गोकुल अरे ! घर मे क्या ध्यान रखू ? तू जो है लक्ष्मी का साक्षात रूप। (हाथ पकड कुर्सी पर बठाते हुए) देख ! यह सारा अखबार हत्या, बलात्कार, हिंसा, चोरी, डकैती, अत्याचार तोडफोड, हडताल, आन्दोलन और तस्करी से भरा हुआ है। हे भगवान ! इस देश के लोगो को कब सदबुद्धि आयेगी।

कमला (चिढ़ती हुई) आपको तो देश और देश के लोगा की पडी है। घर की भी कुछ चिन्ता है जी।

गोकुल तुम पर कौन सा घर का भार आ पड़ा ?

कमला (रुआसी आवाज म) मैं ता जानती हू। मेरी बात को आप कब मानत हो जी, फिर कहने से लाभ भी क्या ? मेरा तो भाग्य ही खराब है। दूसरा को क्या दोष दू ? (कुर्सी से उठती है)

गोकुल (हाथ पकड़कर रोकते हुए) नाराज क्यो होती हो ? अब तक लडकियो वाली आदत नही छोडी। थोडा बुढापे का तो ध्यान रखो। मेरे होते तुम्हे क्या तकलीफ है ?

कमला (भरी आवाज मे) क्या कहू ? आप जानत हुए अनजान बनते हो जी। जीवन भर नौकरानी के समान काम ही काम किया है।

गोकुल घर म हम दो ही प्राणी हैं। इसके लिए भी काम करने वाली एक नौकरानी है। घर का सारा काम तो वह सभालती है, फिर तुम क्या बकबक करती हो ?

कमला (ऊची आवाज म) तुम यही चाहते हो कि मैं अपना जीवन अकेलेपन मे ही बिताऊ ? तुम्हें पहले भी मुझसे बात करने का समय नही मिलता था और अब भी। इस घर म आकर मैंने क्या सुख देखा है जी। आपके नौकरी के समय घर रही। बच्चा बडा हुआ तो दूर पढन भेज दिया। उसका भी सुख नही मिला। देश के साथ घर को भी तो देखो जी।

गोकुल (अखबार रखता हुआ) मैं देश भक्ति को सर्वोपरि मानता हू। इसके साथ घर के प्रति भी अपना कर्त्तव्य निभा रहा हू। बताओ क्या काम है ?

कमला मैं कब से कह रही हू। सदीप को बुलाकर उसके हाथ पीले करा दो जी।

गोकुल अच्छा तो सास बनना चाहती हो।

कमला इसम नयी बात क्या है जी। आपके भाई का लडका तो अपने सदीप स छोटा है। उसके भी दो बच्चे हो गये। सारा दिन आगन उनकी किलकारियो स भरा रहता है। मुझे तो अपने बेटे का मुह तक देखने को नहीं मिलता। आपके तो हर समय देश देश देश

गोकुल देश के प्रति आस्था से देश की एकता बनी रहती है। राष्ट्र एक सूत्र मे बधा रहता है।

कमला पहले घर को तो एक सूत्र मे बाधो जी।

गोकुल मैंने सदीप का लिखे प्रत्येक पत्र म इसका जिक्र किया है। उसके पत्रो मे यही लिखा आता है कि मेरी शादी की आप चिन्ता मत

करो। मैं अभी इस चक्कर म नही पडना चाहता, फिर तुम्ही बताओ मेरा क्या कसूर है ?

कमला मैंने तो पहले ही विदेश भेजने के लिए मना किया था। जो भी मिलेगा वही खाएगे। आपकी तमन्ना उसे रोक नही सकी। हाथ से फिसली चीज गिर ही जाती है। उसे उठाने पर ही हाथ म आती है जी।

गोकुल भविष्य के गत मे क्या छिपा है ? उसे कोई नहीं जानता। मैंने तो कुछ समय के लिए ही जाने की इजाजत दी थी। यही गव था कि एक शिक्षक का लडका अमेरिका गया है। उसने तो वही कारोबार जमा लिया। सुना है इसके फम की दवाईया सारे अमेरिका मे प्रसिद्ध हैं।

कमला (आत्म सतोष के साथ) हमारा सदीप इतना प्रसिद्ध हो गया है कि उसकी बनाई दवाईयो से विदेशी लोग उस जानते हैं। उसन तो विदेश म नाम बढाया है जी।

(रमेश और नरेन्द्र आते हैं। अभिवादन कर बैठ जाते है। कमला घर मे जाती है।)

रमेश दादाजी, आपके लेखन से 'दैनिक समाचार पत्र' के सपादक नरेन्द्रजी बडे प्रभावित हैं।

गोकुल (नरेन्द्र की तरफ देखकर) ऐसी कौन सी बात है, जिससे आपको मेरे लेखो ने प्रभावित किया ?

नरेन्द्र आपके लेखो मे राष्ट्रीय एकता के भाव हैं। सस्कृति को साथ लेकर आगे बढने की भावना है।

गोकुल ये तो हर भारतवासी का कत्तव्य है। हम सभी एक होकर रहेगे तभी आगे बढ सकते हैं

नरेन्द्र देश के बारे मे आपके विचार सटीक है।

गोकुल यह मैं नही कह सकता, लेकिन आज जो परिस्थितिया देश मे ताण्डव नत्य कर रही हैं, उन्हे देख आत्मा मे दु ख होता है। उन्ही भावनाओ को कागज पर बाध देता हू।

नरेन्द्र सुना है आपके समान आपका बेटा भी विदेश म देश का गौरव बढा रहा है।

गोकुल (अन्यमनस्क भाव से) ऐसा गौरव किस काम का ?

नरेन्द्र हमारे देश का नाम तो ऊचा कर रहा है। हमारे वैज्ञानिको ने भी विदश मे जाकर नोबल पुरस्कार प्राप्त किये है।

गोकुल नही, यह सोचना गलत है। उन सबने वहा की नागरिकता प्राप्त कर पुरस्कार प्राप्त किया है।

नरेन्द्र उनकी मातभूमि तो भारत है।

गोकुल हा आत्मा को सन्तोष करने के लिए मान लो। मैं ता नही मानता हू।

नरेन्द्र आपने अपने लडके को अमरिका भेजा है, तो गव नही है ?

गोकुल था, अब नही

नरेन्द्र ऐसा क्यो ?

गोकुल कम्पनी मे काम करता था। उस समय कपनी की एक शाखा वहा पर भी थी। उसके कारोबार को सभालने कुछ समय के लिये भेजा था। उसने तो वहा पर अपनी ही कपनी स्थापित कर दी।

नरेन्द्र इस पर ता आपको गव होना ही चाहिए। आपका बेटा एक भारतीय ने अमेरिका जैसे देश मे अपनी धाक जमा दी।

गोकुल ऐसी धाक जमाने से क्या लाभ ? यदि ऐसा काम यहा रहकर करता तो मुझे गव होता। विदेश म भारतीयो की धाक तभी मानी जाती है, जब वह भारत मे रहकर काम करता है। विदेश म जाकर वहा रहकर ख्याति प्राप्त करना केवल स्वय की प्रसिद्धि है। इससे देश का भला नही होता गौरव नही बढता

रमेश दादीजी ! आपकी बात सत्य है, लेकिन मेरे अनुसार सदीप का मन देश प्रेम से भरा हुआ है।

गोकुल मैं कैसे मान लू ?

रमेश मेरे पास उसका पत्र आया है। उसमे उसने अपने देश की प्रशसा की है। लिखा है, यहा आदमी मशीन के समान है। वह हमेशा मशीन की तरह काम मे लगा रहता है। प्रेम और सहानुभूति का यहा अभाव है। किसी के पास बात करन का समय नही। सभ्यता तो बहुत ऊची है परन्तु सस्कृति का नाम नही

नरेन्द्र (बीच मे ही) कितने महान विचार है। देश प्रेम रग रग म भरा हुआ है। पैतक सस्कारा को नकारा नही जा सकना।

रमेश सदीप जल्दी ही भारत आन वाला है। वह भारतीय लडकी से ही शादी करना चाहता है। लिखा है इन कम्प्युटरो के बीच अपना कोई

नही है। ऐसे जीवन से ऊब गया हू। मुझे तो लगता है मातभूमि की उसे याद आ गयी है।

नरेन्द्र याह ! क्या विचार हैं ? यही तो देश भक्ति है। मैं कल ही इन विचारों को अपने समाचार पत्र म प्रकाशित करूगा।

गोकुल नही ऐसी भद्दी बात प्रकाशित मत करना। मेरा बेटा जरूर है पर देशभक्त नही। यह केवल स्वाथ प्रेम है। बिना त्याग किये देश भक्त कैसे हो सकता है ? शादी स्वाथ है परमाथ नही

नरेन्द्र (विस्मय से) क्या आपको अपने पुत्र की प्रगति मे प्रसन्नता नहीं है ?

गोकुल क्या नही ? है लेकिन देशभक्ति का प्रश्न है वहा इसका विरोधी हू। पुत्र प्रेम से मेरा हृदय भरा हुआ है, परन्तु देशप्रेमी का स्थान रिक्त है। यह तो देश सेवा मे ही भरेगा। इसलिए शादी देश प्रेम की परिभाषा म नही आती केवल भ्रम है छलावा है

(कार आगन म आकर रुकती है। अन्दर से सदीप निकलता है पिताजी के चरण स्पश करता है। दूसरो को नमस्कार)

गोकुल दीर्घायु हो ! आने की खबर भी नही दी।

सदीप (विनम्रता से) अचानक विचार हुआ। चला आया। आपका स्वास्थ्य कसा है ?

गोकुल (रुख स्वर म) हमारे स्वास्थ्य की चिन्ता छाडो। तुम्हारा धधा कसा चल रहा है ? यश तो यहा भी सुन रहे हैं।

सदीप मेरा पहला धधा आपकी सेवा है। यश तो माता पिता और मातृभूमि की सेवा करने से मिलेगा।

गोकुल फिर विदेश म फैला कारोबार कौन सभालेगा ?

सदीप (गम्भीर होकर) पिताजी अब मैं विदेश नही जाऊगा। उसे मैंने अपने मित्र को दे दिया है। अब म वैसी ही फम भारत म स्थापित करूगा।

(कमला आती है। सदीप मा के चरणस्पश कर मा से लिपट जाता है।)

कमला (गदगद स्वर मे) मेरे सदीप का मैं अब मुझसे दूर नही होने दूगी।

सदीप (भरे स्वर मे मा से अलग होता हुआ) मा ! मै अब कही नही जाऊगा। सबकुछ देख लिया। यश भी मिला। अब आपकी सेवा

करना बाकी है। देश की सेवा भारत मा की मवा

मोकुल वाह बेटा ! अब मुझे तुम्हें अपना पुत्र कहने में गर्व अनुभव हो रहा है। एक देशभक्त की सतान भी देश प्रेम से ओत प्रोत है (बूढ़ी बाहें बेटे को सीने में दबोच लेती है। नरेन्द्र अपने कमरे से देश प्रेमी युगल की तसवीर लेता है। पर्दा धीरे धीरे गिरता है। चिट्ठी आई है, आई है वतन से चिट्ठी आई है सगीत लहरी शनै शनै तेज हो जाती है।)

●

नही है। एसे जीवन से ऊब गया हू। मुझे तो लगता है मातभूमि की उसे याद आ गयी है।

नरेन्द्र याह ! क्या विचार है ? यही तो देश भक्ति है। मैं कल ही इन विचारो को अपने समाचार पत्र म प्रकाशित करूगा।

गोकुल नही, ऐसी भद्दी बात प्रकाशित मत करना। मेरा वेटा जरूर है पर देशभक्त नही। यह केवल स्वाथ प्रेम है। बिना त्याग किये देश भक्त कस हा सकता है ? शादी स्वाथ है परमाथ नही

नरेन्द्र (विस्मय से) क्या आपको अपने पुत्र की प्रगति से प्रसन्नता नहीं है ?

गोकुल क्या नही ? है, लेकिन देशभक्ति का प्रश्न है वहा इसका विरोधी हू। पुत्र प्रेम से मेरा हृदय भरा हुआ है, परन्तु देशप्रेमी का स्थान रिक्त है। यह तो दश सेवा से ही भरेगा। इसलिए शादी देश प्रेम की परिभाषा म नही आती केवल भ्रम है छलावा है

(कार आगन म आकर रुकती है। अन्दर स सदीप निकलता है पिताजी के चरण स्पश करता है। दूसरा को नमस्कार)

गोकुल दीर्घायु हो ! आने की खबर भी नही दी।

सदीप (विनम्रता से) अचानक विचार हुआ। चला आया। आपका स्वास्थ्य कैसा है ?

गोकुल (रुखे स्वर म) हमारे स्वास्थ्य की चिन्ता छोडो। तुम्हारा धन्धा कैसा चल रहा है ? यश तो यहा भी सुन रहे हे।

सदीप मेरा पहला धन्धा आपकी सेवा है। यश तो माता पिता और मात भूमि की सवा करने से मिलेगा।

गोकुल फिर विदेश म फला कारोबार कौन सभालेगा ?

सदीप (गम्भीर होकर) पिताजी अब मैं विदश नही जाऊगा। उसे मैंने अपने मित्र को दे दिया है। अब म वसी ही फम भारत म स्थापित करूगा।

(कमला आती है। सदीप मा के चरणस्पश कर मा से लिपट जाता है।)

कमला (गदगद स्वर मे) मेरे सदीप को म अब मुझसे दूर नही होन दूगी।

सदीप (भरे स्वर मे मा से अलग होता हुआ) मा ! मैं अब कही न जाऊगा। सबकुछ देख लिया। यश भी मिला। अब की

करना बाकी है। देश की सेवा भारत मा की सवा

मोकुल वाह बेटा! अब मुझे तुम्हे अपना पुत्र कहने मे गव अनुभव हो रहा है। एक देशभक्त की सतान भी देश प्रेम से ओत प्रोत है (बूढी बाहें बेटे को सीने मे दबोच लेती ह। नरेन्द्र अपने कमरे से देश प्रेमी युगल की तसवीर लेता है। पर्दा धीरे धीरे गिरता है। चिट्ठी आई है, आई है वतन से चिट्ठी आई है सगीत लहरी शनै शनै तेज हो जाती है।)

वन देवता

*

रमेश भारद्वाज

[मच पर स पर्दा हटता है और प्रकाश शनै शनै तीव्र होता है। कुछ वक्ष खडे दिखते है। एक दम सामने नीम, आम और बढ हैं। कुछ क्षण निस्तब्धता रहती है।]

आम दादा, कैसा सुन्दर प्रभात है!

बड प्रभात सदा सुन्दर होता है।

आम दादा ये पक्षी क्यो चहकते है?

बड ये खुश होते है।

नीम और फिर य कहा चले जात है?

बड चुगने।

आम क्या?

बड भोजन करने।

नीम क्या ये भूमि से भाजन नही लेते?

बड नही।

आम वे हवा मे तैर कैसे जात है?

बड तुम भी दखते हो उनके पख जो होते हैं।

नीम काश हम तैर सक्ते!

आम काश हम चल सक्ते!

सभी वक्ष काश हम तर सक्ते! काश हम चुग सकते! काश हम चल सक्त!

नीम तब हमे न कोई तोड सकता न काट सकता।

बड आओ एक गीत गायें।

(पहले बड और बाद मे सभी गाते हैं)

हम अनाथ तरु हैं जगल के, हम अनाथ तरु हैं जगल के।
नही किसी से कुछ हम कहते, नही किसी से कुछ हम लेते।
चुप चुप गुजरे सो हम सहते, नही किसी को दु ख हम देते।
जो भी पास हमारे आता, फल मीठे मीठे वह खाता।
मेघ बने मेहमान हमारे, जब-जब हमने उन्हे पुकारे।
मानव फिर भी हमे सताते, अग भग वे नित कर जाते।
नित्य हमारी हत्या करते, मन मे शका कुछ नही धरते।
जो हम सब ही कट जायेंगे, जगल भी सब मिट जायेंगे।
होगा ईंधन औषधि अभाव, मरुभूमि का होगा फैलाव।
फिर बरसेगा कभी न पानी। भूमि होगी बजर वीरानी।
प्राण वायु फिर नही बनेगा, वायु प्रदूषण भी फिर होगा।
फैलेंगी नव-नव बीमारी, उजड जायेगी बस्ती सारी।

(कुछ क्षण नीरवता रहती है)

आम दादा!

बड हा!

आम हम कितने असहाय है?

नीम अरे हा!

आम क्या?

नीम कल दो पहर म जब सभी सो रहे थे, यहा कुछ आदमी आये थ।

बड अच्छा?

आम फिर?

नीम वे आज फिर आयेंगे।

बड क्यों?

आम गोठ करेंगे?

(दूसरे वृक्ष भी बोलते है)

नाचेंगे?

गायेंग?

झूलेंगे?

ओह मेरे तो हाथ टूट जायेंगे।

नीम सुनो भी !

सभी कहो !

नीम वे कहते थे, य तो बड़े अच्छे पेड़ हैं, अच्छे तख्त मिलेंगे।

बड़ आह !

आम दादा !

बड़ मृत्यु।

आम किसकी ?

बड़ हमारी।

सभी वृक्ष मृत्यु ?

आम न हम लड सकते।

नीम न हम भाग सकते।

सभी आह !

(तीन आदमी रस्सी, कुल्हाडी, आरा आदि लेकर आते हैं)

पहला इसे देखो (आम की ओर सकेत)

दूसरा (आम के चारो ओर घूमकर उसे अच्छी तरह देखता है) वाह !

पहला अच्छा है ?

दूसरा बहुत अच्छा।

तीसरा तब लो (कुल्हाडी उठाकर चलाने को तयार होता है)

बड़ ठहरो।

(सभी विस्मित होते ह)

तीसरा कौन ?

(पहला तीसरे से कुल्हाडी ले लेता है और आम पर चलाना चाहता है)

बड़ रुको !

पहला क्यो ? तुम हो कौन ?

बड़ सुनते तो हो देखते नही ?

दूसरा दिखते जो नहो।

(वृक्षो का अट्टहास, मनुष्य भयभीत होते ह)

दूसरा भूत !

तीसरा जिन्न !

पहला पागल हो ?

बड़ डर गये ? आम को काटोगे ?

पहला हा।

बड क्या ?
दूसरा हमे लकडी चाहिए ।
नीम क्यो ?
पहला हम घर बनायेंगे ।
दूसरा हम गाडी बनायेंगे ।
तीसरा हम मेज कुर्सी बनायेंगे ।
बड पर वह हमारी हड्डी होगी ।
पहला हड्डी ?
बड हा, हमारे खून भी होता है, मास भी होता है ।
दूसरा खून भी ? मास भी ?
नीम हमे सुख दु ख भी होता है ।
तीसरा और तुम बोलते भी हो ? हसते रोते भी हो ?
नीम हा ।
तीनो आदमी अच्छा आ आ ?

(कुछ समय स्तब्धता / तीनो जड हो जाते ह ।)

पहला पर हमे मकान चाहिए ।
दूसरा गाडी चाहिए ।
तीसरा मेज कुर्सी चाहिए ।
बड तो बनाओ ।
पहला ठीक है । (कुल्हाडी मारने को तयार होता है)
वड रुको, तुम्हारे हड्डिया नही है ?
दूसरा है क्यो नही ?
बड उनसे क्यो नही बनाते ?
पहला फिर बनायेगा कौन ?
नीम कोई और ।
तीसरा हम क्यो मरें ?
आम हम क्यो मरें ?
सभी वृक्ष हम क्या मरें ? हम क्यो मरें ? हम क्यो मरें ?

(कछ क्षण के लिए तीनो आदमी स्तब्ध रहतें ह)

तीसरा हम कुछ नही जानत । (कुल्हाडी लेकर आम के तने पर मारता है । ठक-ठक ठक
आम ओह ! हाय ! मर गया !

नीम हाय !

बड ओ मनुष्य नही मानाग ?

दूसरा (तीसरे से) काटे जाओ। ठक्-ठक-ठक

(कुछ समय बाद तीसरा कुल्हाडी को देखता है)

तीसरा अरे ! यह गीली कस हो गयी ?

बड यह खून है।

तीसरा (आश्चय से) खून ?

नीम हा, आम का खून।

(तीसरा ठिठकता है। दूसरा उससे कुल्हाडी लेकर स्वय चलाता है। ठक-ठक-ठक)

नीम आम।

बड आम !

बड मर गया।

(सभी पेडों का समवेत स्वर—आम मर गया, आम मर गया, आम मर गया।)

पहला रस्सा बाधो।

(तीसरा पेड के रस्सा बाधता है। पहला रस्से के लम्बे सिरे को पकड, कर खींचता है। फिर दूसरा और तीसरा भी आ जाते ह। आम गिर जाता है धडाम)

बड सुनो ! अब इस वन मे पेड नहीं उगेंगे।

नीम वर्षा भी नही होगी।

दूसरा शाप ?

पहला पेड नही उगेंग।

तीसरा वर्षा नही होगी।

दूसरा फिर ?

[कुछ क्षण जडता, सभी स्तब्ध हैं। मच पर प्रकाश कम होता है क्रमश अधकार हाता है। मनुष्य चले जात है। पुन शनै शनै प्रकाश होता है, वक्ष पूववत दिखायी पडत हैं। एक गीत उभरता है। हम अनाथ तरु है जगल के।]

नही किसी से कुछ हम कहते, नही किसी से कुछ हम लेते।
चुपचुप गुजरे सो हम सहते, नही किसी को दु ख हम दते।
जो भी पास हमारे आता, फल मीठे मीठे वह खाता।
मेघ वन मेहमान हमारे, जब-जब हमने उन्हे पुकारा।
मानव फिर भी हमे सतात, अग भग वे नित कर जाते।
नित्य हमारी हत्या करते, मन म शका जरा न धरते।
जो हम सब ही कट जायेंगे, जगल भी सब मिट जायेंगे।
होगा इधन का औषधि अभाव, मरु भूमि का होगा फैलाव।
फिर बरसेगा कभी न पानी, भूमि होगी बजर वीरानी।
प्राण वायु फिर नही बनेगा, वायु प्रदूषण भी फिर होगा।
फैलेंगी नव-नव बीमारी, उजड जाएगी बस्ती सारी।

[गीत की समाप्ति पर प्रकाश क्रमश मन्द होकर अधकार होता है और कुछ समय बाद क्रमश तीव्र होता है। वृक्ष लुप्त हो जाते हैं। एक व्यक्ति सोता हुआ दिखता है नपथ्य से सुनायी पडता है—अरे! यह गीली कसे हुई? यह आम का पून है अब इस वन म पेड नही उगेंगे वर्षा नही होगी।]

(व्यक्ति चमक कर उठता है)

[नहीं नही नही। सचेत होकर ओह, कसा भयानक सपना था? एक स्त्री पानी का गिलास लाती है—लो! (व्यक्ति पानी पीकर फिर लेट जाता है।)
कुछ क्षण स्तब्धता रह कर पूववत् दृश्य परिवतन होता है। मच पर गाव की पचायत बैठी दिखती है।]

सरपच ऐसा अकाल पहले नही दखा।

एक पच कई वप से बराबर पड रहा है।

ग्राम सेवक क्यो?

दूसरा पच भगवान की मर्जी।

ग्राम सेवक : भगवान की मर्जी? भगवान तुम्ह क्यो सताने लगा? वह तो सबका रक्षक है।

तीसरा पच फिर?

ग्राम सेवक तुम्हारे गाव के पास जगल है।

चौथा पच नही।

ग्राम सेवक पहले था?

पहला पच — हमने नही दखा।

पांचवां पच — था। मेरे पिताजी कहते थे कि मीलो तक सघन जगल था।

ग्राम सेवक — तब वर्षा होती थी ?

दूसरा पच — हा। बडे बूढे कहते हैं कि पूब वर्षा होती थी।

ग्राम सेवक — फिर कहा गया वह जगल ?

सरपच — कट गया।

ग्राम सेवक — किसने काटा ?

तीसरा पच — हम ही ने।

ग्राम सेवक — फिर भगवान क्या करे ?

पहला पच — क्यो ?

ग्राम सेवक — सीधी-सी बात है, पेड नही, तो पानी नही।

दूसरा पच — कैसे ?

ग्राम सेवक — पेडो की पत्तिया पानी को खीचती हैं। जहां जगल होंगे वहा वर्षा होगी।

तीसरा पच — सही है। ज्यो ज्यो जगल कटते गये अकाल पडने लगे।

ग्राम सेवक — पेड वर्षा ही नही करते, हम छाया देते हैं पशुओ को चारा देते हैं फल देते हैं लकडी देते हैं।

चौथा पच — गोद देते हैं।

ग्राम सेवक — कोई पेड दवा देता है कोई लाख देता है और तेल जैसी कीमती और काम की चीज देता है।

सरपच — तब तो पेड बडे काम के हैं।

ग्राम सेवक — तभी हमारे पूवज पेडो की पूजा करते थे।

सरपच — आप ठीक कह रहे हैं। नीम पीपल आवला और तुलसी की पूजा अब भी होती है।

पाचवा पच — कहीं-कहीं खेजडे की पूजा भी होती है।

ग्राम सेवक — ये सभी देवता हैं। हमें कुछ न कुछ देते हैं।

सरपच — आपने अच्छी बात बतायी ग्राम सेवक जी।

पहला पच — तो प्रस्ताव पास करें कि अब कोई पेड नही काटेगा।

दूसरा पच — और काटता पाया जाय तो पाच सौ एक रुपये जुर्माना होगा।

सरपच — गाव का प्रत्येक आदमी पाच पेड लगायगा।

तीसरा पच — ठीक है।

सरपच — सभी सहमत हैं ?

समवेत स्वर — हा।

सरपंच लिखो ग्राम सेवक जी।

(ग्राम सेवक प्रस्ताव लिखता है)

चौथा पंच आज ग्राम सेवक जी ने बड़े काम की बात बतायी।

पांचवां पंच पढ़े लिखे आदमी हैं। हमारी तरह नहीं।

पहला पंच हां भाई पढ़ाई से ज्ञान बढ़ता है।

सरपंच बोलो वन देवता की जय!

समवेत स्वर—जय।

[प्रकाश क्रमशः मन्द होकर अंधकार होता है। पुनः शनैः शनैः प्रकाश होता है। मंच पर वृक्ष दिखते हैं। कुछ क्षण बाद पुनः प्रकाश मंद होने लगता है और पटाक्षेप होता है।]

●

उनकी यादे

*

प्रेम खकरधज

बागन वेलिया के श्वेत गुलाबी पुष्प, उसी से लिपटी बेल के श्वेत रक्त पुष्प गुच्छ, आसमानी चदोवे के नीचे मोगरा, नागन मन जूही, मेहदी कनेर, विशाल चित्र सा बरगद, उसकी लटकती जटायें, सरस्वती मदिर बच्चा को प्रशिक्षित करती मादा लगूर, नाचते मोर, दौडते छात्र, वॉलीवाल खेलते खिलाडी, दीवार के उस पार गुजरती भसा की कतार, बस स उतरते यात्री एसटाइप कुर्सी पर बठे मिस्टर भारद्वाज बरामदे के गुलाबी स्तम्भ पर पैर टिकाये चश्मे के पार सब कुछ देखत देखते उनका शरीर, उनका सम्पूण अस्तित्व वहा होने के बावजूद वे

कभी कभी ऐसा होता है कि आदमी होते हुए भी वहा नहीं होता—अपितु कही आगे भविष्य के स्वप्न लोक मे या अतीत के भग्न खण्डहरा या बचपन के घरौंदा म चौकडिया भरता खिलखिलाता दौडता है। वतमान ? वतमान तो कुछ भी नही, कहते ही वह अतीत बन जाता है। एक क्षण मे फिसल जाता है वतमान।

मिस्टर भारद्वाज के मस्तिष्क के प्रोजेक्टर पर स्मृतियो की रील उल्टी घूम रही है जिसम म वे रोकना चाहत हैं उसी पर वु विवश हैं। तज गति से दौडत वाहन मे सवारी करते समय पीछे भागते दृश्या की तरह अडॅवसच्ड फिल्म की भांति उभरत और गायब होत रूपाकार। जिनम हैं रगिस्तान का अनन्त विस्तार और अतिथि सत्कार को तत्पर साहस और सपप भरे जन, आलम जी और गोगाजी के मल, वीरानरा माना का पान और येड वहा। अरावली की तलहटी का हुरा भरा अचल अपनत्व भरे आम त्रण स पूर्ण गवाडी ग्राम, पाली का भीड भरा

अकेलापन और दसूरी की पहाडियो, चट्टानो और तालाब की चचल उर्मिया। जहा उनके कमक्षेत्र का प्रारम्भ हुआ। आज रील यहा भी नही घूम रही सरपट भागती वृन्दावन, बिहारी जी का बगीचा, निम्बार्क महाविद्यालय, मठाधीश, मण्डलेश्वर, योगी, उदासीन, वैरागी नागा, अवधूत, काठिया बाबा, माधुरीदास, रासमण्डल टोपी वाली कुज, निधिवन, गूदडी बाबा, रील के चित्र साफ होते जा रहे हैं और गति मन्द।

अलीगढ जनपद मे रुतवा नदी के तीर पर बसा गाव एक ओर रेह के खारे सन्नाटे भरे विस्तार म खडा शिव मन्दिर, सयद का थान। गाव के दूसरी ओर हरे-भरे खेत, तालाब, बाग, कुआ मन्दिर वही ऊचाई पर लम्बे लम्बे कोठार, बरामदो, कोठरिया, चोपाल से बना कच्चा मकान, गायो की रम्हान, पिताजी का रामायण पाठ, भैया भाभी की चुहल। गणेश चतुर्थी को पट्टी पर प्रथम अक्षर ज्ञान कराती उसकी प्रथम गुरु बहिन, छप्पर से टपकती बरसात, मढको की टरटर भैसो की सवारी और नदी का खारा गन्दला पानी।

अचानक पैतालीस वर्षीय मिस्टर भारद्वाज आठ वर्षीय मोहन म बदल जाते हैं। मोहन जिसके कधे से थैला लटका है। सुखराम, चेतराम, जसाराम, जगदाश, मनोहर सब हुडदग मचाते, बबूल के पेड के नीचे से गुजरते खजूर के पेडा को छेडते, अमराई मे हुलहुल डण्डा खेलते गूल (सिंचाई के लिए बनी नाली) के ऊपर से गुजरते रहते हैं। ऊसर का पार कर 'राजबहा आ जाता है। घास से भरा किनारा, घास पर चमकती आस, 'राजबहा' मे प्रवाहित नीला श्वत, निमल जल। मन आ गया ता पूरे कपडे उतार बस्ते किनारे पर रख छपाक छपाक। धमा चौकडी मचाते, खेतो से गन्ने, गाजर मूली उखाड कर खाते गप्पें मारते बम्बे के किनारे किनार दौडे जा रह है। डर है—

गुरुजी पहल आ गए और वे लेट हो गये तो डण्डे पडेंगे। आजकल गुरुजी न जाने कहा से मोटा डण्डा लेकर आ गए हैं। उसे वे सोते हैं तब भी तकिए के नीचे दबाकर। उसके पहले के पतले डण्डो को छात्र तोडताडकर चूल्हे या कुए की भेंट करते रहे हैं। परन्तु ये डण्डा ? वे डण्डा उडाने की टिप्पस भिडाते हैं।

गुरुजी पढाते है, डाटते हैं, डण्डे से पीटते हैं। परन्तु प्यार करते है। उनकी फटकार और मार के पीछे एक उद्देश्य है नि स्वार्थ उद्देश्य। उनके पढाय छात्र अच्छे नम्बरा से पास हो अधिक से अधिक उन्नति करें आगे बढें। उनका और अपन कुल का नाम रोशन करें। सव प्रथम अच्छे इसान बने।

मिस्टर भारद्वाज की स्मृतिया की रील पर सभी दृश्य डिजाल्व हो जाते हैं। रह जाती है एक मानव आकृति।

सिर पर नरमे की बनी गान्धी टोपी बडी-बडी निश्छल स्नेह और शरारत

भरी मुस्कराती आख, सुतवा नाक, घनी मूछें, आधी आस्तीन की खद्दर की कमाज, घुटनो तक धोती, पैर म चमरौधा, हाथ मे थैला, बगल मे डण्डा। नाम साहब गिरि, योग्यता मिडिल पास। शिक्षाप्रसार के प्राइमरी स्कूल म अध्यापक छ रुपए प्रतिमाह वेतन। प्रति छात्र एक रुपया प्रतिमाह फीस। दो भाइया म से एक की फीस माफ। अमावस्या, पूणमासी का सीधा, मकर सक्रान्ति को खिचडी, चट्टा चौथ पर दक्षिणा, पास कराई पर दक्षिणा गरीब और साधनहीन फ्री। छात्र को दण्डित करने के तुरन्त बाद ही व तनाव मुक्त कसे हो जाते। मि० भारद्वाज के लिए आज भी रहस्य है।

गणित और हिन्दी मे तो उन्ह महारत हासिल थी। टाप लगाकर आने वाले शिक्षाप्रसार के डिप्टी साहब सत्यदव भी उनकी योग्यता का लोहा मानते थे। चक्रवृद्धि ब्याज तक के सवाल व अपन दिमाग से ही हल कर देते थे। मिस्टर भारद्वाज को याद है। कि गुरुजी के पढाय छात्र कभी भी किसी भी विषय मे अनुत्तीण नहीं हुए। गुरुजी छात्रा म अध्ययन की प्यास जगान मे प्रवीण थे।

न जाने कसे वे निव्यसनी होते हुए छात्रा म स्वाध्याय का व्यसन पदा कर देते थे। मि० भारद्वाज को याद है। कि वे पाचवीं कक्षा तक आते आते गगाराम पटेल बुलाकी नाई के किस्से, सिन्धबाद जहाजी की यात्रायें, लल्लूलाल का प्रेम सागर अलीबाबा चालीस चोर शेख चिल्ली की कहानिया, वेताल पच्चीसी पढ चुके थे पिताजी की प्यार भरी डाट सहित।

उस समय गाव के लोग भले ही व अनपढ होते, समय-समय पर छात्रो से गणित के कठिन प्रश्न पूछत रहते। इनाम रखते। छात्र खाली समय मे जमीन पर ही ठीकरी से गुणा भाग करते रहते। गुरुजी कितना भी पीट दें। छात्र घर पर शिकायत करने का साहस नही जुटापाते थे। क्योकि गुरुजी की शिकायत का परिणाम था माताजी और पिताजी द्वारा और पिटाई। अभिभावक छात्रो से कवितायें गवाते, अन्त्याक्षरी कराते महमानो के सामने शुद्ध हिन्दी म कविता पाठ करते बालक को देख पिता फूले नही समाते थे। शायद मिस्टर भारद्वाज की वक्तत्व और कवित्व शक्ति के जागरण मे बचपन के प्रोत्साहन का बहुत बडा हाथ है।

भाद्रपद माह की गणेश चतुर्थी को चट्टा चौथ होती। छात्र बरहद के मेले से खरीदे रग बिरगे दो डण्डे या गुलाबी रग स रग दो डण्डे लेकर नय कपडे पहन बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक छात्र के घर जाते, मधुर स्वरो मे चौपाइया गाते चटटे बजाते गहस्वामी छात्रो को प्रसाद गुरुजी का दक्षिणा दते। वह मुद्रा भी हो सकती थी और कपडा भी। मोहन और दुर्गा मिलकर जब करुण स्वरो मे य छन्द गाते तो लोगा की आखा म आसू आ जाते।

नाही करी माना नही धाया करन का जग है।
साया समर की सेज पर तज करके मरा सग है ।
रावण का दल बल धरि चढ्यो माइ घेरि लीन्हा आन है ॥

रक्षा करो भइया मरी लक्ष्मण के तीर कमान है।
बीरन अवध म जाइ करि कस मैं मुख दिखलाऊगा
पूछे सुमित्रा मात तो काका कहा बतलाऊगा ॥

खाया न मालू माल न मैं कम्बखत एसा भूयो।
दुनिया कहेगी कामिनी की भेंट म भैया दयो ॥

मोहन के बडे भाई ने ऐसी ही चट्टा चौथ को गुरुजी को पूरे वस्त्र दिय थे।

गुरुजी केवल ज्ञान बेचने वाले वणिक नही थे अपितु आत्मीयता और करुणा से ओत प्रोत अभिभावक थ, सरक्षक थे। कभी किसी छात्र के चोट लगने पर उसकी मरहम पट्टी करात। सुखराम बीमार पडा था तो गुरुजी तीन दिन तक ढग से अध्यापन नही कर पाय थे। किसी भी विद्यार्थी की पारिवारिक पृष्ठभूमि उसके दुख-सुख की जानकारी गुरुजी का रहती थी। अध्यापन उनका व्यवसाय नही था, अपितु वृत्ति थी, उनका मिशन था। व हमेशा गम्भीर ही नही रहते अपितु हास परिहास स वातावरण का हल्का फुल्का बनाये रखत थे।

मोहन के सबस बडे भाई सत्ताईस साल की उम्र म अपनी नि सन्तान विधवा पचपन वर्षीय पिता को छोड, निमोनिया स चल बसे तब गुरुजी आय थे। उनकी आखें बार-बार डबडबा आती, हिचकिया लेते वे रोत रह थे। चौपाल के बाहर निकल उन्होने रात मोहन के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा था—

'पगले रो मत जाने वाला वापिस नही आता, आज स मैं तेरा मास्टर ही नही बडा भाई हू।'

उस दिन के बाद उन्होन अमावस्या पूर्णिमा का कभी 'सीधा नही लिया अपितु जो भी आटा दाल छात्र लाते व मोहन के घर भिजवा देते। कभी फीस नही ली। कागज पेंसिल भी वे ही देत। वे मोहन की कुशाग्र बुद्धि स प्रसन्न थे।

प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद भी वे अपने छात्रो की प्रगति का पूरा पूरा ध्यान रखते थे।

आज हजारो रुपये मासिक पाने वाले ट्यूसन के चक्कर म फस, सफारी सूट डाटे, डिग्रीधारी अध्यापको के बीच मिस्टर 'भारद्वाज' के वे सीधे सादे, सरल

मिडिल पास मात्र छ रुपये मासिक वेतन पाने वाले गुरु 'साहबगिरि' हिमगिरि के समान विराट और भव्य दिखाई देते हैं।

वे मन ही मन अपने स्वर्गीय गुरु का नमन कर उठ जाते हैं। बोगन वेलिया की फूलो भरी डाली वायु से हिलने लगती है खट् की आवाज के साथ बल्ब जलता है पास के रास्ते से कोई बच्चा पीपनी बजाता गुजर जाता।

●

कैसे भूलू

*

गोपी लाल शिक्षक

आखिर लेखनी ने लिपिबद्ध करने के लिए मजबूर कर ही दिया। घटना सन् 1985 की है जब मैं प्राइमरी स्कूल, पालवाल कला मे था। स्थानातरण होने से वह स्थान मेरे लिए नया था और ऐसी परिस्थिति मे हरेक के लिए होता है। अस्पृश्यता हर एक की नजर मे अपराध है मगर यह सब कथनी है, करनी कुछ और है। जब स इस पवित्र व्यवसाय म आया हू इस अपराध को मैंने गले नही लगाया और लगाता भी तो कमे, मुझे अपराधी थोडे ही बनना है !

मेरे प्रधानाचाय जी सयोग से उस दिन अवकाश पर थे, अत उस दिन मुझे चमडे का सिक्का चलाने का मौका मिला। (अस्पृश्यता का अन्त समन्वय का उदय) रिसैस हो चुकी थी। मैं भी अकेला चबूतरे पर बैठा हुआ पुस्तक के पन्ने इधर उधर कर रहा था कि एक बालक रोता हुआ जा कि कक्षा चार का था, मेरे पास आकर फरियादी भाषा मे बोला— 'मास्साब ! मने पाणी नी पायो !" मैंने बालक को पुचकारकर उसी की भाषा मे पूछा—' बेटा ! थने पाणी क्यो नी पायो।" सिसकिया भरत हुए वह बोला—' मु लेण मे ऊबो पामाऊ कर्णा धक्को दीदा मु मटकी रे अडी ग्यो।" इतना सुनते ही मेरी नजर उन बालको पर पडी जो लाइन मे खडे बालको को पानी पिला रहे थे। पानी पिलाने वाले बालक सवण थे और पानी से वचित बालक अछूत था (मैं नही कह रहा हू अछूत। समाज कहता आया है)।

मैंने उन बालको के पास जाकर पूछा, तो उन्होंने बताया कि—"मास्साब, हमेशा युईस लेण मे ऊबा राखे न पावे। लाइन वाली व्यवस्था मुझे खूब जची, मगर पूछने पर कि हमेशा तुम्ही पिलाते हो, बालको का उत्तर 'हा' म था। मैंने

कहा, कल से अमुक छात्र पिलायेंगे कुछ छात्रों ने एक स्वर में उत्तर दिया—ये तो मेतर है। मैं समझ गया इन मटकों पर कोई दाग नहीं, कोप उन कुम्हारों का है जिन्होंने उचित ढंग से न रखने पर उनमें तड़ आई है। तड़ें कैसी भी हों चाहे मटके की हों, बांध की दीवार की हों, अथवा मनुष्यों के मनमुटाव की, नुकसानदायक ही होती है, लाभ का नहीं। सब जानते हैं रावण और विभीषण की आपसी तड़ लंका का विनाश साबित हुई। जानते नहीं? जातिगत 'तेड़ों से हमारा हिन्दुस्तान अंग्रेजों के हाथ का खिलौना बना रहा। और वर्तमान पंजाब की स्थिति को कौन नजरअन्दाज करेगा।

मैंने उस बालक को जो पानी पीने से वंचित था बुलाकर रामझारे में हैंडपम्प से पानी मंगवा उन सभी छात्रों के सामने पिया और पूछा—बच्चो! मैं इसके द्वारा लाये पानी को पीकर कुछ और तो नहीं हो गया? बालक निरुत्तर थे। अब हमेशा जिस किसी को प्यास लगे स्वयं जाकर पियेंगे। (छोटे बच्चों को छोड़) सभी छात्रों ने अपनी सहमति जी हां में कर दी।

अगले रोज से वे ही बालक उस अस्पृश्यता को किसी गहरे कुंए में डाल भाई-चारे के साथ उसी मटकी से पानी पी रहे थे। मैं भी इस विषवृक्ष को जड़ से नष्ट करने के लिए ऐसे ही बालकों से पानी मंगवाता प्रधानाध्यापक जी, मैं व बालक पीते। अधिकांश प्राइमरी स्कूलों में बालक ही पानी सफाई आदि का काम किया करते हैं।

एक दिन मैं और मेरे प्रधानाचार्य जी (जो अनुसूचित जाति में आने से ऐसा करने में विवश थे) रोज की भांति विद्यालय की छुट्टी के बाद साथ-साथ घर जा रहे थे कि एक व्यक्ति ने जो कि वहीं का ग्रामवासी था (शायद उसने भी पानी की मटकी वाली बात सुनी होगी) आवेश में आकर मुझसे बोला—'मास्साब थणा भीला टेडा ने एक ही मटकी ऊ पाणी पीवा वास्ते किया पण टासफर करवाई दूगा। कहते हैं ठण्डा लोहा गरम लोहे को काटता है। मैंने उसे समझाया कि ऊंचे कुल में जन्म लेने से व्यक्ति बड़ा नहीं हुआ करता है। मैंने उसे समझाया नीचे छोटे बड़े का भेद भाव नहीं देखा जाता। वहां तो सब एक के लिए एक सबके लिए नामक पाठ पढ़ाया जाता है। और अगर मनुष्य अपने श्रेष्ठ कुलों का दम्भ करता है तो उसकी नादानी है फिर कुल (जातियां) तो मनुष्य ने बनाये पैदा करने वाले परमात्मा ने नहीं।

कहता हुआ चल दिया घर जाकर सोच रहा था उस व्यक्ति ने भले ही मेरे हित में न कहा हो मगर विद्यालय और देश के हित में तो कहा ही था क्योंकि तबादले से मैं जिस विद्यालय को जाऊंगा और वहां पर भी यही स्थिति मिलेगी

तो मुझे इस विषवृक्ष (अस्पृश्यता) की जड़ें समाप्त करने का सुनहरा मौका मिलेगा।

अन्त मे, भले ही दूसरा को घटिया लगा हो मगर मुझे तो वह चमडे का सिक्का वीरोचित ही लगा। सोचता हू ऐसे वीरोचित सिक्के (अस्पश्यता का अत समन्वय का उदय) चलाने वाले कितने हुए होग ! होगे !!

●

मेरा प्रिय संस्मरण

•

श्रीमती प्रभारानी शर्मा

याद एक धागा है जो काल के चक्र पर निरन्तर लिपटता ही चला जाता है कभी जब वह टूट जाता है तो हम कोई नई रुई रूपी भाव से उसे पुन जोडकर एक निरानेआनन्द का अनुभव करते है। जीवन भी किस तेजी से भागता है। देखते-ही देखते एक दशक पूरा होने आया। कल के पौधे आज पेड बन गए हैं और कल के बच्चे आज जवानी की दहलीज पर कदम रखने लगे हैं। आज से लगभग दस वर्ष पूर्व जब मैं क्षेत्रीय महाविद्यालय अजमेर मे शिक्षक विद्यार्थी के रूप मे शिक्षण प्रशिक्षण प्राप्त कर रही थी तब उस प्रशिक्षण काल के दौरान मेरे एक ऐसे सरल हृदयी शिष्य से सामना हुआ जो मेरी हृदय रूपी वीणा के सवेदना-तारो को ऐसे झनझना गया कि आज भी जब कभी एकात क्षणो मे उसकी याद आती है तो मैं रोमाचित हो उठती हू और उन्ही बीते क्षणो की प्रत्यक्ष अनुभूति अनुभव करने लगती हू। सब कुछ एक चलचित्र की भाति आखो के सामने घूमने लगता है।

बात सन 1976 77 की है। उस समय मैं अजमेर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय मे शिक्षण प्रशिक्षण हेतु गई थी। उसी प्रशिक्षण-काल मे सभी शिक्षक प्रशिक्षार्थियो का अपने अपने अध्यापन विषयो का पढाने हेतु भिन्न भिन्न विद्यालयो मे भेजा गया। मैं छात्रावासिनी थी। सौभाग्यवश मुझे इसी महाविद्यालय की प्रयोगशाला के रूप म पास मे ही चल रहे डिमासट्रेशन विद्यालय म अध्यापन हेतु भेजा गया। शहर म जाने की परेशानी से बचने के कारण मैं अपने आपको भाग्य शालिनी समझ रही थी क्योकि यह महाविद्यालय अजमेर शहर से दूर पुष्कर की पहाडियो की गोद म बसा हुआ है। अध्यापन का पहला दिन था। अपनी दैनिक पाठ योजना पुस्तिका एव सहायक सामग्री हाथ मे थामे जैसे ही मैंने अपने साथियो

सहित विद्यालय भवन मे धडकत हृदय से प्रवेश किया वैसे ही सामने से विद्यार्थियो के एक दल ने पचम् स्वर मे यह कहकर कि—"लो आ गए हमार सिरदद । अब तो ये खूब बार करेंगे ।" और जोर से तालियो की गूज स हमारा स्वागत किया। अपने इस अप्रत्याशित स्वागत की मैंन कभी स्वप्न मे भी कल्पना नही की थी। एक तो अध्यापन का भय दूसरा ऐसे नटखट विद्यार्थियो का सामना करना इन दाना बाता ने मरे मस्तिष्क म उथल पुथल मचा दी। घर पढ़ाना तो था ही, जसे-तैस अपने का सयत कर और मन ही मन य साचकर कि—"चढ़ जा बेटा सूली पर, राम करे सो होय' मैंन कक्षा म प्रवश किया। कक्षा सातवी थी और हिन्दी का कालाश था। सभी तैंतीस करोड दवी-देवताओ को कोटि नमन कर मैंन अपन अध्यापन काय का शुभारम्भ किया। प्रारम्भ म तो सभी विद्यार्थियो के चेहरा पर शाति व जिज्ञासा का भाव दख मुझे आत्मिक सुख मिला और मैं अपनी पूरी कुशलता से पढाने लगी। लेकिन धीरे धीरे शाति भाव का पर्दाफाश हाने लगा और शैतानी अपना रग दिखान लगी। सभी विद्यार्थी अटपट, तरह-तरह क प्रश्नो की बन्दूक दागकर जस मुझे धराशायी करन लगे। लकिन मैंन भी हिम्मत नही हारी। पूरे दमखम के साथ उनके अनुकूल उत्तर देकर म भी उनका मुकाबला करन लगी। इसी तरह कक्षा के युद्ध स्थल पर विद्यार्थी-सनिका से सामना करते-करत लगभग एक सप्ताह बीत गया। प्रतिदिन कक्षा मे घुसत ही छात्र विभिन्न, विचित्र भाव भगिमाओ स स्वागत करते और मैं मन-ही मन क्रोधित व मुस्कान युक्त भाव मन म लिये उनका सामना करती। मरे द्वारा प्रश्न पूछे जान पर व सब मिलकर स्वय ही प्रश्ना की बौछार कर दत उत्तर दना तो दूर रहा। 'सिस्टर' हम बतायें, मिस्टर, आप तो हमारी तरफ कभी दखती भी नही हो।" आदि विभिन्न वाक्या से व सारे कमरे को गुजित कर दत। एसे म एक तरफ ता अपन प्राध्यापक महोदय का भय और दूसरी तरफ एसी वानर सना से सामना करना कोई मामूली बात नही थी। एक बार ता पानी सिर स ही गुजर गया जब मरे द्वारा प्रश्न पूछने पर सभी विद्यार्थी खड़े हाकर अलग-अलग उत्तर देने लग। मेरे लाख समझान पर भी वे नही मान। कक्षा म मानो जस भूकम्प सा आ गया हो। पराजित सिपाही की भाति मैं क्रोधित हो कक्षा स निकली और सीधे प्रधानाध्यापक-कक्ष मे चली गई। मरे तमतमात हुए चेहरे का दख वे भी असमजस मे पड गए। उन्होने विनम्रतापूर्वक मुझे बठाया और पानी पिलाकर मरे आन का कारण पूछा। उनकी विनयशीलता को दख मरा गुस्सा गायब हो गया और मैं उनके व्यवहार से इतनी प्रभावित हुइ कि एक बार मैं भूल गई कि म बच्चो की शिकायत करने उनके पास गई थी। अचानक अपने आपको सयत करते हुए मने अपनी कक्षा सम्बन्धी परशानी उन्हे बताई। मेरे कहने के साथ ही उन्होने बच्चा की तरफ स स्वय क्षमा मागकर मुझे नतमस्तक कर दिया। आश्वासन दत हुए उन्होंने कहा कि कल स आपके साथ

एसा नही होगा। उसी समय उन्होंने घण्टी बजाकर चपरासी को बुलाया और शाला के पी०टी०आई० महोदय एवं उन छात्रों को कक्षा में से बुलवाया जिनकी शिकायत मैंने की थी। पलक झपकते ही छात्र प्रधानाध्यापक महोदय के सामने उपस्थित हो गए। उन्होंने उन छात्रों से ऐसी अनुशासनहीनता करने का कारण पूछा। लेकिन उन छात्रों को तो जैसे सांप सूंघ गया हो। मूर्तिवत्त सब नीची गर्दन करके खड़े हो गए। उन्होंने पी०टी०आई० महोदय के साथ उन छात्रों को जाने का आदेश देते हुए मुझे भी उनके साथ जाने को कहा। मैं मन ही मन सोचने लगी कि अब क्या होगा? पी०टी०आई० महोदय उन छात्रों को लेकर सीधे खेल के मैदान मे पहुंचे। उनके हाथ में एक छड़ी थी। छात्रों को पंक्तिबद्ध खड़ा करके पहले उनसे उनके द्वारा की जाने वाली शैतानी पूछी और फिर जो उन्होंने उनके ऊपर थप्पड़ो व डण्डो की बौछार करनी शुरू की उसे देखकर मेरा दिल भी दहल गया। क्रोध का स्थान दया ने ले लिया और मैंने उन्हे मारने को मना किया। पर पी०टी०आई० महोदय पर तो जैसे मारने का भूत सवार हो गया था। मैंने उनसे बार-बार बच्चो को नही मारने की प्रार्थना की। आखिर उनकी छड़ी थमी और उन्होंने सभी छात्रों से मुझसे पैर छूकर क्षमा मांगने को कहा। सभी ने रोते-कांपते मेरे पैर छुए और हाथ जोड़कर क्षमा याचना करने लगे। उस समय उनके चेहरों की मुख मुद्रा देख मैं द्रवीभूत हो गई। मेरी आंखें छलछला आयी और मुझे ऐसा अहसास हुआ जैसे मुझसे कोई बहुत बड़ा पाप हो गया हो। मन से क्रोध का भाव दुम दबाकर न जाने कहां भाग गया। क्षमा मांग व छात्र वहां से चले गए। मैं भी भारी मन लिये अपने छात्रावास लौट आई। छात्रों के पिटने की बात बिजली की तरह चारों तरफ फैल गई। उन छात्रों मे से एक छात्र को तो भय के कारण बुखार चढ़ गया और जब तक मैं वहां रही तब तक वह विद्यालय में नही आया। दूसरे दिन जब मैं स्कूल गई तो सभी छात्र छात्राएं मुझे भयभीत नजरो से देखने लगे। कक्षा का तो नजारा ही कुछ और हो गया। सभी छात्र भीगी बिल्ली की तरह चुपचाप बैठे रहे। मैं मन ही मन अपने को ही गुनहगार मानने लगी।

आखिर वो दिन आ पहुंचा जिस दिन हमें अपना आखिरी अध्यापन कार्य कर लौटना था। सांध्य बेला मे विदाई समारोह कुछ रोचक कार्यक्रम व जलपान के साथ सम्पन्न हुआ। शाम के पांच बजने वाले थे। बच्चों की छुट्टी भी होने वाली थी। हमारी विदाई के साथ उनकी भी छुट्टी हुई। मैं अपना सामान लेकर शीघ्र तिशीघ्र वहां से जाने की कोशिश कर रही थी। क्योंकि मन विभिन्न आशंकाओं से ग्रसित था। हर पल यह भय था कि कहीं वे छात्र मुझसे सजा का बदला न ले लें। मेरे कदम तेजी से छात्रावास की ओर बढ़ने लगे। अचानक बच्चो की भीड़ को चीरता हुआ एक छात्र तेजी से मेरी तरफ आने लगा। मेरा ध्यान उसकी ओर जाते ही मेरे हाथ के मानो तोते उड़ गए। मैं पसीना पसीना हो गई। क्योंकि उन

पिटा बने छात्रा म से वह भी एक था। मन ही मन य साचा र कि कहीं य मुगम बदला तो नही लेगा मैं सकपका गई। इतने म ही वह सामन न मस्तक होकर खडा हो गया। उसकी आँखें अश्रुपूरित थी। एक हाथ म अपना बग लिय आर एक हाथ म कुछ छिपाय वह चुपचाप खडा हो गया। उसका भोला भाला मुख देखकर मेरा भय गायब हो गया। मैंन उसम पूछा—क्या बात है? उत्तर म उसन अपनी नन्ही-सी हथेली खोल कर सामन कर दी। उस पर कुछ चॉकलट रखे थ। मैंने साचा मरे से बदला लेने की य शायद कोई नई चाल होगी। मन एक बार फिर आशकित हो गया। मैंन उसम कहा—'मैं चॉक्लेट नही खाती हू। धन्यवाद। मरा इतना कहना था कि वह फूट फूटकर रोने लगा और रुधे कण्ठ से बोला—'सिस्टर! क्या आप अब भी मुझस नाराज हैं? मैं अपनी गलती के लिए आपस क्षमा चाहता हू।" यह कहकर वह मेरे कदमो म गिर पडा। मन उस उठाया और उसे अपने सीने से लगाकर चुप किया। वह फिर कहने लगा—"सिस्टर! आपको मेरी खुशी क लिए चॉकलट खानी ही पडेगी। नही ता जिन्दगी भर मैं अपने आपका क्षमा नही कर सकूगा। उस समय उसकी दीनता व पश्चात्ताप के भावो से मरी सवदनाए बक्कृत हो उठी। मेरा हृदय भी पश्चात्ताप की गगा मे नहाकर पवित्र हो गया। उस समय मुझे एसा लगा जैसे वह धीसा हो और मैं महादवी हू। उस समय मैं यह अनुभव करने लगी कि धीसा को तरबूज दत समय महादेवी वमा के मन मे किस प्रकार की हलचल हुई होगी।

सूर्यास्त का समय था। हम दाना के आंसू एक ही स्थान पर गिरकर एकाकार हो गए थे। मन का मल धुल चुका था। मैंने पुन एक बार फिर उसे अपने आचल स लगा लिया और एक चॉकलट उसे खिलाई और एक स्वय खाई। उसके घर जान का समय हो गया था। एक बार फिर श्रद्धा की दष्टि से देख वह चला गया। मैं भी अपने छात्रावास लौटी। मन से जसे कोई बहुत बडा बोझ उतर गया था। मैंने उसी क्षण यह प्रण किया कि मैं अपन विद्यार्थियो की अनुशासनहीनता की भावना को नष्ट करने के लिए कभी न ता स्वय शारीरिक दण्ड दूगी और न दिलवाऊगी। प्रेम व्यवहार से ही उन्ह समझाऊगी। आज तक मैं अपन इस वायद को पूणरूपेण निभा रही हू। अपने अध्यापन के इन दस वर्षों म मैंन अपने इस प्रण का पूरा पूरा पालन किया है। जिन्दगी का वह भीगा पल मुझे हमशा प्रेम व्यवहार के लिए प्रेरित करता रहता है।

o

अपग की होली

*

वसतीलाल सुराना

दिनाक 17 माच 1986

होली के अवसर पर सभी रग खेल रहे थे। एक सु दर सा अपग बालक यह देख रहा था। बालक पावो से लूला था जमीन पर घिसट कर वहा पहुचा, हा कुछ गुलाल बिखर गइ थी। नजर वचा कर उसन मिट्टी सहित गुलाल उठाकर अपने पर डाली, तथा उसके समीप एक बच्चे के आन पर चुपके से उसके पाव पर कुछ गुलाल लगाई—उसके चहरे पर सतोष के भाव थे कि उसने भी होली के अवसर पर रग खेला था।

हम कितने हृदयहीन व स वेदनहीन है कि इन अपगो के लिये अवसर विशेष पर कुछ सोचें व सुख म भागीदार बनायें।

दिनाक 24 मई 1986

विद्या निकेतन स्कूल का एक अपग बालक समस्या प्रधान हुए जा रहा था। वह प्रत्येक काय पर अपना विद्राह प्रदर्शित करता। स्वय ही चित्रकला के लिए चित्र बनाना शुरू करता, कुछ समय बाद तज रगा से अपन ही चित्र के आरपार रग करके उसको विगाड देता। कारण का पता लगा कि घर पर नही पढने पर पिता उसकी पिटाई करता था। हमे बाल हृदय की गहराइया मालूम ही नही। फिर यह तो अपग वच्चा था। अभिभावक को शिक्षित किया जाना चाहिये कि व अपने बच्चो के साथ कसा सलूक करें।

2 जून 1986

शिक्षक श्री प्यारेलाल मवाडी' का हाथ बस दुघटना म काटना पडा आठ सन्टीमीटर का स्टम्प ही बचा था। विश्व विकलांग दिवस पर पूना स लगे अपने कृतिम हाथ का प्रदर्शन करत कहते है "जब लोगो का हाथ कटा दिखता, कमीज की आस्तीन ऊपर उडती दिखती, तो हीनता महसूस होती थी किसी दफ्तर मे कोई प्राथना पत्र दत या किसी से कुछ मागत समय महसूस होता कि विश्व का सबस हीन व्यक्ति मैं ही हू मानसिक तनाव रहता। पूना मे खाना खात समय दोना हाथ कटा व्यक्ति मुझ एक हाथ कट व्यक्ति का इन्तजार करता कि कब मैं खाना खालू व बाद म उसे खिलाए। तब मुझे एक हाथ होने का भी आनन्द होता। अब कृत्रिम हाथ लग गया, उससे जहा तीस प्रतिशत काय म सहूलियत हुई वही अपगता का मानसिक बोध नही होन स हीनता भी नही रही।

वास्तव म हीनता एक मानसिक स्थिति है उचित शिक्षण द्वारा इससे छुटकारा मिलना चाहिए।

10 जुलाई 1986

बडे भाइसा चालीस वष पूव के परिचित से कह रहे थ, 'अब आर्थिक स्थिति ठीक है पहले कभी भी ठीक नही रही, एक दुख हमेशा सालता रहगा कि मा को सुख नही द सके उनका जीवन बडा ही दुखमय बीता। अब सब कुछ ठीक है तो मा नही अत वास्तव मे मा बाप की तन मन धन से सवा करनी चाहिए। यही परम आनन्द की बात होती है। अब तो मात्र लकीर पिटना ही है।

श्री बलराम जाखड न स्कूल म यह कहानी सुनाई वास्तव म कितनी सत्य है। कारा ज्ञान किसी काम का नही। ज्ञान व्यावहारिक व जीवन की विभिन्न चुनौतिया का जवाब द सके उस शिक्षा कहत हैं। किसी गांव के तीन व्यक्ति काशी पढने गये। चौथा आर्थिक कारण स गांव मे ही रह गया। पढकर वापस गाव म आन पर, जगल म घुसत वक्त उनको हड्डिया का एक कंकाल मिला। एक ने कहा मैं इसको खडा कर सकता हू। दूसरे ने कहा, मैं हाड मास लगा सकता हू। तीसरा बोला म इसमे जान डाल सकता हू। और प्रत्यक ने अपना काम शुरू कर दिया। जब तीसरा अपना काम करने ही वाला था कि चौथा बाला, "ठहरो। मुझे वक्ष पर चढन दो। और शेर जिन्दा होकर तीनो को मार कर खा गया।"

13 अगस्त 1986

आज फिर गभवती सुजरनी को स्कूल के पिछवाडे, घने बबूल के झुण्ड मे देखा। एक मजदूर उस पत्थर मार मार कर कैम्पस के बाहर करन का प्रयत्न कर रहा था। मैंने सोचा ये हरिजन चाह कर ही गभवती सुअरनी को इस सुरक्षित व

घनी छाया व पानी युक्त जगह पर छोड जाते ह । ताकि प्रसव के पश्चात कुत्ते या अन्य हिंसक जन्तु से बची रहे। लेकिन जब वह मेरे सामने से गुजरी तो देखा कि उसके मुह पर तार लपेट कर बंद कर रखा था ताकि प्रसव के पश्चात भूख से व्याकुल सुअरनी अपने ही शिशुओ को नही खा जाय और मालिक को बच्चे कम मिलें। लेकिन इसका क्या भरोसा कि उसके अभी बच्चे होने वाले ही हैं। कहीं प्रसव म दो चार दिन लग गये तो उस सुअरनी के खाने का क्या होगा। वह मा भी तो बनने वाली है गर्भ के शिशुओ के अतिरिक्त पोषण का क्या होगा। तथा स्वय की भूख प्यास का क्या होगा। कई सारे प्रश्न अनुत्तरित ही रहे। जो मन को झकझोर रहे ह अपने स्वार्थ के लिए कितनी पीडायें हम गूगें जानवरो को देते हैं।

●

एक चित्रकार की डायरी

•

रमेश गर्ग

19 3 87

अब मुझमे जबरदस्त अन्तद्व द है कि कलाभिव्यक्ति मे गति चाहिए या गहन स्थिर चिन्तन ये दो विरोधी तत्व हैं—अध्ययन स भावो को ठस पहुचती है और केवल भावावेश स कोई सृजन उचित नही

आज चित्र सृजन करने से पूर्व की अनुभूति इस प्रकार रही—पहले चित्र म काले कपडे से पूरे शरीर को ढके हुए एक मा जितना ढक सकती अपने बच्चे को ढक दिया फिर भी आधी से ज्यादा उसकी टागे बाहर निकली हुई थी—

दूसरे चित्र म एक ही उम्र और ऊंचाई आकार के दो बच्चे पाव समेट कर सफेद चादर मे लिपटे हुए—और तीसरे चित्र म एक लकडी के गट्ठे स उभर कर आती हुई मानव आकृति—जसे जिन्दगी के पक्ष म जकडन हो या एकाकीपन लिए विचारवान हो।

22 3 87

फकीरो की जमात मे जो गण्डे और तावीज बनाते हैं मैं घटो खडे हुए उनके रगो की सुन्दरता देख रहा हू और सोच रहा हू कि इस सुन्दरता को चित्रो मे कैसे उतारा जा सकता है पर मेरे कान म य शब्द पडते है—"एक जगह से आटा लो दूसरी जगह से दाल माग लो—कही से आग ले आओ और पेट भरने के लिये दो रोटी जुटा लो गरीब की भी कोई जिन्दगी होती है—साला गरीब बीडी मागता है तो वह भी गरीब से ही—सेठ से नही, धत तेरे की ऐसी जिन्दगी से।' मुझे गरीबी स खौफ और रोटी जुटाने की चिन्ता लग जाती है।

25 3 87

आज न जाने मेरी जिन्दगी में तूफान उठाने के लिए पर्दे में ढकी हुई और गाठों में जकड़ी हुई ये खूबसूरत युवतियां न जाने यहां से आ गई, गुलाबी रंग में चादी या सुनहरी झालरों के बीच जब यह मुस्कान बिखेरती है तो समझ में नहीं आता कोई पुरुष कैसे होश संभालकर रखता होगा, बाप रे! क्या हसी ठिठोली और अदा है। अच्छा हुआ सृष्टि के रचयिता ने अपने ही कृतित्व की सुन्दरता यहां न देखी और न ही कृति ने अपने रचयिता की क्षमता वरना दोनों की आखें बन्द करनी पड़ती।

17 4 87

एक वृद्ध पुरुष कमीज पर काली जॉकेट और आंख पर चश्मा चढ़ाये। सिर पर भारी सी गाठ लिए आया तो कुत्ते उसके चारों तरफ मडराने लगे। मैंने सोचा खाने के पीछे ऐसा कर रहे है। वृद्ध बैठ गया तो कुत्ते भी इधर-उधर जाकर बैठ गये। एक वृद्धा बैसाखी के सहारे आ गई। मुझे समझ में आ गया कि पत्नी है।' अब वह पत्थर पसन्द करती थी वृद्ध उसे उठाकर ले आता था, चारों तरफ सीमा बाधने के बाद जीवन शुरू हो गया।

18 4 87

आज चित्र सृजन करने के लिए जो मैं देख रहा हू उनमें पाच छह गधे हैं। पीछे एक पुरुष प्राकृतिक रंगों के साथ मेल खाती हुई इस दृश्य की सुन्दरता ऐसी है कि इनमें से एक सफेद मिट्टी के रंग का दूसरा थोडा भिन्न गेरुआ, तीसरा मटिया रंग का, चौथा सफेद और मटिया रंग का मिश्रण अर्थात प्राकृतिक रंगों की ऐसी साकार कृति जो अब शहरी जीवन में नही है।

19 4 87

एक औरत डिजाइनदार ओढनी पहने जमीन पर बैठी है कोई साठ वर्षीया होगी। एक पुरुष खडा है दूर पर एक दूसरी औरत खडी हुई है जो इस पुरुष की पत्नी होनी चाहिए। बैठी हुई औरत कह रही है इज्जत बडी होती है, उसी के लिए ओछा पहनते हैं, ओछा खाते हैं ओछे में रहते है। फिर किसी को याद करके कहने लगी 'आज वो होते तो क्या कहते वो बैलगाडी देखकर खुश होते थे आज के छोकरा ने बेच डाली ।'

21 4 87

एक लाल साफे वाला खिचडी दाढी का दूसरा सफेद साफेवाला जिसके

पास मूज की गठरी है, तीसरा गुलाबी पगडी वाला, ग्रामीण होत हुए भी दो पैसे जोडकर महाजन की श्रेणी म आ गया है, चौथा लाल साफे वाला—दैनिक चर्चा शुरू। घर पर पया लाकर देव नही—ठाला इधर-उधर बैठतो फिरे—चीटी को देखो जिन्दगी से कभी हार नहीं खाती—बस उनकी तरह जीना चाहिए।

भारत की ग्रामीण यात्रा मे य गठरीनुमा चलती फिरती विचार बाध व्यक्त करने वाली आकृतिया ऐसी है कि इनके बीच जब कोई पढा लिखा आ जाय तो सारा मजा किरकिरा हो जाय।

25 4 87

हे भगवान ! इस सुन्दरी के पास पारदर्शी गोरी चमडी क और काली आखो के अलावा और कुछ है भी। इसका चित्र बनान के लिए मैं इतना अधीर हो रहा हू कि क्या जान लेवा रग है। न पीला न गोरा ऊपर से नाक क नीचे पडने वाली यह छाया, मैं ध्यान से दखता हू। लाल रग इसके होठो पर चिपका दो तो भी यह आभा नही दे सकता कम्बख्त के पास गोरे हाथो मे चादी की अगूठी भी भद्दी लगती है, मुडकर देखने की तो जरूरत ही नही पडती है गरदन नही मोडती केवल आंख घुमानी है।

30 4 87

बहुत तज तूफान है। मेरी जिन्दगी म अब स दो मिनट पहले मैं ताग म सवार ऐसे मानस को बनाय हुए था कि अभिव्यक्ति करनी हो तो शृगार से जुडी हुई बलात्कार, गैस त्रासदी या नर सहार य भी कोई विषय है जिन पर कलम चलाई जाय। जिन्दगी स ऊबे हुए लोगो को ही ऐसी त्रासदिया घेरे रहती हैं। मै एक घर मे प्रवेश करता हू जिस घर की मा हसत खेलते परिवार को छोडकर इस दुनिया से विदा हो गई है। मैं नियति के विधान को बिलकुल नही समझ पा रहा। अभी मैं मृत्यु का कास ही रहा था कि एक अ य प्रियजन की मृत्यु की खब र झूठी है यह जानकर जीवन फिर माड खा गया। और एक नव विवाहिता जो बहु त ही चचल है अपन पति से खूब खुश होकर बातें कर रही है, इसके दोनो हाथ सिर पर है अगडाई है जीवन की अमराई है विश्व की अदभुत सुन्दरता है। जो केवल भारतीय है—पर कौन-सा चित्र बनाया जाग।

बस अजीब तूफान है जीवन और मृत्यु के बीच का मनाये जाने वाला यह मेला जिसम से कोई मेरे चित्र का विषय बन जाता है और अनेक छूट जात है।

●

उपनगरीय क्षेत्र में निवास करता है, हरियाली हमारे देश व विदेश में इस पूरे शहर की आराध्य रही है, यहां पेड़ सड़क से ऊपर पड़े हैं। सड़कें कम चौड़ी होने पर भी दोनों तरफ पेड़ थे, और पेड़ों की गुलाई व निचाई के लिये पेड़ों के चारों घेरा में लोहे की जो जालियां ... में रखी हुई यह स्पष्ट करती थी कि यहां का निगम प्रशासन पेड़ों की सुन्दरता के लिए कितना जागरूक है। हमने उन्नीसवीं सदी के कुछ गिरजाघर देखे, जो तत्कालीन वास्तुकला व शीशों की नक्काशी से युक्त रंगीन आभा अपनी गौरवमयी गाथा का वर्णन कर रहे थे, विश्व प्रसिद्ध लोह निर्मित एफिल टावर जिसकी रूपरेखा फ्रांस के विख्यात कलाविद् एलेक्जेंडर गुस्ताव एफिल द्वारा बनाई गई थी, इस भव्य मीनार का कार्य 31 मार्च 1889 को शुरू होकर दो वर्ष दो माह दो दिन के बाद पूरा हुआ था, इसकी ऊंचाई 1052 मीटर 4 इंच है और 7224 टन लोहा इसके निर्माण में खर्च हुआ था इसमें 1792 सीढ़ियां साथ ही उस समय इसके निर्माण में फ्रांस की मुद्रा 7,799 401 फ्रांक व 31 सेन्टाइम व्यय हुई थी जो फ्रांस की मुद्रा फ्रांक भारतीय रुपए से डेढ़ गुना अधिक है। इस मीनार के पास फ्रांस की सीन नदी बहती है, इस मीनार के पास ही हरी दूब का विस्तृत मैदान अत्यन्त आकर्षक लगता है, पेरिस शहर में मात्र यही स्थान अधिक खुला व सुन्दर लगा। इसी स्थान पर विगत वर्ष में भारत महोत्सव का उद्घाटन हमारे युवा प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी द्वारा किया गया था। इसके पास ही वह स्थान है जहां फ्रांस की क्रान्ति हुई थी। यह स्थान 'रिपब्लिक पार्क' के नाम से विख्यात है। आगामी 14 जुलाई को स्वतन्त्रता दिवस मनाने की तैयारियां चल रही थी यहां ऊंचा भव्य प्रवेश द्वार हैं इसके अन्दर दोनों तरफ अस्थाई बैठक व्यवस्था का निर्माण कार्य चल रहा था इस शहर में मूर्तियों की कला अत्यन्त ही मनोहारी है। फोरम दियो हालीज नामक एक सुन्दर भूगर्भ बाजार का कार्य निर्माणाधीन था। यहां के चौराहे विशेष प्रकार के गोलाकार में बने हुए हैं। मैं सौभाग्यवश संसार के अन्य सुन्दर शहर टोक्यो न्यूयार्क, लन्दन वाशिंगटन, सिंगापुर स्टॉकहोम कोपेनहेगन आदि देख चुका हूं फिर भी पेरिस की सुन्दरता स्वयं में एक विशिष्ट स्थान रखती है।

जैसा कि मेरे एक फ्रान्स के पूर्व परिचित मित्र श्री पिग्नी जिनके साथ मुझे 79 में एक्सपेरिमेंट इन इंटरनेशनल लिविंग संस्था के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन दिल्ली में रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। उनका पता होने पर मैंने दूरभाष से बात करनी चाही किन्तु ज्ञात हुआ कि वे इस पद का त्याग कर चुके हैं। मैं पैदल ही पूर्व स्थान जो 15 कि० मी० दूर था चला गया उस स्थान पर पहुंचने के बाद वहां उपस्थित महिला सचिव से श्री पिग्नी का पता मिल गया मैंने पैदल यात्रा द्वारा इस शहर की सुन्दरता का जी भर अवलोकन किया। इस पूरे शहर में मात्र एक ही सड़क ऐसी है जहां पेड़ नहीं हैं। शेष सभी सड़कों पर दोनों ओर चौकसी

रखने वाल चौकीदारो की तरह सुदर पड लगे हुए थे यहा तक कि छतो पर कही ढलवा जमीन पर हरित बेलो से आच्छादित स्थल हृदय को स्पश कर लेता था। इधर उधर अगूर की बेलें भी शहर के मध्य म लगी हुई थी। अगूर फ्रास का बहुत प्रिय फल है और यहा से पूरे विश्व में अगूर का शराब का निर्यात होता है, साथ ही नवयुवको व विद्यार्थिया को अपने अवकाश के क्षणो में अगूर के खेनो पर काम मिल जाता है। हा, ता फिर मैंने प्राप्त पत से श्री पिग्नी से दूरभाष पर ज्या ही बात की, श्री पिग्नी छ वष के अन्तराल के बाद भी मुझे पहचान गये और बाले "ओह ! मि० शर्मा आप कैसे परिस आये, कब आये, आइये। घर आइय। आइये। आपका स्वागत है। उनके द्वारा उक्त महिला सचिव को अपना सही पता देकर मागदशन दिया गया मुझे उक्त महिला ने भूगम रेल यात्रा के नक्शे पर निर्दिष्ट स्थान पर पहुचन हेतु समझाया और ज्योही मै श्री पिग्नी के घर पहुचा तो पाया श्री व श्रीमती पिग्नी अपनी एक बच्ची के साथ मरे पहुचने की प्रतीक्षा मे थे। श्री पिग्नी इन दिना बेकार थे किन्तु उनको मिलने वाली राजकीय वेकारी भत्ते की राशि से ही सामान्य तौर पर अपनी जीविका वहन कर रहे थे। वे मेरे स्वागत के साथ अपनी बच्ची को उसके विद्यालय द्वारा आयोजित अय उपनगरीय स्थानो के भ्रमण काय हेतु विदा करने मे भी व्यस्त थे। वहा पहुचते ही छ वष पूव लिया गया मेरा चित्र उन्होन दिया जो स्मृति के लिये पर्याप्त था। अल्पाहार नते वक्त हम पुरानी स्मतियो मे खो गये बहुत ही आत्मीयता, सौहाद व सौजन्यता से उन्होंने मरे मिलन को सुखद आश्चय-सा अनुभव किया। उनके घर व बाहर बरामदे म भी काफी पौधो स हरियाली थी। लगभग सात वजे थे किन्तु सूय अभी भी आसमान में साफ था। मुझ इस यात्रा मे ठीक एक वष पूव पेरिस की एक महिला गाइड मेरी डिमोरी से चित्तौड विजय स्तम्भ के पास साक्षात्कार हुआ। आपस म सामान्य परिचय के बाद मैंने यो ही कभी पेरिस देखने की इच्छा व्यक्त की, तपाक से वे बाल उठी "लीजिए यह मेरा काड पेरिस देखिये ! घर आइय !!" सयोग वश वह पता मैं साथ ले गया था श्री पिग्नी के घर से दूरभाप पर ज्योही डायल घुमाया, और पूछा, "क्या मैं मेरी डिमोरी से बात कर सकता हू ?' उत्तर था "हा कहिय मैं स्वय हू आप कौन हैं ?' ज्या ही मैंने अपना नाम बताया उन्होंने याद किया व कहा, हा, आप विक्टरी टॉवर चित्तौड मे मिले थे आइय, आज मेरी बहन आ रही हैं हम एक अवसर पर सभी मित्रा की प्रतीक्षा कर रह हैं आप भी आइय।" यह कहकर उक्त महिला गाइड ने श्री पिग्नी को फ्रेंच भाषा म सभी कुछ समझाया। श्री पिग्नी मेरे साथ हुए। मैंने उनके परिवार से विदा ली और उन्होने मुझे भूमिगत रेलवे का टिकट दिलाया और गाडी म बिठाकर कुछ मागदशन कर चले गये। मुझ उस दिन तीन गाडिया बदलनी थी। पेरिस की भूमिगत रेलवे व्यवस्था स्वय म अनोखी है, साथ ही कठिन भी। वहा रलवे मेप पर विभिन्न रगो की गाडिया

चलती हैं। हम गाड़ियों के रंग से ही स्टेशन पर उतरने व चढ़ने का ख्याल रखना पड़ता है खैर! सौभाग्य से यहां पहुंचने में कोई कठिनाई नहीं हुई। मेरी डिनारी बहुत ही आकर्षक व्यक्तित्व वाली महिला होने के साथ ही व्यवहार में अत्यन्त ही शिष्ट सुरुचिपूर्ण थी। महिला गाइड के लगभग सभी गुणों से युक्त इस महिला को भारत में राजस्थान प्रदेश अत्यन्त ही प्रिय लगा। अपनी भारत यात्रा की स्मृतियों का उल्लेख करते हुए बताया, "मिस्टर शर्मा सच मानिये मुझे भारत यात्रा में राजस्थान अत्यन्त ही दर्शनीय राज्य नजर आया विशेष रूप से यहां के विभिन्न पर्व जो विशेष रूप से मौसम के अनुकूल होने के साथ-साथ विभिन्न पोशाकों में लिपटी आभूषणयुक्त नारियां जीवन की आभा को चमत्कृत कर देती हैं, बहुत इच्छा है मेरी राजस्थान में पुनः जाकर लगभग दो माह तक प्रत्येक स्थान को देखने के साथ-साथ वहां के विभिन्न पर्वों में भी भाग लेने की मैंने हार्दिक निमन्त्रण दिया। उत्तर था—"मुझे कुछ राशि एकत्र करने दें मैं अकस्मात समय व पैसा होते ही आ जाऊंगी।" राजस्थान के प्रति उनकी रुझान के जीवंत उदाहरण उनके यहां चित्रों की सजावट थी, उनके कक्ष में चारों ओर राजस्थानी महिलाओं के चित्र थे। खैर! मैंने अल्पाहार करने के बाद शीघ्र ही विदा लेने की स्वीकृति चाही। उनका आग्रह था कि उनके विशेष अवसर पर जो रात्रि दस बजे प्रारंभ होने वाली थी में मैं सम्मिलित रहूं और वे उसकी तैयारी में व्यस्त हो गई मैंने अपनी विवशता स्पष्ट की कि प्रातः ही हम पेरिस छोड़ देंगे रात्रि के नौ बजने पर भी वहां अपने यहां जैसी गोधूलिक समय की आभा थी। मैंने ग्रोशाट ला टूअर होटल में सूचना दी कि मैं आज खाना नहीं खाऊंगा। वे प्रतीक्षा न करें व श्रद्धेय ओझा से कहा कि मैं शीघ्र ही आ रहा हूं! मैं रात्रि दस बजे होटल में पहुंचा, रात्रि विश्राम कर प्रातः नाश्ता करने के बाद इस विश्व के सुन्दरतम शहर से विदा ली। आज भी इस शहर की स्मृतियां मस्तिष्क में उभर कर यदा कदा आनन्दित कर देती हैं।

०

मेरा आखिरी प्रेम-पत्र

*

भगवती लाल व्यास

प्रिये !

तुमको यह जानकर अत्यन्त दुख होगा कि यह मेरा आखिरी प्रेम पत्र है। पिछली बार भी जब डाक-दरे बढी थी तब मैंने ऐसा ही पत्र तुमको लिखा था मगर उसके उत्तर मे तुमने आत्म हत्या कर लेने की धमकी देते हुए जो पत्र लिखा उससे विवश होकर मुझे अपना इरादा बदलना पडा। एक कारण और भी था। उस समय हमारा प्रेम एक छोटे से पौधे के रूप मे ही था जिसमे मुश्किल से दो चार पत्ते निकले थे। अगर ऐसे समय मे मैं अपने सकल्प पर अडिग रहता तो यह तुम्हारे प्रति और स्वय के प्रति तो अन्याय होता ही, राष्ट्र के प्रति भी एक भारी अपराध होता। तुम तो जानती हो, हमारे राष्ट्रीय नेता पर्यावरण की सुरक्षा के लिए पेड-पौधे लगाने पर आजकल कितना बल दे रहे है। उन दिनो यद्यपि पर्यावरण शब्द का इतना प्रचलन नही हुआ था पर 'वन महोत्सव' की धूम तो थी ही। इन्हीं सब कारणो से मैंने उचित नही समझा कि हमारे प्रेम का बिरवा असमय मे झुलस जाए और यह ससार तुम जैसी आदर्श प्रेमिका से हाथ धो बैठे। इसीलिए मैंने डाक-तार विभाग के नापाक निणयो से लोहा लिया और अपनी आर्थिक स्थिति की परवाह न करते हुए तुम्हे पत्र लिखता रहा। मगर डियर, अब बात बर्दाश्त से बाहर हो चली है। यह डाक तार विभाग भी मुआ कितना बेरहम है कि इसकी निगाह लिफाफा पर गडी रहती है। देखो न, पोस्ट कार्ड और अन्तरर्देशीय के दाम कीमतो की बाढ मे टापू से अडिग खडे है मगर लिफाफा साठ का हो गया। पहले यह सुविधा थी कि एक रुपया खोकर तुम्हे दो बार प्रेम पत्र लिखने का सुख प्राप्त किया जा सकता था मगर अब चूकि रेजगारी की किल्लत है, एक रुपया देने मे बाकी पैसे मिलने

वाले नही ह। लिफाफे के साथ पोस्टकाड या अन्तर्देशीय खरीदना उसी तरह अनिवाय हो गया है जस किताब के साथ कुजी। रही पाच दस पसे की बात सो वह रुजगारी ग्दन' म डूब जाएगी। वस भी बडे आदमियो का पाच-दस पसे के छोटे सिक्के के लिए किसी सरकारी मुलाजिम म तकरार करना शाभा नही देता। जब पाच दस पैसे म ही 'बडप्पन मिल रहा हो ता भला कौन नही खरीदना चाहगा ?

प्राणेश्वरी !

यह ता सभी जानत ह कि पास्टकाड और अन्तर्देशीय पत्र प्रेम जगत म कोई महत्त्व नही रखते। दो प्रेमिया क बीच कितनी ही राज की बातें हुआ करती हैं जिन्हें पोस्टकाड या अन्तर्देशीय पत्र नही ढो सकता। यह लिफाफे का ही अन्तर्ब्रह्माण्डीय व्यक्तित्व है जो आखिरी सास तक राज की बात को राज रखता हुआ एक दिल से दूसरे दिल तक पहुचा देता ह। काश ! हमारे डाक-तार मत्री ने कभी प्रेम किया होता। कहत हैं प्रेम किया नही जाता, हो जाता है। मगर उन्हे ता हुआ भी नही। क्या उन्ह जन्म घुट्टी म कोई प्रेम प्रूफ रसायन पिलाया गया था ? खर जो भी हो हम तो मत्री महोदय का 'कोसण ही कर सकते हैं और वे हमारा शापण' करते रहग।

मुझे इस समय अग्रेजी की एक बहुत प्यारी कहावत याद आ रही है— नो न्यूज इज गुड न्यूज। आज पहली बार मैं अपन अग्रेजी ज्ञान पर थोडा सा गर्वित हू। हमारी मातभाषा म इस कहावत की टक्कर की कोई कहावत है ही नही जो प्रेमियो को हार्दिक और आर्थिक राहत पहुचा सके। क्यो न हम इस कहावत पर अमल करें ! मैं तो तय कर ही चुका हू किआज के बाद इस पर अमल करूगा और अगर तुम्ह मुझसे प्रेम है ता तुम्ह भी ऐसा ही करना चाहिए।

प्राण वल्लभे !

हा सकता है मेरी इन तमाम नसीहतो के बावजूद भी तुम मुझे बडी पुरानी धमकी द बठो। यानी आत्महत्या की धमकी। सुना है स्वेट माडन की किताब 'सफलता के गुर' की तरह 'आत्महत्या के उपाय' नामक कोई किताब छप गई है। अगर तुम सचमुच आत्महत्या का फैसला कर ही लो तो मुझे पत्र लिखने की बजाय वह पुस्तक खरीद लेना और उसमे से आत्महत्या का कोई बढिया सा उपाय चुन लना। तुम ता जानती हो मैं लम्बी चौडी घोषणाओ म विश्वास नही करता काय मे विश्वास करता हू। ईश्वर तुम्ह काय सिद्धि प्रदान करे।

तुम्ह मरी इस बात का बुरा नही मानना चाहिए। यह मैं इसलिए लिख रहा हू कि लाग आत्महत्या के मामले मे अनुभव शून्य होते हैं और जल्दबाज भी। इस लिए वे योजना बनाये बिना हडबडी मे ऐसी युक्ति चुन लेते हैं जिससे वे

का खतरा मोल नहीं ले सकेगा। मैं तुम्हें भी प्यार करता हूं आज अखबार में इस अंक में शामिल हूं। के लिए। भाषा और शब्द कि लिपियां अब हमारे लिए खिलौनों की एक वस्तु मात्र है। जिनका अभिप्राय मन का प्रतिनिधि है। पोस्टकार्ड की तरह अब मन 'खाली' नहीं रहा। बात में हम इतना प्रेम पत्रों का सारा पोस्टकार्ड पर जारी रखें।

मैं सच कहता हूं तुम्हें, 'यदि तुम मेरा ... भावना अपना प्रेम पत्र व्यवहार बरकरार जारी रख सकती हो तो बल्कि प्रेम जगत में एक नए युग का सूत्रपात भी हो सकता है। तुम्हारे हमारे ... किन्तु महान प्रेम का इतिहास बदले गये के नाम याद रखेगा और हमारा नाम, प्रेम जगत में हमेशा के लिए अमर हो जाएगा। इतना ही नहीं, हमारी-तुम्हारी तरह ... प्रेमियों को इससे राहत मिलेगी।

हां, इसके लिए हमें एक नई प्रतीकात्मक भाषा की दरकार होगी। तुम साहित्य की छात्रा रही हो इसलिए तुम्हें प्रतीक बनाने और बात-बनाने प्रतीकों का इस्तेमाल करने में कोई कठिनाई नहीं होगी। मैं भी बहुत जल्द 'पिकअप' करने की कोशिश करूंगा। मसलन तुम लिखना चाहती हो— कमरे में तुम्हारी (यानी मेरी) स्मृतियां देर रात तक मंडराती रहीं। फिर मैं (यानी तुम) इतनी रोयी कि तकिया आंसुओं में तर हो गया। तुम इसी बात को पोस्टकार्ड पर इस तरह लिख सकती हो—"एक इन्द्रधनुष खिड़की के रास्ते से कमरे में घुस आया और बड़ी देर तक दीवारों पर छिपकली की तरह रेंगता रहा। मैंने झाड़ू से बुहारना चाहा तो इन्द्रधनुष मेरी आंखों में उतर गया। परिणाम स्वरूप खूब बरसात हुई। बिस्तर भीग गया। देखें, अब धूप कब निकलती है? गीले बिस्तर पर कोई कब तक सो सकता है?"

तुम जब ये बातें पोस्टकार्ड पर लिख कर मुझे पढ़ाओगी तो सचमुच धूप निकल आएगी। अगर किसी ने पढ़ भी लिया हो छिपकली, झाड़ू, दीवार, बिस्तर, धूप जैसे शब्द देखकर समझेगा कि घर गृहस्थी की बातें हैं। इन्द्रधनुष तो कई लोगों ने देखा तक नहीं सो उसके बारे में वे क्या खाक सोचेंगे? क्या ठीक है न!

यह तो अर्थशास्त्र के एक विद्यार्थी की कल्पना है। तुम साहित्य की छात्रा होने के कारण इसी कल्पना को और बुलंदी पर पहुंचा सकती हो। रसोई के बरतनों और अन्य उपकरणों को भी प्रतीकों के रूप में काम में लिया जा सकता है। मसलन— कितनी रोटियां बेल चुकी हूं। एक से एक उम्दा। मगर कोई खाने वाला नहीं। कितनी उदास हूं मैं। सड़ासी की जगह चम्मच से तपेली उतारने लगती हूं। चूल्हे की मन्द मन्द आंच भली लगती है मगर हमेशा यह आंच मन्द ही रहेगी इसकी क्या गारन्टी है? दूध फट गया है। फटे दूध को सहेजने से क्या फायदा? न दही जमेगा न मक्खन निकलेगा। हार कर मैंने रसोई धो पोंछ दी है।

अब पोछा लगा रही हू। इस तरह अपनी व्यथा के सागर का पोस्टकाड की गागर मे उडेल कर बेधडक सप्ताह म एक की जगह दो तीन बार भी मुझ भेज सकती हो। गगाजल चाह शीशी मे हो या गगाजली म। रहता गगाजल ही ह। क्या हम इसी तज पर यह नही मान सकते कि प्रेम चाह पोस्टकाड द्वारा प्रपित किया जाए या लिफाफे द्वारा, रहता प्रेम ही ह।

आशा है मरी तमाम बातें तुम्ह 'कविंसिग' लगी होगी और तुम इस सुझाव पर अमल कर सकोगी। आग तुम्हारी इच्छा। वयस्क होने के नात जब राष्ट ने तुम्हें उसके भाग्य निर्माण का अधिकार दे रखा ह तो मैं कौन होता हू तुम्ह अपन भाग्य निर्माण के अधिकार से वचित करन वाला? मैं मानता हू, तुम सही निणय ले सकोगी। ईश्वर तुम्ह ऐसा करन म सहायता प्रदान करे, फिलहाल तो म यही शुभकामना कर सकता हू। भविष्य की भविष्य म दखी जाएगी। ओ के। टा टा।

तुम्हारा
एक पोस्टल पीडित प्रेमी

नरकवाडा

*

पुष्पलता कश्यप

प्यारे भैया

तुम्हारी यह अभागी बहन तुम्हे बहुत प्यारपूण स्मरण के साथ यह पत्र लिख रही है और विश्वासपूवक आशा रखती है कि तुम सुखी और स्वस्थ होग।

"मरे सुख और स्वास्थ्य की आकाक्षा तो बालू म से इत्र निकालने के तुल्य है। बालपन मे बापू ने विवाह कर दिया जब मैं विवाह का अथ भी नही जानती थी। गहस्थी का उत्तरदायित्व बहुत बडा होता है जिसे निर्वाह करने मे वयस्क दम्पति का भी कठिनाई होती है फिर हमारा तो यह गुडडे गुडियो का खेल था।

अल्पायु मे ही मेर लगातार प्रसव होन के परिणाम स्वरूप स्वास्थ्य इतना गिर चुका है कि विवाहित जीवन का आनन्द तो दर—किनार भरी जवानी म वृद्धावस्था के लक्षण दिखाई पडने लगे हैं। खडी होती हू ता आखा के आग तार नाचने लगत है, अधियारी छा जाती है, उठते बैठते घुटने तडक्ते है। शरीर दद का गोदाम बनकर रह गया है। इस बार भी सच पूछा जाय तो मरा एक नया जन्म हुआ है, मौत से साक्षात्कार करके लौटी हू। हर प्रसव के बाद नारी एक नया जन्म लेती है।

तुम्हारा नवजात भानजा चूहे जितना है। मास माना गले म अटकी है। बेचारा ठीक से रो भी नही पाता। केवल आखे-आखें ही दिखाइ पडती है। शरीर की एक एक हड्डी गिनी जा मक्ती है। माम भी उखडी उखडी चलती है। मरी ता आशका स जान निकलती रहती है। खर, जसी करनी, वैसी भरनी!

आज अपनी समवयस्क पढी लिखी लडकिया का दखती हू ता रश्क हाता है। उनक तौर-तरीके जीवन और स्वास्थ्य को लेकर अपन से तुलना करन बटती हू तो पाती हू—एक ओर उल्लास और सभावनाओ की मौजा पर किलोलें अठखेलिया

करता सु दर सलोना ससार है, तो दूसरी आर उदासी, टूटन और जीवन की विवशताओ की एक दुखभरी कहानी है।

सत्रह की उम्र तक पहुचते ही एक के बाद एक तीन मत बच्चा जिन्ह मास पिण्ड कहना ही उपयुक्त होगा की मा बनकर मेरा शरीर पूरी तरह घुल चुका है। जीवन मे घुन लग गया है। अब तो चिता की लकडियो म ही आराम मिलेगा - जिस उमर म आधुनिक शिक्षित, सभ्य, सस्कारशील और समझदार परिवारो की लडकिया सपनो के हिंडोले पर झूलती ह उन खाने खेलने के दिनो मे मैने नरकवाडा भुगता ह। कारण मैं एक अशिक्षित गरीब आर दकियानूसी कूपमडूप और पिछडे हुए परिवार स हू। अब जीवन मे रहा ही क्या है फूटे घडा सा रिस रहा ह। अब अत हो तो चन पाऊ।

खैर तुम्ह क्यो दुखी करू! मरी किस्मत खोटी थी। यह ज म तो गवा चुकी, अगला ज म क्या पता कैसा मिले!

तुम्हारी दुखियारी बहन,
बिम्मो

जाधपुर,
27 जुलाई, 83

स्नहिल बहन

तुम्हारा पत्र मिला। दिल बेहद उदास हो गया है। बहन मैं तुम्हारी और नवजात बच्चे की दीर्घायु कीकामना करता हू हालाकि बाल विवाहो के दुष्परिणामो को समक्ष रखते हुए यह दुराशा मात्र है। लेकिन फिर भी भाई जो हू तुम्हारा!

प्यारी बहन, जिस वक्त तुम्हारा विवाह हुआ घर मे बापू का प्रतिरोध करने वाला कोई नही था। उ हाने मेरा भी तुम्हार साथ ही विवाह रचा दिया होता, अगर मामाजी ने कडा विरोध न किया होता! तुम्हारे और कम्मो जीजी के बाद मैंने दूसरी छोटी बहनो का बाल विवाह नही होने दिया और उन दानो ने इस साल हायर सैकेण्डरी और नवी कक्षा की परीक्षा द दी है। मै उनका विवाह अठारह वप की आयु होने स पहले नही होने दूगा।

वैदिक काल मे हमारे देश मे बाल विवाह की प्रथा नही थी। महाभारत काल म भी सालह वर्षीया क या हा जिसे नग्निका कहा जाता था, विवाह योग्य बताया है। स्मृतिकारो मनु-वशिष्ठ आदि ने रजोदशन के उपरा त कन्या के विवाह का विधान बताया। ब्रह्मपुराण मे चार वप की क या के विवाह की बात आती है। लेकिन भारत मे इस्लाम के प्रवेश के बाद इस प्रथा के प्रचलन म विशेष बढोतरी हुई। वास्तव म इसके पीछे मुसलमाना द्वारा लडकिया की इज्जत खराब

बढ़ने का भय था।

कृषि प्रधान देश होने से पूर्व में यहाँ जनसंख्या वृद्धि की आवश्यकता को महसूस करते हुए भी बाल विवाह प्रचलन में आए।

वैदिक काल में नारी को जो सम्मान प्राप्त था आगे चलकर समाप्त हो गया। अब यह धारणा बन गई थी कि स्त्री स्वतंत्र होने योग्य नहीं है। बालपन में उसे पिता या भाई के अधीन, जवानी में पति और वृद्धावस्था में बेटे के अधीन होना चाहिए। इसी धारणा के रहते बाल विवाह का आरम्भ हुआ।

वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था कर्मानुसार थी। आगे जाकर यह जन्मानुसार हो गई तथा जातीय बंधन कठोर होने लगे। उस दशा में बालकों के विवाह कर देने पर विशेष जोर दिया जाने लगा ताकि जाति बंधन न टूटे।

जाति बंधन की कठोरता से 'रोटी और बेटी' का नाता जाति के अन्तर्गत हो रह गया। जीवन साथी के चयन का क्षेत्र अत्यन्त सीमित हो जाने से लड़की का संबंध शीघ्र करके चिंता से मुक्त होने की बात सोची जाने लगी थी।

संयुक्त परिवार और पैतृक धंधों की प्रणाली में रहने पारिवारिक उत्पादन के कार्यों का संपादन आसानी से हो इसके लिए शीघ्र विवाह को मान्यता एवं स्वीकृति मिली।

सती प्रथा के कारण परिवार के मुखिया की मृत्यु पर पत्नी साथ में सती हो जाती थी। बच्चों की देखभाल की समस्या के समाधान के लिए बाल विवाह की प्रथा का जन्म हुआ।

कुलीन विवाह प्रथा से उच्चवर्ग में लड़कों तथा निम्नवर्ग में लड़कियों का अभाव होने लगा। फलतः बाल विवाह को विशेष प्रोत्साहन मिला।

वधू मूल्य (दहेज प्रथा) के बढ़ने के साथ कन्यापक्ष को अच्छे रिश्ते मिलने में कठिनाई होने लगी। इससे छोटी उम्र के रिश्ते किए जाने लगे। कर्मकांडी धार्मिक मनोवृत्ति के कारण गौरीदान, यानी रजोदर्शन से पूर्व बालिका का विवाह, एक पुनीत कार्य समझा जाने लगा। यह भी मान्यता बनी कि गौरीदान करने वाले माता पिता को स्वर्ग की प्राप्ति होती है। विदेशी आक्रामक जातियों के भारत में आगमन से सुरक्षा की दृष्टि से भी बाल विवाह को बल मिला।

पत्र काफी लम्बा हो चला है अब समाप्त करता हूं।

तुम्हारा भाई
घनश्याम

कटालिया (पाली)
13 अगस्त, 83

प्रिय भैया

तुम्हारा बहुप्रतीक्षित पत्र मिला था। पत्रोत्तर विलम्ब से देने का कारण यह है कि गृहस्थी और छोटे बीमार बच्चे के चक्करो से फुसत मिले तब तो लिखने बैठू। कई बार लिखने बैठी, लेकिन बीच मे ही छोड देना पडा। फिर तो नए सिरे से ही लिखना पडा। इधर, लडके को निमोनिया हो गया है। पहले दस्तें लगती थी फिर खासी हो गई और अब निमोनिया। दवाई चल रही है। मेरी दशा भी गिरी गिरी रहती है। सिर दर्द रहता है भूख नही लगती, हाथा-पैरो और चेहरे पर सूजन आ जाती है। इसी तरह की हजारो परेशानिया रात दिन लगी रहती हैं।

भैया, तुमने अपने पत्र मे बाल विवाह के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का अच्छा विवेचन किया है। सच यह हमारे समाज की ऐसी विकृति रही है जिसके जहर ने सम्पूर्ण भारतीय समाज को जर्जर और पतनोन्मुख कर दिया।

भैया, यह तुम्हारा और मामाजी का साहस ही था जिसने दूसरी बहना का जीवन मेरी भाति नारकीय होने से बचा लिया। आज के पढे लिखे विचारशील युवको को इसी तरह के साहस के साथ सामने आकर कुरीतियो, रूढियो और कुप्रथाओ का डटकर विरोध करना चाहिए। किसी तरह का समझौता या उनके आगे समपण नही करना चाहिए। भैया! तुम्हारे ही कारण, तुम्हारी प्रेरणा से आज मैं अपने विचारो को अभिव्यक्त करने लायक हो सकी हू। तुम्हारे पत्र के मिलते रहने से जीवन को बडा सहारा मिलता है।

तुम्हारी बहन,
बिम्मो

जोधपुर
15 सितम्बर 83

प्रिय बहन,

अध्ययन मे व्यस्त हो जाने की वजह से तुरत ही तुम्हारे पत्र का उत्तर नही दे पाया, अन्यथा मत समझना, मैं हमेशा तुम्हे पत्र लिखना चाहता हू। दूर बैठो का यही एक सहारा होता है। बहन विश्वास रखना मैं तुमसे कभी दूर नही हू। बापू की गलती और ज्यादा ठीक तो यह होगा यदि कहू कि इस रूढिवादी समाज की गलती को तुम्हे भुगतना पड रहा है। खर अब जो हुआ उसका क्या उपाय है।

देश की भावी पीढी को इस विनाश से बचाया जा सके इसके उपाय अवश्य करने हैं। अन्तजातीय विवाहो को बढावा देकर भी यह किया जा सकता है। इसस

लडकियो के लिए वर के चयन का क्षेत्र बहुत बढ जायगा और दहेज-दानव का आतक भी कम होगा।

बालको म शिक्षा के चलन म अय कुरीतियो और कुप्रथाओ की तरह इस प्रथा का अत भी होगा।

बाल-विवाह के विरोध मे सशक्त जनमत तैयार करके ही इस कुप्रथा से कारगर ढग से निपटा जा सकता है। जन समथन के अभाव म कानून निष्फल और अप्रभावी हो जाते हैं। शिक्षण एव सावजनिक सस्थाओ को इसके विरोध म व्यापक स्तर पर प्रचार अभियान चलाने चाहिए। जहा बाल विवाह होने की सूचना मिले वहा समय रहते पहुचकर उसे रोकने की कायवाही करनी चाहिए। दोषी व्यक्तियो को कानून के सुपुद किया जाए ताकि उन्ह उचित सजा दिलाई जा सके। तद विषयक साहित्य के प्रकाशन, प्रदशनियो के आयोजन तथा फिल्मो के निर्माण से जनमत तयार करने का काय सहज बनाया जा सकता है। इस विषयक वतमान कानून को भी समयानुकूल और कठोर बनाने की आवश्यकता है जन प्रतिनिधियों और सावजनिक लाभ के पदो पर काम करने वाले कमचारियो और अधिकारियो को सामाजिक कुप्रथाओ के प्रति विशेष जिम्मदारी और सतकता बरतने की जरूरत है। आचार सहिता का उल्लघन करने और उदासीनता बरतने वालो के विरुद्ध सख्त कायवाही किये जाने का प्रावधान हो।

मेरे कॉलेज जाने का वक्त हो रहा है अत पत्र बद करता हू। दशहरे की छुट्टियो मे मैं तुमसे मिलने आऊगा।

तुम्हारा भाई
घनश्याम

कटालिया (पाली)
7 अक्टूबर '83

प्रिय भैया,

मेरे जीवन का तुम्हे यह शायद आखिरी पत्र हो। मेरे आश मंड गई है। पिछले प्रसव के वक्त भी बडी मुश्किल से ही जान बची थी। डॉक्टर ने खून की कमी बताई थी और स्पष्ट कहा था कि अब और बच्चा नही होना चाहिए। वरना तुम्हारे जीवन को बहुत खतरा है।

मेरे पूरे शरीर पर सूजन आ गई है हाथ-पैरो म झन झन होती रहती है, सिर दद से फटा पडता है कानो मे भाय भाय होती है शरीर पीला पडता जा रहा है चलने फिरने की शक्ति नही है। मै पूरी तरह निचुड चुकी हू। छोटे बच्चे म जान अटकी है बस। मेरे बाद इसका क्या होगा कैसे पलेगा, यही सोचती हू। खैर,

जैसी हरि इच्छा होगी, होगा। मुझे तो जीवन से कोई मोह नहीं इस नरक से छूटगी। लेकिन बच्चे को लेकर चिन्ता है।

जीवन में कोई सुख नहीं देखा। होश सम्भालते ही गृहस्थ धान में लगी हूं। पहले मां के जाये थे, फिर सास के बच्चों का किया, अब खुद के हैं। या फिर बीमारियां झेली हैं। पति से सिर्फ शरीर का नाता है। मन तक पैठ पाने का न तो मानस बना, न अवकाश मिला, और न तन ने ही साथ दिया। दोनों एक बिस्तर पर सोकर भी अलग अलग धरातल पर जीते रहे हैं। अब इस अभिशप्त जीवन का अंत होने को है। घर में एक बाल विधवा जेठानी है, उसका जीवन देखती हूं तो रूह कांपती है। मैं सधवा रहूं, पति के कंधों पर चढ़ कर चिता तक पहुंचूंगी—मेरा यही सौभाग्य है। एक मात्र यही मेरा सौभाग्य होगा। बैठकर लिखा नहीं जाता। जिंदा रही तो फिर लिखूंगी अन्यथा बस ! अलविदा !

तुम्हारी अभागी बहन
बिम्मो

बटालिया (पाली)
5 जनवरी, 84

प्रिय भैया,

यह चिट्ठी बिम्मो के ससुराल से लिख रही हूं। कैसे लिखूं भैया अब वह इस संसार में नहीं रही। डिलीवरी केस में वक्त से पहले ही उसके ब्लीडिंग शुरू हो गयी थी शरीर में ताने आने लग थे। खून की बेहद कमी थी। बच्चा पेट में मर गया था। वह ऑपरेशन टेबल पर ही मर गई। डॉक्टरों की जी तोड़ कोशिश के बाद भी वह बची नहीं मर गई। वह कि समाज की एक गलत प्रथा की भेंट चढ़ गई। इस बलिवेदी पर अपने को उत्सर्ग कर दिया उसने। वैसे भी वह तिल तिल कर मर रही थी, मर कर छूट गई। उसके छोटे-से निरीह बच्चे पर बड़ी दया आयी है कलेजा मुंह को आता है, हूक उठती है, रूलाई रुकती नहीं।

मैं और बाई ! मां। यहां बहुत पहले पहुंच गये थे। तुम्हें इसलिए नहीं लिखा कि तुम्हारी पढ़ाई का नुकसान होता।

पहली बस से ही चले आना, पिताजी ने तुम्हें बुलाया है। मरने वाली के आखिरी दर्शन कर लेना, तुम्हें बहुत याद करती थी।

तुम्हारी बहन
रज्जो

जोधपुर
6 जनवरी '84

प्रिय रजना बहन,

मैं नही आ सकूगा। कैसे देखू उसे, जिसे पिताजी ने दस साल पहले ही जीते जी मार डाला था।

सारी स्थितिया से मेरा 'टोटल विरोध' रहा है। मगरमच्छी आसुओ के साथ मैं अपने आसू नही मिला सकूगा। नारी विरोधी इन स्वार्थी पशुओ के साथ अपने आपको किसी तरह भी शामिल नही कर पाऊगा मैं। क्षमा करना!

हतभागा
तुम्हारा भाई,
घनश्याम।

●

भगवान परशुराम

*

चन्द्रदान चारण

वृषम स्कन्ध, विशाल वक्षस्थल और भुजाए, धनुष और परशु हाथ मे लिए काल के समान भयकर, रोषपूर्ण मुद्रा कैलाश की भाति दुद्धष, मुनि वेष म रौद्र मूर्ति, प्रचण्ड सूय के सदश तेजस्वी, जटा मडल मडित, यज्ञोपवीत और वल्कल धारण किये—ये हैं भागव परशुराम, भगवान के चौबीस लीला अवतारा मे से एक। समस्त भारतीय साहित्य मे केवल परशुराम ही ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी स्थिति वैदिक काल से आरम्भ होकर महाभारत काल तक स्वीकार की गयी है। जन्म से वे शास्त्र जीवी थ। कत्तव्य ने उन्ह शस्त्र-सधान के लिए प्रेरित किया। क्षत्रिय शासक अभिमान म चूर था। उसने अपने कत्तव्य को विस्मृत कर दिया। स्वेच्छाचारिता बढ गयी। अनुदारता ने उसे सकीण बना दिया। चारित्र्य का अभाव उसे पतन की ओर ले चला। राजनीति विकृत हो गयी। ब्राह्मण ने अब तक शाप का ही सहारा लिया था। केवल शाप से काम न लेकर उसने अब शर का भी सधान किया। ब्राह्मण के हाथो म परशु चमक उठा। हिमालय स नमदा तक के अत्याचारी क्षत्रियो को उसने अपने पैरो तले रौंद डाला। पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रिय विहीन कर दिया। परशुराम का व्यक्तित्व उस युग मे एक प्रचण्ड ज्वालामुखी की भाति है।

परशुराम के पिता जमदग्नि का नाम ऋग्वेद मे कई स्थानो पर आया ह। सप्तम अष्टक के चतुथ अध्याय के सूक्त 12 के मत्र 2 मे सोम के पास जाने वाले सात मधावी मुनियो म जमदग्नि भी एक है। तृतीय अष्टक के ततीय अध्याय क सूक्त 53 के मन्त्र 16 मे जमदग्नि आदि मुनियो को दीघ आयु वाला कहा गया

है। सप्तम अष्टक के प्रथम अध्याय का 62 वा सूक्त भृगुगोत्रीय जमदग्नि ऋषि के नाम से है। इसके म त्र 24 मे कहा गया है 'सोम ! मैं जमदग्नि तुम्हारी स्तुति करता हू। तुम हम गोयुक्त और सवत्र प्रशसित अन्न दो।" (हिन्दी ऋग्वद)

परशुराम की माता रेणुका इक्ष्वाकु वश की राज कन्या थी। महाभारत के वनपव अध्याय 116 के श्लोक 4 म उसके पाच पुत्र होन का उल्लेख है—

"तस्या कुमाराश्चत्वारो जज्ञिरे राम पञ्चमा" पर महाभारत के आदि पव अध्याय 66 के श्लोक 48 म कहा गया है कि जमदग्नि के चार पुत्र थे जिनम परशुराम सबसे छोटे थे, किन्तु उनके गुण छोटे नहीं थे—

जमदग्नेस्तु चत्वार आसन पुत्रा महात्मन
रामस्तपा जघन्या भूदजघन्य गुर्णैयुत

परशुराम चाहे चार भाई हो चाहे पाच पर यह निश्चित है कि इनम सबसे छोटे परशुराम थे। परशुराम का जन्म वैशाख शुक्ला ततीया (अक्षय ततीया) का माना जाता है। गोरखपुर जिले के मझौली राज्य से पश्चिम की ओर सलेमपुर स्टेशन के पास सोहनाग नामक स्थान है। वहा एक तालाब के निकट एक मन्दिर मे परशुराम की मूर्ति है। कहा जाता है कि इसी स्थान पर परशुराम का आश्रम था। वैशाख शुक्ला ततीया (अक्षय ततीया) को यहा एक बडा मेला लगता है जो कइ दिन तक रहता है। वाल्मीकि रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थो म महेन्द्र पवत पर परशुराम का आश्रम होना लिखा है। महाभारत के वनपव के 117वें अध्याय म महेन्द्र पवत पर परशुराम के साथ पाण्डवो के निवास का उल्लेख है।

वदिक साहित्य म परशुराम का चित्रण बहुत ही उदात्त रूप मे हुआ है। श्री के०एम० मुशी न अपने उपन्यास भगवानपरशुराम म उनके इसी भव्य रूप को अकित किया है। बाल्मीकि रामायण मे सव प्रथम बाल काण्ड मे परशुराम के दशन होत है। राम के द्वारा शिवधनुष भग पर अप्रसन्न होकर वे राम को द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारते हैं—

"द्वन्द्व युद्ध प्रदास्यामि वीर्यश्लाघ्यमह तव।। (1/75/4)दशरथ इस स्थिति से घबरा कर परशुराम से कुछ निवेदन करते हैं पर वे दशरथ का तिरस्कार कर देते हैं—

'अनादत्य तु तद्वाक्य राममेवाभ्य भाषत।" (1/75/10) महाभारत के वन पव के अन्तगत रामोपाख्यान पर्व म राम परशुराम के इस मिलन का उल्लेख नही है। आनन्द रामायण रघुवश आदि ग्रन्थो म इस घटना का वणन अवश्य है।

'आनन्द रामायण' के सारकाड मे लिखा है कि दृप्त क्षत्रियो का मदन करने वाले परशुराम के रक्त लोचन देखकर राजा दशरथ पूजा करना भूल गया और भय से व्याकुल होकर त्राहि त्राहि पुकारने लगा——

त दृष्ट्वा भयसत्रस्तो राजा दशरथस्तदा।
अर्घ्यादिपूजा विस्मृत्य त्राहि त्राहिति चाब्रवीत ॥348॥

महाभारत म परशुराम का वणन अनेक स्थलो पर हुआ है। आदि पव मे उनके जन्म का उल्लेख है वनपव मे उनके जीवन की आरम्भिक घटनाए दी गयी हैं। वनपव के अध्याय 116 मे व पिता की आज्ञा स माता का वध करत हैं और युद्ध मे अप्रतिद्वद्वता और दीर्घायु का वरदान प्राप्त करते है——

'अप्रतिद्वद्वता युद्धे दीघमायुश्च भारत 18। इसी अध्याय म परशुराम द्वारा युद्ध के मद से उन्मत्त कातवीय अजु न के वध की कथा है। उद्योगपव के अन्तगत अम्बोपाख्यान पव के 3 4 अध्यायो मे परशुराम और भीष्म के भयकर युद्ध का ओजपूण वणन है। शान्ति पव मे परशुराम चरित का पुन उल्लेख है। इसम कण को शाप देने की घटना के अतिरिक्त अध्याय 49 मे क्षत्रियो के साथ सघष का वणन है। परशुराम और हैहया के युद्ध के सम्बन्ध में डॉ० रागय राघव का कहना है "यह क्षत्रिय तथा ब्राह्मणो की शक्ति के लिए सशस्त्र लडाइया थी जो गोधन से प्रारम्भ हुई थी। गौ उस समय धन थी।" (प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास, पृ० 166)

परशुराम एक महान योद्धा थे। भीष्म के साथ युद्ध के समय गगा न परशुराम को शिव के समान महापराक्रमी कहा है। भीष्म और कण जैसे वीर-पुगव महारथी उनके शिष्य थे। बाल्मीकि रामायण के अनुसार उन्होने पृथ्वी जीत कर कश्यप को दे दी थी। महाभारत के शान्तिपव अध्याय 49 म लिखा है कि परशुराम ने इक्कीस बार पथ्वी को क्षत्रियो से हीन करके अश्वमध यज्ञ किया और दक्षिणा के रूप मे यह सारी पृथ्वी उन्होने कश्यप को दे दी——

"त्रि सप्तकृत्व पृथिवी कृत्वा नि क्षत्रिया प्रभु ॥63॥
दक्षिणामश्वमेधान्त कश्यपा यादात् तत

सभापव मे राजसूय करने वाले राजाओ की सूची म परशुराम की गणना राजाओ म की गयी है। वास्तव मे उन्होंने हैहयो के सघ राज्य का विनाश करके एक नि क्षत्र प्रजासत्ताक राज्य की स्थापना की थी जिसके वे सूत्रधार थे।

इतना महान् व्यक्तित्व होते हुए भी समस्त सस्कृत साहित्य मे उनके चरित्र को लेकर एक भी स्वतन्त्र कृति का न होना आश्चयजनक है। डॉ० भगवतशरण

उपाध्याय की मान्यता है कि ब्राह्मण क्षत्रिय के सघष का ही यह परिणाम था कि परशुराम के असाधारण युद्ध दुमद होते हुए भी 'परशु रामायण अथवा परशु महाभारत नही लिखे गय। (भारतीय समाज का एतिहासिक विश्लेषण—पृ०28) पर यह निश्चित है कि ब्राह्मण के तेज के समक्ष क्षत्रिय पराजित हो गया। क्षत्रिय की गति केवल शस्त्र तक ही सीमित थी ब्राह्मण शर और शाप दोनो का अधिकृत कर चुका था। स्वय क्षत्रिय (विश्वामित्र) ने महाभारत के आदि पव के अध्याय 174 म अपने बल का धिक्कारते हुए ब्राह्मण के तेज की महत्ता स्वीकार की है—

"धिग बल क्षत्रिय बल ब्राह्मतेजो बल बलम ॥45॥

परशुराम स्वभाव स शान्त प्रकृति के थे। व क्षत्रिय मात्र के विरोधी न थे। क्षत्रिय होते हुए भी भीष्म को उ होने अपना शिष्य बनाया और शस्त्र सचालन की शिक्षा दी। महाभारत के उद्योगपव के अम्बोपाख्यान म भीष्म ने कहा है—

शिष्योऽस्मि तव भागव ॥39॥

साथ ही परशुराम न अम्बा को बताया कि वे ब्राह्मणो की आज्ञा के बिना हथियार नही उठाते। परशुराम ऋषि थे। दुष्ट प्रकृति कुछ शासको को सही माग पर लाने के लिए ही व क्षत्रिय सहारक बने थे। दुमद क्षत्रिय शासक का अत्याचार जब सीमा का अतिक्रमण कर गया तब विरक्त तपस्वी के लिए भी यह आवश्यक हो गया कि वह राजनीति म भाग ले और उसका सुधार करे। शासक म उदारता और चरित्र बल होना आवश्यक है।

यदि वह इन गुणो से हीन हो जाता है तो वहा का शासन अव्यवस्थित और जीवन अशान्त हो जाता है। उस समय यह आवश्यक हो जाता है कि एसे शासक को स्थान च्युत कर किसी योग्य व्यक्ति को सत्ता सौंपी जाय। जिस प्रकार कृष्ण ने अपने युग की राजनीति को प्रभावित किया। उसी प्रकार परशुराम ने भी वदिक काल की समाप्ति और ब्राह्मण-काल के आरम्भ के युग पर गहरा प्रभाव डाला है। ईसा से चार-पाच सौ वष पूव परशुराम ने भी भारतीयो के जीवन और साहित्य म कृष्ण के समान ही गौरव प्राप्त कर लिया था। डॉक्टर सुखतनकर ने कहा कि ऋषियो मे यदि कोई ईश्वर का अवतार स्वीकृत हुआ है तो वह केवल भगवान परशुराम थे।

शस्त्र के बिना केवल ब्राह्मणत्व निरीहता का प्रतीक बन तिरस्कृत होने लगता है। विवेक क अभाव मे क्षत्रियत्व की शूरता क्रूरता म बदल जाती है अत समाज के कल्याण के लिए इन दोनो का समन्वय आवश्यक है। परशुराम के चरित्र म हम इसी सामजस्य के दशन होते हैं। आज शक्ति क साधन कुपात्र शासको के हाथ मे

आ गये हैं। अणु और उद्जन् शस्त्रो के दुष्प्रयागो से वायुमण्डल विपाक्त हो उठा है। नभ म भयकर विस्फोट क लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे है। मानवता का भविष्य सन्देहास्पद बन गया है। एसे समय म आज पुन परशुराम जैसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो इन युद्ध दुमद शक्तियो का उत्तर उन्ही के शास्त्रा से दकर उन्हे शान्त कर सके।

शिक्षा सन्त स्वामी केशवानन्द-अव्यक्त व्यक्तित्व

*

अ० ना० कौशिक

'इदन्न मम' ममत्व बुद्धि का त्याग, समुच्चयात्मक अमोघ शक्ति की साक्षी गीता वाहिनी लिंग, जाति, वर्ग एवं वर्ण भेद से परे समष्टि गीता की कर्मनिष्ठा में सराबोर दुबली पतली देहयष्टि वाला वह सन्त तुला से तुलसी तक को कन्न निहारने की शक्ति रखता था। जगत में जगदीश्वर, मानव में महादेव, कण-कण में कर्म, गति में गंगा एवं ज्ञान में ब्रह्मा के साथ उठता-बैठता था—उसने सामने वाले से एक ही बात कही—'यथेच्छसि तथा कुरु' जो तेरी इच्छा हो वैसा ही कर।

समस्त ऊर्जाएं अपरिवर्तनीय होकर भी परिवर्तनीय हैं—विज्ञान अनुमान से अनुसंधान के जंगल को ढूंढता है—उसका कार्य कहां से आरम्भ होकर कहां समाप्त होगा ठीक इसी तरह केशवानन्द ने शिक्षा का सूत्र पकड़ा और उससे न जाने क्या-क्या बुनता चला गया, लोगों को उधेड़-बुन से बचाता स्वयं ताने-बाने बुनता रहा। उसका प्रयत्न था व्यक्ति का रुख उसके मन की ओर ही मुड़े। प्रकृति उसकी प्रयोगशाला रही शब्द जाल से परे विश्वास मूलक आचरण उसके परिणाम थे।

वह कहता था शिक्षा संस्कार ही व्यक्ति का परिमार्जन कर सकता है डिग्रियां नहीं। उसने कभी अपने तप को भुनाया नहीं, कष्ट में दुहाई नहीं दी और मांग कर भी मांगा नहीं।

' एक बार भू मां ने कहा—बेटा, कोई संध्या वन्दन उपासना नहीं—इस जीवन का क्या होगा और मां की बात मानकर भारत की राजधानी में मां

को साक्षात् दण्डवत क्या किया, अस्तित्व को ही समर्पित कर दिया। 'देखा तुमने, प्रगति के लिए झुकी देह का विसजन।'

"गेंद ही तो थी जिसके लिए कृष्ण को नाचना पडा था और वह भी कालिया नाग के फनो पर। कितना नचाया था उस गेंद ने पारथ के सारथी को।"

"महावीर के पग पर काटा विषपति ने और प्रवाहित हुआ रक्त के स्थान पर दुग्ध। गुरु नानक ने रोटी को उठाया और सत्कम का अविरल प्रवाह प्रकट हो गया। सुना, तुमने आम्रपालि बुद्ध की धरोहर, उनका आम नहीं लौटा सकी कितना सजोकर रखा था उसने।"

"*जानते हो कितना भाग्यशाली होगा वह सलीब' जिसे ईसा अपने लिए* ढोकर ले गये थे और यही कही बटोरी थी भरत न राम के चरणो की रजकण।"

ओ मेरे अनुत्तरित विश्वास, 'यही है वह भूमि अलसुबह हो या शाम, दोपहर का मजर हो या रात अक्षर ब्रह्म का ढोने वाले इस श्रमिक की देह से पसीना नही किताब गिरती थी, इसकी पीठ पर पुस्तकालय बैठा किलकारी मारता था। *जीवन भर जिसके पीछे विद्यालय चले यह आज सौ वष की बात हो गई।* विद्यार्थियो, महर्षि शिक्षा सत स्वामी केशवानन्द अब नाम नही पर्याय है—शिक्षा का।"

जिसने अपनी सम्पूण चेतना अस्मिता इस बात के लिए दाव पर लगा रखी थी कि अज्ञान जितना शीघ्र समाप्त हो उतना ही श्रेष्ठ है। कितनी विवशता है हमारे सस्कारो की। *नब्बे वष का यह अध्यापक विद्यार्थी*, सलेट बर्ता—टूटा-फटा विद्यालय, तुम्हारे अनुत्तरित विश्वास को लौटा रहा है। जाने से पहले?

विद्यालयो से लेकर विश्वविद्यालयो तक के खाली रहते कला कक्षो, एक पल्ले के दरवाजो, फटी फटी किताबो, टूटे फर्नीचरो से बचकर बाहर निकलने के *लिए रास्ता टटोलते घुटनो के सहारे सरकते बूढे फकीर का जाना*—हमारी नालन्दाओ और तक्षशिलाओ से घुटती पीडा।

मेरी यह दशा विद्यार्थियो ने की है, अध्यापको के स्पश सवेदनहीन हो गए है। "नही, नही मैं ही इस योग्य नही हू शिला हू न"

कम से कम तुम तो मत जाओ—'बाबा!'

यह बाबा कौन है जानना चाहते हो तो सुनो—

श्रम और शिक्षा का अवतार जिसने बचपन मे पेट से कह दिया था—'खेजडी के छोडे और गुवार की फीकी उबली फली खायी हैं तो चलो हमारे साथ।' पेट ने कितना सहज उत्तर दिया 'जो दोगे खा लूगा।' शरीर ने कपडा मागा बारह वष के पश्चात एक कोपीन दे दिया। पैरो ने जूते मागे—और उत्तर

एक उपनिषद् बन गया, क्या फालतू बात करता है। है कोई सृष्टि म एसा पशु पक्षी जो जूते पहनकर चलता है—देखी है— हस गति, मयूर का नत्य हरिन का कुलाचे भरना और वन म सिंह का एकछत्र साम्राज्य ? उसके सिर ने कभी तेल नही चाहा बालो न कघी की बात नही की अगुली और अगूठी का रिश्ता उसके यहा नही था।'

वह अपन आप म शिक्षा का ऐसा नक्षत्र था जिसक उदय और अस्त का आभास तक नही है। शिक्षा उसकी अधिष्ठात्री मा थी। वह इतिहास पुरुष नही भूपुत्र था जो शरीर के भूगोल को श्रम की सौंधी महक बाटता था। और कहता था—इदन्न मम।

●

स्वतन्त्रता सेनानी स्वर्गीय पडित मैलाराम 'वफा'

*

सगीर 'शाद'

यहा का दस्तूर भी अजीब है। यहा सच इतना ही बोला जाता है जिससे स्वार्थ सिद्ध हो और सच्चाई उस समय बोली जाती है जब उसके बिना काम ही न चले कभी-कभी अपनी पसन्द के माग दशकों को उच्च श्रेणी का सिद्ध करने के लिए देवता स्वरूप व्यक्तियों को गुमनामी के पर्दे म रखा जाता है ताकि साधारण विचारधारा के लोग उन्ह पहचान ही न सके और अधिकतर उज्ज्वल और असाधारण कार्यों का सहारा वास्तविक व्यक्ति के सिर से उतारकर व्यक्ति विशेष के सर बाध दिया जाता है कही यह धार्मिक भेदभाव की बिना पर और कही पार्टी दष्टिकोण के कारण।

1947 म जब भारत आजाद हुआ भारतीय महाद्वीप की आबादी चालीस करोड के लगभग थी जिसमे भिन्न भिन्न सम्प्रदायो धर्मो और क्षेत्रो के लोग शामिल थे भारत की स्वतन्त्रता के लिए प्राण न्योछावर करने और बलिदान देने वालो म सभी श्रेणियो के लोग राजनेता, समाजसेवी और साहित्यकार शामिल थे। इन्ही देश प्रेमियो म स्वर्गीय पडित मलाराम 'वफा' का नाम भी उल्लेखनीय है जिनका सम्पूर्ण जीवन देश के लिए समर्पित था और जीवन के अन्तिम क्षणो तक सघषरत रहे।

स्वर्गीय पडित मैलाराम 'वफा' इस नश्वर ससार को 29 सितम्बर 1980 को हमेशा-हमेशा के लिए छोड गए। साहित्य के क्षेत्र म उनकी मत्यु से जो रिक्तता आई है उसका पुनभरण कभी नही हो सकेगा।

'वफा एक पक्के देश भक्त, एक निडर साहित्यकार और उर्दू के गुरु शायर थे। देश विभाजन से पूव वह अग्रेजी सरकार के विरुद्ध अपनी क्रातिकारी नजमो,

धमाकेदार आर्टिकलो के जरिय सघपरत रह ।

स्वर्गीय पडित मैलाराम 'वफा' न अपना साहित्यिक जीवन दनिक समाचार पत्र देश लाहौर स आरम्भ किया और 1919 तक इस समाचार पत्र से जुडे रह। 1922 म शेरे पजाब लाला लाजपतराय के समाचार पत्र 'वन्दे मातरम्' के सम्पादक नियुक्त किए गए 1925 म अपन समय के प्रथम पक्ति के लीडर महामहिम मदनमोहन मालवीय के सरक्षण म एक नया समाचार पत्र भीष्म' लाहौर से आरम्भ हुआ तो वफा को इसका सम्पादक बनाया गया आगे चलकर यही समाचार पत्र 1929 म दैनिक पत्र 'वीर भारत' के नाम से बदला गया तो 'वीर भारत का सम्पादक 'वफा को ही मुकर्रर किया गया।

उस समय स्वतन्त्रता प्राप्ति का सघष पूण यौवन पर था, क्रातिकारियो ने लाला लाजपतराय के रक्त का बदला लेने के लिए एक अग्रेज को कत्ल कर दिया था इस कत्ल के अभियोग म शहीदे आजम भगतसिंह और उनके युवा साथियो पर मुकदमा चलाया गया । इन्ही दिनो अमर शहीद जितन्द्रनाथ दास भूख हडताल करके इसी हालत म शहीद हो गये इसी प्रकार की अन्य समस्याओ के परिणाम स्वरूप स्वतन्त्रता का आदोलन जोर पकडता गया ।

स्व० पडित मलाराम वफा' 1929 से लेकर 1947 तक अर्थात निरतर 18 वष तक दैनिक समाचार वीर भारत लाहौर के सम्पादक रह।

देश प्रेम वफा' के दिल म कूट-कूट कर भरा हुआ था देश को अग्रेजा की गुलामी से मुक्त कराने के लिए उदू शायरी को निडर होकर प्रयोग करने मे कोई उल्लेखनीय शायर भी उनका मुकाबला नही कर सका ।

तू हम मजबूर ही कर दे तो यह है और बात ।
वरना दुशमन को भी पहुचाते नही आजार हम ॥
खून दन मे ताम्मुल आज अगर हमको नही ।
खून लेने को भी हो जाएगे कल तैयार हम ॥
तशद्दुद पर उतर आएगं अहले हिंद मजबूरन ।
तशद्दुद का जवाब आखिर तशद्दुद बेगुमा होगा ॥
हिमाकत है सरासर जुम ठहराना बगावत को ।
के बागी आज का है जा वो कल का हुक्मरा होगा ॥

महात्मा गाधी ने ता हिन्दोस्ता छोडो का नारा 1942 म लगाया मगर पडित मलाराम वफा जैसे दृष्टा और समय के कुशल पारखी ने 1938 मे एक गीत हिन्दोस्ता हमारा के शीषक से लिखकर स्वर्गीय डाक्टर सत्यपाल के समाचार पत्र नेशनल काग्रेस म छपवाया था जिसकी कुछ पक्तिया निम्न हैं—

बरतानियां स वह दो अब जिल्लते गुलामी।
करना नही गवारा हिन्दोस्ता हमारा।।
बरतानियां के तुम हो हिन्दोस्ता के हम हैं।
छोडो बस अब खुदारा हिन्दोस्ता हमारा।।'

शायरी की अनमाल दौलत से मालामाल स्व० पडित मलाराम 'वफा' सदैव सासारिक सुख स सदा वचित रह उनकी सादगी अनुकरणीय थी। उनका शायर के रूप म ता सभी न उस्ताद शायर माना है परन्तु वह एक उच्च श्रेणी के वक्ता भी थे। इसकी पुष्टि उर्दू के प्रथम पक्ति के तन्कीद निगार नियाज फतेहपुरी ने भी की है तथा स्व० मौलाना जफरअली खां सम्पादक दैनिक समाचार पत्र 'जमीदार' का यह शेर आज भी नही भुलाया गया है जो उन्होने एक समय स्व० 'वफा' के लिए कहा था।

तो डता है शायरी की टाग क्यो ऐ बेहुनर।
शेर कहने का सलीका सीख मैंलाराम से।।'

साहित्य के क्षेत्र मे उनकी सेवाओ के फलस्वरूप उन्हे लस्सान उल ऐजाज, सेहर तराज, और राज कवि की पदवियो से सुशोभित किया गया था उनकी काव्य रचना का सकलन 'सोजे वतन' पुस्तक के नाम से देश विभाजन से पूव प्रकाशित हुआ था और दश विभाजन के बाद 1959 मे 'सगे मैंल' के नाम से प्रकाशित होकर देश के हर सवग से श्रद्धांजलि प्राप्त कर चुका है। 1982 मे स्व० पडित मलाराम 'वफा' की एक एक पुस्तक उनकी जीवनी एव शायरी पर रामरतन 'मुजतर ने लिखी है, जो मकामे वफा' के नाम से प्रकाशित हो चुकी है।

●

एक भिखारी की आत्मकथा

•

ओमप्रकाश गूजर

मैं एक भिखारी हू। मैं अधम, नीच और नराधम हू। मैं भारत माता के माथ पर बदनुमा दाग, व कलंक हू। म समाज का कोढ व मानवता के विकास पर धब्बा हू। गदगी गरीबी और भुखमरी मेरी सगी बहनें हैं। मैं समाज की जूठन हू। मै गटर म जाया-जन्मा आप ही की तरह सास लता एक प्राणी हू। जो फुटपाथो पर, पेड के नीचे नालो की गदगी म झोपड-पट्टी के बाहर प्लेटफाम पर और गदगी के ढेर के पीछे सासें ले रहा हू।

मेरा बाप कौन है यह मेरी मा को भी मालूम नही है और मेरी मा कौन है यह मुझे भी मालूम नही हैं। मैं भिखारी हू यह मेर बाप को मालूम नही हे और मेरा बाप कहा रहता है यह अपुन को मालूम नही। अपुन भिखारी हैं, यह देश वासियो को मालूम नही। अपना भी कोई देश है यह अपुन को मालूम नही।

जब से होश सभाला है, अपन आप को सडक पर पाया है बचपन गुमनामी म निकला, जवानी भुखमरी में निकल जायेगी और बुढापा बीमारी और बदनसीबी मे। अपना घर पेड की छाया, स्टेशन की दीवार नाला या गदा गटर है। शुरू शुरू म नगा रहता था पर एक दिन मगतु मर गया तो अपुन ने उसकी पैंट खोल कर पहन ली। अभी तक वही चल रही है।

अपुन एक जिंदा लाश है जो सदियो से मानवता का बोझ ढो रहा है। मै मानवता पर दाग हू। मेरी शक्ल देखकर किसी को भी घिन आ सकती है कै हो सकती है और मतली आ सकती है। मै गदगी की एक बेमिसाल तस्वीर हू। मैं जमाने भर की जूठन को चाटने वाला जीव हू। मेरे तन के कपडे चिथड चिथडो

का एक जोड है। मेरे नाखून जगली जानवर की तरह हैं जिमम सदिया स मल जमा है। मेरे बाल कड ग" व आपके बूट-पालिस करन के ब्रुश क माफिक हैं। मैं जन्म से नहाया नही हू। क्हा धोऊ अपन तन की गदगी? मार शरीर पर पसीने व मैल के रेले हैं। कोलतार की तरह गदगी मरे शरीरी सडक पर बिछी है। मेरे मुह व दातो म बदबू का बवडर है, आखो म कीच है, तन पर तार-तार चिथडे हैं, मर हाथ गदे मैल कुचन व सड हुए ह मैं चम रोग का "रू मे रोगी हू। मैं खुजलाता रहता हू, शरीर का लहू-लुहान करता हू पर य कीडे-मकोडे जान का नाम नही लेत। ये मेरे सुख दुख क एकमात्र साथी हैं।

अपनी बिरादरी के तीन प्राणी मुझे बहुद पसद हैं, वे हैं—कुत्ता, गधा, और पुलिसवाला। य अपने बिरादरी में कैस है? बतलाता हू—कुत्ते का कोई ठौर-ठिकाना नही हैं, अपुन का भी नही। कुत्ता और मैं दोनो एक साथ फेंकी हुई जूठन पर लपकते हैं कभी जूठन कुत्ता खा लेता है तो कभी मैं। कभी साथ साथ भी खा लेते हैं। कुत्ता दुम हिलाता सारे दिन इधर-उधर घूमता, अपुन भी घूमता। कुत्ते के मा-बाप नहीं—अपुन का भी नही। गधा बिलकुल अपुन के माफिक है लाग गधे को गधा कहत हैं, डाटत हैं, तिरस्कृत करन है ठोकर मारत है सारा बोझ उस पर ढोते है। अपुन भी भाई गधे की तरह तिरस्कृत उपेक्षित निंदित, प्रताडित हैं। कोई मुझ पर थूकता है, कोई छि छि करता है कोई मुह मोड लता है, कोई धक्का देता है, कोई ठोकर मारता है कोई रोटी का टुकडा, सडा गला भोजन का अश अपुन को दता है और अपुन गधे की माफिक चुपचाप खा लता है। गधा अपन मालिक की मार को चुपचाप सहन करता है अपुन भी मानवता की मार को सदियों से सहन कर रहा है। पुलिसवाला भी अपनी बिरादरी म आता है। कहते हैं—जिसके मां-बाप का कोई ठिकाना नही होता उसे पुलिस मे भरती करवा दिया जाता है। पुलिसवाले बेशम, बेरहम कठोर दिल होत है अपुन भी ह। अपुन भी बशम बन लोगो क सामन गिडगिडाता है, भीख मागता है, जैस पुलिसवाल 'चौथ' वसूलते हैं। अपुन बिलकुल बेशम बनकर भीख लेता है। पुलिसवाले हरदम किसी का लूटने की फिराक म रहता है। अपुन भी लोगो की जब हल्का करने में रहता है। इसलिए अपुन का कुत्ते स, गधे से और पुलिसवाल मे खास रिश्तदारी है। तीनो अपनी ही बिरादरी क माफिक हैं।

मेरी कोई जाति नही धम नही, मजहब नही। मेरा खुदा, ईश्वर, गॉड सब एक सवशक्तिमान हैं। मैं मदिर म शीश नवाता हू, मस्जिद मे नमाज पढता हू, गुरुद्वारे मे दशन करने जाता हू और चच म प्राथना करता हू। मरे लिए सब बराबर है। अपुन सब धर्मों को अपनाकर चलता है, धम और सम्प्रदाय के नाम पर अपुन फालतू की झक-झक नही करता।

अपुन शासन व ससद के सडे हुए स्वरूप का प्रजातत्र के पाप और मान व

अधिकारी की मखौल की जीता जागता मिसाल है। अपुन का अस्तित्व पचवर्षीय योजनाओं के खोखलेपन को, सरकारी तन्त्र की उदासीनता का, और इक्कीसवीं सदी म कूदनेवाले इन्सानों की ढकोसलेबाजी का खुली चुनौती है।

अपुन की तरफ सरकार का ध्यान कब जायगा? कब खुलेंगी सरकार की आखें? सरकार सबके बारे में सोच रही है, सबको ऊपर उठा रही है, अपुन का कमबख्त आज तक नम्बर नही लगा है? सबको सरकार सरक्षण द रही है, पर अपुन अभी तक भूखा मर रहा है, सडका पर सड रहा है सर्दी म ठिठुर रहा है, बरसात मे भीग रहा है। मैं पाक परवरदिगार खुदा से, महान परमेश्वर से और लाड यीशु से प्रार्थना करते करते थक चुका हू। कब होगी उसके दरबार म मेरी सुनवाई? कब तक मैं रटता रहूगा 'दने वाला दाताराम' की रट? कब खुदा के बदे मेरे हमदद और दोस्त होंगे? कब इसानो की इसानियत जागगी? कब धर्म के ठेकेदारो की मुझ पर नजर पडेगी? कौन मेरा माई-बाप बनकर इस नक से मुझे निकाल बाहर करेगा?

अपुन जानता है कि किसी दिन अपुन या तो भूख से तडपकर या सर्दी मे ठिठुरकर या लू मे लपटकर या ट्रक से कुचल कर या बीमारी म सडकर इस दीन दुनिया स चला जायगा। फिर मेरी बिरादरी वाल मरी मत दह को सडक पर लिटा कर, कफन ओढाकर, मेरे दाह कम के लिए भीख मागेंगे। मरने पर भी अपुन की मुक्ति भीख और चदे के सिक्को से होगी। ऐसा भी नही हुआ तो ये नगरपालिका वाले मुझे ठेले म डालकर या तो गदगी के ढेर पर डाल देंगे या किसी गटर मे फेंक देंगे या अधजला अपुन का देह छोडकर खिसक जायेंग और फिर अपुन कुत्तो, चीलो कौवो और गिद्धा के काम आयेगा। अच्छा है मर कर भी तो किसी के काम आयेगा।

●

पैदल चलने के फायदे

•

निशान्त

मैं गांव मोजगढ गया हुआ था। मुझे रास्त म पडत डेढ़-दा मील दूर गाव कल्लर खेडा म अपनी बहन से मिलकर श्रीगगानगर के लिए बस पकडनी थी। सुबह चलने को हुआ तो बडे भाई ने बस से चले जान की सलाह दी। और भतीजो ने साइकिल पर छाड आन का आग्रह किया। लेकिन मैंने उन सबको टाल दिया और चल पडा। पक्की सडक पर आते ही काशी डाकोत मिल गया। वह हाथ मे डडा लिये हुए था तो मैंने पूछ लिया—"सुबह-सुबह किधर डडा उठाकर चल दिय ?'

"खेत पर जा रहा हू !"

"मैंने हैरान होत हुए पूछा—"तुम्हारे खेत कब से ?"

मैंने काशी डाकोत को सदा गांव म बडे किसानो के ट्रैक्टर-जीप चलाते या कपडे सिलत देखा था। लेकिन उसन मेरी आशा क विपरीत जवाब दिया—हैं, खेत हैं, मरे भी।

"क्या काइ हिस्से ठेक पर ले रखा है या अपना खुद का बना लिया ?"

"खुद का ही बना लिया।"

"क्या खरीद लिया ?"

"नही, खरीद तो मैं क्या खाक लेता ? यू ही समझो।'

बाद म खोदने पर उसने बताया कि गांव के दा बडे किसाना की उनके बडे खेता से हटकर दो-दो किले जमीन बजर पडी थी। वो न तो उनकी गौर करत थे और न खेती। मैंन कहा तो मान गये। मैंने जमीन जोत सवार ली तो पानी की बारी बध गयी। मेर दूसरी पार्टी का हाने के कारण बाद म एक न तो अपनी जमीन छुडानी भी चाही। लेकिन मैंने तहसीलदार को मौका दिखाकर गिरदावरी

अपने नाम करवा ली। इस प्रकार मेरे ध्यान लायक दान हो जाता है।

उसका खेत मेरे रास्ते में ही पड़ता था। इसलिए वह *सड़क सड़क मेरे साथ* ही चल रहा था। काफी आगे आने पर उसने अपना खेत का भाठा बताया। सड़क से कोई ज्यादा दूर नहीं था। सबसे बड़ी बात यह कि उसका खेत हमारे पुराने खेत का ही टुकड़ा था। आज से पच्चीस-तीस वर्ष पहले हुई मुरब्बा बंदी में वह खेत हमसे छूट गया था। लेकिन उस खेत की याद मेरे जेहन में बुरी तरह समाई हुई थी। मेरे मन में उस जगह पर जाने की बड़ी साध थी। सच कहता हूं उस जगह पर नींद के सपनों में मैं कई बार गया भी।

बस से और साइकिल से तो यहां से अनेकों बार गुजरा हूं लेकिन यूं किसी के साथ पैदल थोड़ा फुर्सत से कभी नहीं निकला। आज मुझे सुनहरी मौका मिला था। मैंने पुलककर कहा—"चलो यार! तुम्हारा खेत देखते हैं।" इस प्रकार मैं काशीराम के साथ उसके खेत में पहुंच गया। वास्तव में काशीराम का खेत देखने के बहाने में अपना खेत देख रहा था। काशीराम का सम्बल न मिलता तो मैं फुर्सत होने पर भी वहां कभी न जा पाता। डर था कि कहीं कोई यूं आवारा फिरता देख लेगा तो क्या कहेगा?

काशीराम भी जानता था और मैंने उसे बताया कि कभी यह जगह हमारी हुआ करती थी। आज लगभग तीस वर्ष बाद इस जगह पर मेरे पांव पड़े हैं। यद्यपि खेत काफी बदल चुका था। पुरानी कोई पहचान नहीं बची थी। सिवाय थोड़ी सी बंजर भूमि के और एक दो छोटे केर जो मुझे वहां दिखाई दिये वहां कभी बड़े-बड़े केर होते थे और उनमें हिरणों की खोह थी। मुझे सब कुछ याद हो आया। बचपन की उस पुरानी याद को ताजा करके मुझे बड़ा सुकून मिला। जहां हमारी विरानी झाड़ी हुआ करती थी वहां अब नहरी झाड़ी के खेत लहरा रहे थे। खेतों की मेन नाली पक्की हो चुकी थी। छोटी नालियां जरूर कच्ची थीं। जो मेरी बचपन की यादों से मेल खा रही थीं।

दिन अभी थोड़ा सा ही ऊपर चढ़ा था। काशीराम ने मुझे सड़क पर जा चढ़ने का रास्ता सुझा दिया। उससे विदा होते हुए मैंने पूछा—'क्या अब गांव जाओगे?'

'हां!'

'दिन में क्या करोगे?'

'सिलाई!'

काशीराम सिलाई और चार किले की खेती पर ही खूब प्रसन्न था। मैं कम्बल ओढ़े था लेकिन उसे चादर-कमीज में भी सर्दी नहीं लग रही थी। वह रास्ते में मस्ती में आकर भजन गुनगुना रहा था। अब मैं काशीराम के बारे में सोच रहा था कि ऐसी मस्ती मेरे पास क्यूं नहीं? सरकारी नौकरी में हूं। इसकी तरह कब्जे की दस किले जमीन मेरी भी है। लेकिन ऐसी मस्ती और मुझसे दस वर्ष बड़ा होते

हुए भी इतनी जवानी कि सर्दी पास नही फटकती ?

काशीराम के बताये रास्ते से चलकर मैं सडक पर पहुच गया। काशीराम का खेत देखने पर मुझे मामूली सी 'उलाई' पडी थी। लेकिन उस थोडी-सी 'उलाई' ने मुझे इतना कुछ दे दिया था कि मैं सराबोर हो गया था।

मैं सडक सडक चल रहा था कि पीछे से दो साइकिल सवार दूध की टकिया लिये मेरे पास से गुजरे। मैंने उन्हे पहचान लिया था। शायद उन्होंने नही। तभी तो उन्होंने मुझे बुलाया नही। थोडा सा आगे जाते ही वे एक नाले पर रुक गये। पास की ढाणी का एक लडका उनसे लोटे मे दूध लेने के लिए खडा था। मैं पास गया तो उन्होंने पहचाना और 'राम रमी' की। उनमे एक मेरा ही कुनबे मे पोता था। उसके हाल चाल पूछकर मुझे अच्छा लगा। गाव मे कभी आता हू तो रात भर ही मुश्किल से ठहर पाता हू। इस प्रकार तीन भाइयो से मिलना भी मुश्किल हो जाता है। गाव और कुनबे के लोगो से तो मिले ही कौन ? अब अगर पैदल न चल रहा होता तो शायद इनसे भी मिलन न होता।

थोडा सा आगे गया तो कल्लर खेडा गाव का मेरा एक सहपाठी मिल गया। वह 'स्कूटर' पर कही जा रहा था। मुझे देखकर रुक गया। मैंने उसे 'उत्थान' की प्रति दी तो वह बडा खुश हुआ। कहने लगा—मुझे भेज दिया करो। चन्दा भेज दूगा। कल्लर खेडा अब सामने दिखाई देने लगा था।

मीरा चटर्जी, औरो के लिए भी

•

शशिबाला शर्मा

"बहन जी ! हमने प्रेम विवाह किया था' अपने जीवन के बहुत पुराने, किसी समय के गोपनीय फिर चर्चित किन्तु आज के सफल दापत्य की गर्वानुभूति से भरने वाले इस प्रसग को सहसा ही मेरे सामने अनावृत कर देने पर व्रीडा का जो गुलाल उस सौम्य सावले मुखडे पर पूरी शोभा के साथ उस क्षण निखर आया था। उसे कुछ कौतुक और कुछ अविश्वास की नजरो से निहारती मैं सोचती रही कि प्रेमानुभूति नारी के यौवन की ऊर्जा है।

दुबली, छरहरी काया, किसी हद तक बौना कद आग मे तपे कासे जैसा सावला किन्तु स्निग्ध सौम्य चेहरा, उजली दतपक्ति, आखो पर चश्मा क्या था इस मुट्ठी भर व्यक्तित्व मे जो चटर्जी जसे सुदशन पुरुष की आराधना का पात्र बनी !

पिता बचपन म ही गुजर गय थे फिर मा भी, छह भाई बहनो का उत्तर दायित्व सब कुछ निबाह कर ही मैं अपने विवाह की सोच सकी उन्होंने मेरे लिए सात वप तक प्रतीक्षा की। सात वप ? कम तो नही होते ? मेरी आखें आश्चय से फैलना चाह रही थी।

प्रेम विवाह के सन्दभ मे, भले ही इसे मेरा पूर्वाग्रह समझ लो मैंने रूप को ही मान्यता दी है। अप्रतिम सौंदय की स्वामिनी ही किसी की एकनिष्ठ उपासना की अधिकारिणी हो सकती है किंतु यहा तो इस मान्यता ने मुह की खाई थी।

रावतभाटा मे मेरा ठहराव अल्प ही होता तो मैं शायद अपने विचार दायरे मे कैद एक बहुत बडे अछूते सत्य से अनभिज्ञ ही रह जाती जिसका बोध मुझे बाद की स्कूल की नैत्यिक और कुछ घरेलू मुलाकातो म होता रहा कि प्यार सिर्फ

शारीरिक आकर्षण म नही, उसके सम्पूर्ण वजूद का केन्द्र है और इसकी हकदार मीरा चटर्जी हर स्तर पर हैं। मेरी प्रथम सहायिका को जानने और समझने मे बडा अन्तर है, एक सार समूचा हम किसी का कब जान पाते हैं ! लम्हा लम्हा किसी राज से अनावृत होती हुई रहस्य की पर्तों की तरह किसी के अन्तर की शुचिता की कुछ शीतल फुहारें, जब अनायास हमारे तन्द्रोम्लान चित्त को अयाचित सुकून पहुचाती हैं—तब किसी सत्य के साक्षात्कार की तरह हम उस उज्ज्वल पक्ष को निर्निमेष मुग्ध दृष्टि स निहारने लगते हैं।

"सॉरी मैडम ! आपको तकलीफ उठानी पडी। अपने आने की सूचना आपने हमें एक पत्र से दे दी होती तो हम लेने भी पहुच जाते और ठहरने की माकूल व्यवस्था म त्रुटि भी न होती।"

रात्रि-बस स मुह अधेरे इस कस्बानुमा बस्ती म आगमन वाहन की अनुपलब्धता स्कूल मे चौकीदार की अनुपस्थिति—नैराश्य, क्षोभ और आक्रोश की जो घुटन पडोसी पडित जी के अयाचित आतिथ्य के बावजूद ड्यूटी ज्वाइनिंग के प्रथम दिन सुबह तक मेरा पीछा नही छोड पाई थी, वह मीरा जी के सीमित मर्यादित स्वागत सम्भाषण से सहज ही छिन्न भिन्न हो चुकी थी और फिर रैस्ट हाउस मे फटाफट व्यवस्था और रात्रि भोजन का निमन्त्रण

मीरा जी ! आप खाना कितना लजीज बनाती हैं ! आज दोपहर तो आपको बस भी नहीं मिली और अब शाम तक इतनी सी देर मे इतनी चीजें बना डाली। क्या जादू है आपके पास ? भरी हुई टेबल का हर व्यजन स्वाद म भी उतना ही अनूठा था जितने कि सुरुचिपूर्ण ढग से परोसा गया था और मैं देख रही थी वे कमर म पल्लू खोंस रसोई घर म अकेली जुटी थी। मेरे द्वारा सहयोग को अपाल सहज भाव से ठुकरा दी गई थी। बस बहन जी ! जरा-सा ही तो कर पाई हूं और आप करवायेंगी ? आप टी० वी० देखिये और एक स्निग्ध मुस्कान ही उनका वकील थी।

कोई भी स्कूल यद्यपि पूरे स्टाफ की लकुटियो की टेक को सत्यापित करता हुआ गोवर्धन तो है ही, पर बावजूद इसके कोई एक काहा की लाठी का गौरव सहज ही ओढ़ लेता है। मीराजी इसकी हकदार ही नही, स्कूल का पर्यायवाची भी थी। सैकण्डरी स्कूल के नाम स अनभिज्ञ लोग भी 'चटर्जी बहन जी' के स्कूल का पता बता सकते थे। स्कूल की कोई भी योजना हो या प्रवृत्ति, आफिस का कोई भी अनुत्तरित पत्र हो या अधिकारियो की स्वागत व्यवस्था—हर प्रश्न का उत्तर अपनी सुकुमार कटि मे चाबी के गुच्छे-सा बाधे वे इधर स उधर अविराम घूमती नजर आती। इनकार उनकी जन्म-पत्री म नही था।

मैं शिक्षको की भी तीन श्रेणिया मानती आई हू। एक वे, जो सामान्यत निस्पृह भाव से अपनी ड्यूटी को अजाम देत रहते हैं। दूसरे वे, जो स्वय तो काम

से जी चुराते ही है साथ ही दूमरा के कधे पर बदूक रखकर चलाने का अवसर भी तलाशत ह और तीसरे व, जो कम का पूजा मानकर समर्पित भाव से सही अर्थों म शिक्षक होत हुए मोमवत्ती की तरह तिल तिल पिघलत हुए रोशनी बाटत रहत हैं।

मीराजी ! आप कुछ लोगा क लिए ढाल बन जाती हैं। आपकी तरफ से तो यह हितचिन्ता ही है, मगर अनजाने ही उनका अकर्मण्य और परजीवी बनाकर क्या उनका अहित नही होगा ? मुझसे पूछे बिना भी सबका काम चुपचाप ओढ लेना ! शादी-ब्याह म जाना ह मा बाप स मिलन जाना है। अपने काय निबटा-कर जाये। आप सबका आगा पीछा क्या ले लेती हैं ?

बहनजी ! मर तो मा बाप कोइ है नही जिनसे मिलने जाऊ। भाइ भी बुलाते नही। कम से-कम जिनके हैं वे ता मिलन स वचित न रह। यही सोचकर लोग अन दान करत ह, वस्त्र दान करते है। यदि विभाग अनुमति द द तो मैं औरा के लिए अपनी सी एल दान कर दू

बस वस ! इतनी दानशीलता विभाग क हित म नहीं है। पहले ही कम *उदारता दिखाई है क्या विभाग न। पन्द्रह सी एल फिर सात एस पी एल।* चलो कोई तो एसा हितचितक मिला जो विद्यालय हित मे सी एल नही लता। मगर आप घर के नाम स इतनी सजीदा क्यो है ? जिन भाई बहनो का आपने पाल पासकर बडा किया, अपन पावा पर खडा किया उनक पास अब जायेंगी क्यो नही ? उनके उमडत आसुआ का रोकन का काई और उपाय मुझे नही सूझा।

और फिर जस किसी जख्म पर स टाक उधेड दिय जायें और वह टीसन लग। वर्षों बाद भी अधूरी कही कहानी फिर कुछ आकार पाने लगी।

बलगाव कलकत्ता के निवासी चालीस साल से अजमेर राजस्थान में बसे। पिता क मरने के बाद मुसीबता का अटूट सिलसिला। मा शूगर की मरीज। उनका ध्यान रखना। उन्हे इन्सुलिन लगाना। रात रात भर टयूशन करना और अपनी *भी पढाइ। गहू उबाल उबालकर* भाइया का खिलाय। भूख नही है या खा लिया था कहकर अपना हिस्सा भी भाइयो का खिलाकर खुद पट पर पट्टी बाधकर सो जाना। जबकि दीदी का सिफ अपने लिए जीना। ऐम म य ही सहारा बन। पडासी थे। कभी तपती दुपहरा म कॉलिज आत जात देखकर साइकिल से छोड देते। मगर मरा इतना सा सुख न पडोसियो को सुहाता न भाई बहना का। और फिर एक दिन

क्या हुआ एक दिन ? किसी करुण-कथा क मार्मिक प्रसग पर अवरोध जसे आखा म व्याकुल कर देता है।

इन्होने घोपणा कर दी मुझस विवाह करन की और हगामा खडा हो गया। य बगाली कायस्थ थे और हम बगाली ब्राह्मण ! फिर न दान न दहेज ऊपर स मेरे ऊपर तीन भाइया को पढाने और दो छोटी छोटी बहनो की शादी का भार।

इनके पिता ने स्पष्ट मना कर दिया।

फिर ?

मैंने भी कहा मेरे लिए किस किस स लडोग ? परिवार स ? समाज से—? इन्होंने कहा सभी स लड़ूगा मगर तुम्ह नही छोड सकता तुम्ह तभी से चाहता हू जब तुम किशोरी थी। तुम्हारे सघष को मैंन अपनी आखो स हर रोज दखा ह— जिनके लिए तुम गिरती रही, उ हे तुम्हारी कितनी परवाह कितना प्यार है यह भी अच्छी तरह जानता हू, अब और ज्यादा तुम्ह अकला नही छाड सकता जूझने के लिए—

मगर मरे दायित्व अभी पूरे कहा हुए ? भाई पढ रह है। मैं बाधक नही बनूगा बहन जी इन्हाने सिफ यह आश्वासन दिया बल्कि मरा सम्बल बन। हमन कोर्ट मैरिज कर ली—ये हमारा विवाहापरान्त का एक चित्र और एक पत्र पिता के कमरे म रख आय—लिखा था, "चित्र म अच्छी तरह स दखले अब वही लडकी मेरी पत्नी है उसे पुत्रवधू बनाना स्वीकार नही ता आज ही से पुत्र को भी अस्पश्य और त्याज्य समझ ले, और उसी दिन अपनी नई सर्विस पर रावतभाटा चल आए और पिता को इकलौते पुत्र से समझौता करना पडा—दस वष तक मैन अपना पूरा वेतन भाइया पर खच किया।

S U P W का शिविर मरा गत दो वर्षीय अनुभव विद्यालय के बाहर कही खुल म लगान के लिए उत्प्रेरित कर रहा था—मगर मीराजी मर हर प्रस्ताव पर असुविधाआ और बाधाआ के कैक्टस चिपकाकर उन्ह खाटे सिक्क सा मरी जेब म वापस पहुचा रही थी तिस पर भी तुरा ये फिर भी यदि आपका आदेश ह ता जसा आप चाहेंगी वसा ही करेंगे—खर ! मैं दुराग्रही नही हू यथाचित स मान्यता दना जानती हू। शिविर भी स्कूल मे ही लगगा और स्कूल म स्थानाभाव के कारण रात्रिशयन से पूव ही छोड दिया जायगा, समस्त छात्राए और स्टॉफ रात का अपन घर जा सकेग मगर सुबह प्रभात फेरी स पूव ही आना होगा

कहना न होगा सडक और स्कूल सुबह पाच बजे स पूव गूज उठते। पदल साइकिल, स्कूटर मोटर साइकिल बस जिसका जो सहारा मिलता वह उसी स आता। मीरा जी सबसे पहल मौजूद मिलती सभी टीचस भी पीछे नही थी।

शिविर का तीसरा दिन रात्रि को विशाल सास्कृतिक कायक्रम का आयाजन था। भरी दोपहर म मुझे स्कूल से काफी दूर पचायत समिति की परिवार नियोजन सबधी मीटिंग मे जाना पडा लौटने तक सध्या घेरा लगी थी तभी पता चला एक सज्जन मुझे देर से तलाश रहे है मैं मिली—मिसज चटर्जी का छुट्टी द दीजिए चटर्जी साहब को खूब तेज बुखार चढा है घर पर कोई बडा सम्हाल करने वाला नही है बच्चे घबडा गय है, हम पडौसी हैं—मीरा जी का बुलाया

आपका पता था ? मैंने पूछा।

हा पता था' वह शात भाव से बोली, कब से—

'दोपहर स—जब आप मीटिंग म गई थी, गुड्डू बुलाने आया था,' फिर आप चली क्या नहीं गई ? मैंने गुस्से से पूछा।

'आपस पूछे बिना व स चली जाती ? इतना बड़ा प्रोग्राम है कई काम बाकी हैं '

'सब हो जायगे और आपने मुझे इतना निर्दयी कसे समझ लिया कि ऐसी परिस्थिति मे भी म नाराज हो जाती।'

आप नही होती, पर मरा तो फज था' वह अविचलित थी।'

फज पर कुर्बानियत का जुनून मुझ पर भी अपने सेवा काल म कई बार सवार हुआ है, पर परिणाम मे मिले आघाता ने साहस बढाने की बजाय उसे तोड़ा ही है मगर जब भी कभी किसी दिल म ये फज की लौ जलती नजर आती है तो बेइन्तहा खुशी होती है, कि बावजूद इसके कि हम एक निहायत स्वार्थी और मौका परस्त समाज म जी रहे हैं—"सानियत पूरी तरह विदा नही हो गई है बेमतलब बेवजह दूसरो के लिए खटने वाले, दौडने वाले लोग आज भी हैं और मेरे बाईस वष के सेवा काल म जितने लोगो को मैंने जाना पहचाना और समझा है उन सबमे इस नाम को मे अपने सम्पूण निष्पक्ष आत्मविश्वास के साथ सबसे आगे कर सकती हू—स्कूल के लिए सुबह से शाम तक जुटालो चूं नही करेंगी N I C कॉलोनी स्कूल से करीब पाच छ कि० मी० दूर घर बस चूक जाये परवाह नही, धूप हो या बरसात, आखो पर चश्मा या बगल म छाता लिए—लगता ह व स्वय नहीं सडक उनके पावो के नीचे भाग रही है।

स्कूल मे छुटपुट पार्टियो के जब कभी अवसर आते, अकसर पाती समुस्कान परोसते खिलाते उनके हाथ अपने पर आकर सहसा रुक जाते मगर तो आज शुक्रवार है आज बुधवार है

'सब वार आप ही के है, मगर कुछ फलाहार तो लो। नही बहन जी ! घर पर जाकर पूजा करनी ह उसके बाद घर ! याद आया साफ सुथरा आइने की तरह चमकता सजा सवरा वह नीड जिसे उन्होंने तिनका तिनका करके उस दौरान बनाया था जब अपने भाईयो और फिर ननदो के नीड के लिए भी छप्पर सहजना उनका प्रथम दायित्व था—वसे ही सुघड सलोने पढ़ाई करते बच्चे दो लडके एक लडकी—आज तो मेरे पास भी सब कुछ है बहनजी, फ्रिज टी० वी० स्कूटर R A P P म आवर टाईम के एक घटे के पच्चीस एक रात मे चार घटे के सौ रुपये मिलत है वे खूब महनत करत हैं—भाई आज ऊचे ऊचे पदो पर हैं कहते है—तुम्हारे पास क्या है मकान भी नही तुम हमार स्टैंडड की नही—प्रतिदान म प्रत्युपकार की चाहना न रखने पर भी आम की गुठलिया से बबूल की महक आते देख कौन पुलकित होगा ?

मच पर सास्कृतिक कायक्रम का सचालन शरद जी ही करेंगी यह आदश मैं काफी पूव मे ही निकाल चुकी थी—फिर कौन सा प्रोग्राम कहा रखा जाये, इससे आप क्या माथा पच्ची कर रही हैं ? आपक करने को और बहुत कुछ है, उस दिन मुझे कहना पडा।

बहन जी ! क्या करू कोई टीचर बोलना ही नही चाहती दखिए न प्राथना न या उत्सव दिवस पर भी मुझे ही बोलना पडता है, अब शरद जी भी बचना चाह रही हैं। त्वरित पकी हुई शरद जी ने कहा, नही मडम ! हमेशा से वे ही बोलती आई हैं। इस बार नही बाल पाई तो फिर उन्ह अच्छा नही लगेगा, एसा मुझे लगा, इसीलिए मैं तटस्थ रही।'

मैंन कहा 'आप ही बालेंगी।'

बुरा लगने के रूप म व्यवहार की कोई विस्फोटक चिनगारी अचानक मुझ चौंकाती तो शायद मीरा चटर्जी मरी रचना का एक पात्र कभी न बनती और ठेस पहुचती मेरी धारणा मेरे विश्वास को भी। लकिन ऐसा हुआ नही और शीषक के लिए आधार खोजती मरी कलम, पतझर की इस उदास सध्या म जब सूख पील पत्ता से भरा पडा है मेरा आगन, और धूल धूसरित झझाओ के दुर्दान्त थपेडा को झेल झेलकर क्लय कौराए से खडे हैं ये आम नीम गुलमोहर और यूकिलिप्टस, सहमा जा अटकी है उस आचल से जो बारह के बाद भी तीन घट और स्वेच्छा से स्कूल के हवाले कर अभी भरी दुपहरी म नव नियुक्त P T I की एक फरियाद लेकर आई थी मरे पास अभी तक स्कूल मे हो ? मरे आश्चय को द्विगुणित कर रहा है एक वाक्य बहन जी ! [मैं दोपहर मे कभी नही सोती चाहे सर्दी हो या गर्मी चटर्जी ने सात वष तक प्रतीक्षा गलत नही की धूप स पिघलती डामर पर सरपट चली जा रही है मीरा चटर्जी पता नही बच्चे मेरी प्रतीक्षा मे भूखे बैठे हो बस का दूर-दूर तक पता नही है।

●

कहा छुपी हो मा

*

श्रीमती सुमन सक्सेना

असख्य तारावलिया तुम्हारी चोटी म गुथकर प्रकाशित हो रही हैं। सूय रूपी मुखमण्डल की आभा अपने अनुपम प्रचण्ड रूप के साथ सवत्र उत्कीण हैं। गगा यमुना की पवित्र धाराये तुम्हारी करवल्लरी से प्रवाहित है। पक्षियों के मधुर स्वर तुम्हारी स्वर लहरी से निसृत हो प्रेम सदेश बिखेर रहे हैं। चन्द्र-टीका मस्तक पर सुशोभित हो स्वच्छ सात्विक चादनी की आभा से सारे जग को सरावोर कर रहा है।

तुम अबला नहीं, शक्ति हो! दुर्गा पावती, सरस्वती लक्ष्मी, सीता, इन्द्राणी न जाने क्या क्या हो! इस विलक्षण शक्ति के होते देश में पग पग पर अन्याय, शोषण अत्याचार व राक्षसी वत्तिया का ताण्डव क्यो? मन को कुछ बार बार कचोटता है यह भुखमरी बेकारी, दहेज का अभिशाप और इन सबसे परेशान 'हाय रे मेरे मा।' नारी का घोर अपमान हो और आद्या शक्ति! तुम चुप रहो!! यह क्या? नारी का दिए जाने वाले अमानुषिक अत्याचार दिल कराह उठता है भारतीय नारी की दुदशा पर और शक्ति माता! तुम चुपचाप सुन रही हो? उत्पीडन की कडी में जुडी अनेक कथाओ की दिल दहला देने वाली लोम हषक गाथायें कलेजा काप उठता है!

मा! ऐसा नारकीय जीवन कब तक जीन दोगी कैसी विडम्बना है तुम्हारी जाति यातनाये भोग और तुम चुप्पी लगा जाओ? कहा गई तुम्हारी शक्ति? तुम्हारे चमत्कार?? क्या ये सब शब्दो के चमत्कार थे जो आज पुस्तको के कलेवर म छुपे बैठे है???

●

मै शिक्षक हू

*

दयावती शर्मा

अधकार, भयकर कोलाहल, कुछ पालने की उत्कट अभिलाषा पर हाथ का हाथ नही सूझ रहा है। कुछ सुन भी नही रहा है। अभिलाषा बलवती होती जा रही है अधकार को दूर करने की।

पूर्वाकाश मे क्षितिज के पास हल्का प्रकाश दिखाई दिया। मानव दौडा पूव की ओर।

अधकार को चीरकर एक तज प्रकाश निकला। मानव की बलवती इच्छा न प्रकाश ग्रहण किया।

मानव की जिज्ञासा बढी, किसने अधकार हटाया, किसने मानव म देखने की शक्ति पैदा की ? किसन उसकी कुछ सीखने की उत्कट अभिलाषा पूरी की ?

पूर्वाकाश म फैले प्रकाश की ओर मानव ने अभिमुख होकर पूछा कौन हो तुम ?

कोई प्रत्युत्तर नही। जन निनाद बढा, फिर वही प्रश्न, कौन हो तुम ? प्रकाश फैलाने वाले।

पूर्वाकाश मे खडी एक शान्त मानव मूर्ति ने स्वर्गीय मुस्कराहट म उत्तर दिया मैं शिक्षक हू।

टाग और आदमी

*

माधव नागदा

सारे शहर म खबर फैल गयी कि वकील ज्वालाप्रसाद की कार से एक्सीडेण्ट हो गया। और अस्पताल ले जाते समय घायल ने दम तोड दिया। पुलिस को तो खैर मौके की कायवाही करनी ही थी, सो की।

खबर सुनकर कुछ गणमा य लोग सान्त्वना प्रकट करने ज्वालाप्रसादजी के घर पहुचे।

'बहुत बुरा हुआ।" लोगो ने भीगे स्वर मे कहा।

'क्या बुरा हुआ?' वकील साहब तमके।

'यही कि आपके ड्राइवर और कार को पुलिस ने ।"

"आह, आइ सी।" वकील साहब अब नम्रता के मारे झुक से गय। फिर दढ स्वर मे बाले, "अजी साहब, देखत रहिये। कल की सुबह मे दोनो का छुडाकर न लाऊ तो मेरा नाम भी ज्वालाप्रसाद नही। ज्यादा से ज्यादा लग जाएगे हजार पाच सौ और क्या।

वकील साहब की रौबदार आवाज से गणमा य लोगा पर स नाटा पसर गया। पर तु थाडी ही देर मे इस सन्नाटे को चीरती एक आवाज गूजी 'वकील साहब, आपको याद है वो केस।'

'कौन-सा भाई जान?' उ होंने पूछन वाले पर दष्टि डाली। वह एक ओजस्वी नौजवान था।

'जिमम एक्सीडेंट से एक टाग टूट जाने पर मुवक्किल की तरफ स आपने एक लाख रुपये के मुआवजे का दावा किया था।'

"अच्छी तरह याद है।" वकील साहब उत्साहित हो उठे, "मुकदमा चल

रहा है और अब फैसला होने वाला है। मैंने ऐसी ऐसी दलीलें रखी कि निर्णय खिलाफ मे तो जा ही नही सकता।

"वकील साहब, एक टाग के एक लाख, तो पूरे आदमी के कितने ?" युवक ने टेढी भौंह करते हुए सवाल दागा।

वकील ज्वालाप्रसाद भी एक ही घाघ थे। बोले, "आदमी के एक करोड, मगर शर्त यह कि मरने वाला खुद आकर ले जाय।"

वकील साहब का जवाब सुनकर महफिल ठहाकों से गुजायमान हो उठी। हा, प्रश्नकर्ता का चेहरा जरूर तमतमा गया।

•

अमृत-कलश

*

श्याम सु दर व्यास

एक अनजान जीव सहस्रा वर्षों तक नियति से मनुष्य जन्म पाने के लिए अनुनय विनय करता रहा। असीम सत्ता ने दयार्द्र हो प्रकृति की सहमति से अपने अमृत कशल से उसका अभिषेक किया।

धरती नाच उठी, वल्लरिया ने गीत गायें, हरित विरुध झीम उठे, शीतल बयार बहने लगी। वह अनजान जीव अनुपम मनुष्य देह पाकर उपकृत हो उठा यह मनुष्य जाति का आदि सास्कृतिक पर्व था।

उसे क्या पता कि उसकी यह यात्रा किसी दिन अमगल का जन्म देगी।

अगणित कालखडो मे मनुष्य अज्ञात धरती की परतें चीरता रहा, नय-नय अनुसधान होते रहे, सघर्षों की आधिया चलती रही पर कालजयी मनुष्य आगे बढता गया।

सभ्यता का सौंदय, सस्कृति का माधुय कण-कण मे बिखरता गया। जीवन म जिजीविषा जगी। प्रकृति के पशुओ का सहार करने वाले मनुष्य को, उन्ह पालतू पशु बनाकर अपना सहयात्री बनाने का रग चढ आया।

असीम जल स्रोतो के तट पर, खेता बस्तियो का निर्माण होने लगा। ग्राम बनें। विपुल शहरी सभ्यता का आवोडन होता चला गया। आज दिशाओ म भौतिक सुख-साधनो की गहमागहमी हैं। रूप ऐश्वय व सुख के ससाधन मनुष्य का मदाध कर रहे हैं, वह अपनी मगल यात्रा की लीक से अलग-थलग भटक गया है।

आकाश और महासागर की अनुचित गहराईयो को नापने वाला, आणविक शक्ति सचयन का विधाता मनुष्य भिक्षुक की भांति प्राण रक्षा की याचना कर रहा है, कैसी विडम्बना है? मनुष्य, मनुष्य के रक्त के छीटे उछाल उछालकर

अपनी अस्मिता का खेल खेल रहा है। वह मानसिक दरिद्रता के चीथडो लिपटा हुआ अपनी कचन काया को सवार रहा है, सजा रहा है।

चारो ओर अभावो के अबार हैं। अपशकुन जीवत होने की प्रतीक्षा मे है, हिंसा का ताडव, आपा धापी का हाहाकार, अनुभूति म विष की गध क्या मनुष्य जाति की ससृति की रक्षा कर पायेंगी ?

असभव ! असभव !

मनुष्य तेरी यह अविराम यात्रा ! अपनी असत्य जीत का कब तक अनावरण करती रहेगी !

"तू भाग ! फिर से मा प्रकृति से अमृत कलश माग, अपनी प्रदूषित काया का अभिसिचन कर, तेरी यात्रा मगलमयी होगी।"

●

चरैवेति-चरैवेति

*

रामगोपाल शर्मा

उपनिषद का सूत्र है चरवैति चरैवेति। निरन्तर गतिशील रहो, आगे बढो-आगे बढो। यही जीवन का मूल मत्र है। व्यक्ति को हर क्षण आगे बढने के लिए प्रयत्न शील रहना है। परन्तु प्रश्न है, व्यक्ति निरतर गतिशील कैसे रह सकता है? आगे बढने के लिए उसे क्या करना होगा?

निरतर गतिशील रहने के लिए *विगत का मूल्याकन आवश्यक है।* विगत के मूल्याकन के आधार पर ही आगे बढा जा सकता है। अगर व्यक्ति ने विगत का मूल्याकन करना सीख लिया है तो वह आगे ही बढेगा, पीछे नही लौट सकता है, *क्योंकि समय सदैव आगे ही बढता है।*

जीवन जीने का एक तरीका है उसकी एक प्रक्रिया है। जीवन के मूल्याकन के लिए इस प्रक्रिया को समझना आवश्यक है। सवप्रथम व्यक्ति अनुभव करता है अर्थात जानकारी प्राप्त करता है। उन अनुभवो के आधार पर उसके विचार बनते हैं। कल्पना का भी आधार अनुभव ही होता है। विचारो के साथ कम का जुडना अनिवाय है। यदि विचारो के साथ कम नही जुडता है तो विचार केवल कल्पना, दिवास्वप्न या महज अप्रभावी आदश बनकर रह जाते हैं। व्यक्ति के स्वय के जीवन के लिए या समाज के लिए उनका कोइ महत्त्व नही रहता है। विचार के साथ कम जुडने से कम का कुछ न कुछ परिणाम अवश्य निकलता है।

अनुभव, विचार, कम तथा परिणाम यह एक प्रक्रियापूण हो गई। अब मूल्याकन आवश्यक है। यह प्रक्रिया चक्रवत है। मूल्याकन के बाद परिणाम को पुन अनुभव के रूप मे लेना है। इस अनुभव को पुन विचार व कम की शृखला से परिणाम के स्तर तक पहुचाना है तथा फिर मूल्याकन कर नये अनुभवो के साथ आगे बढना है। चरैवेति चरैवेति की मूल भावना यही है।

मानव के जीवन मे प्राप्त अनुभव कभी नष्ट नही होते हैं। हम जिस भी क्षण को जीते हैं वह अपने अनुभव छोड जाता है। मानव मन इतना शक्ति शाली है कि वह प्रत्येक अनुभव को अपने मे समाहित कर लेता है, भले ही हमे इसकी चेतना हो या न हो। मानव मन मे न केवल प्रत्येक अनुभव अंकित होता है, अपितु उसम प्रत्येक अनुभव को सुरक्षित रखन की भी अपूर्व क्षमता है। भारतीय अध्यात्म एवम् अनेक आधुनिक मनोवैज्ञानिको के अनुसार भी मानव मन मे न केवल इस जन्म के अपितु जन्म जन्मान्तरो के अनुभव भी सुरक्षित रहते है। ये अनुभव अधिकतर अचेतन मन के स्तर पर होते ह, परन्तु चेतन मन के स्तर पर भी आ सकते हैं या लाये जा सकत है।

जीवन का प्रत्येक अनुभव लाभदायक है, यदि उसका सही मूल्याकन कर उससे शिक्षा ग्रहण की जाती है। सही मूल्याकन के लिए हमारे विवेक का जागत रहना अनिवाय है। विवेक मानव बुद्धि की वह स्थिति है जो गलत सही का निणय करती है। यह विवेक तभी जागत रहता है जबकि इसे धोखा न दिया जाय एवम् किसी भी प्रकार के आवरण को न ओढा जाये।

हमारा विवेक जागत रहे तथा हम निरन्तर गतिशील रहकर आगे बढे, इसके लिए आवरण को हटाना आवश्यक है। मान पद, प्रतिष्ठा, सत्ता, धन, लोभ, मोह आदि आवरण हैं। व्यक्ति के साथ इनके जुडने से उसका स्वय का व्यक्तित्व तिरोहित हो जाता है तथा व्यक्तित्व पर य आवरण प्रभावी हो जाते हैं। यदि व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रभावी है तब तो ये आवरण उसके विकास मे सहायक होगे। परन्तु यदि ये व्यक्तित्व पर प्रभावी हैं तो विवेक सही काय नही करेगा तथा फल-स्वरूप मूल्याकन भी सही नही होगा तथा व्यक्तित्व की गतिशीलता समाप्त हो जायेगी। आग बढना रुक जाता है अथात् स्थिरता आ जाती है। स्थिरता ही मृत्यु है। ऐसी स्थिति मे पद, प्रतिष्ठा, सत्ता, अथ, लाभ मोह आदि विकास के साधन न रहकर मृत्यु अर्थात् पतन के कारण बन जाते हैं।

हम अकाल मत्यु के ग्रास न बनें, हमारा पतन न हो, इसके लिए आवश्यक है कि जीवन के प्रत्येक परिणाम का मूल्याकन करते चलें, विवेकहर्त्ता आवरणो को अपन पर हावी न होने दें तथा वास्तविकताओ को सम्मुख रखते हुए निरन्तर गतिशील रह, आगे बढत रह, आगे बढत जायें।

●

बल्व बुझ जाता है

*

विश्वम्भरप्रसाद शर्मा 'विद्यार्थी'

जीवन जीते है। जिया है। जीना आया नही। कुछ सस्कार ऐसे ही है। मुझे बडा अफसोस हुआ। जीवन के अन्तिम क्षणो म। ये चिन्तन परक रेखायें मेरे चेहरे पर उभरती हुई चाय के कप की सिप के साथ सो गई और मैं भी ऊघने लगा।

एक कबूतर खाना मेरी आखो मे घूम गया। एक गुटर गू मुझे चूम गई और मैं भी मेरी मनोकामनाओ के साथ जसे कबूतर नाचता है, कबूतरी पर वसा ही यह चिन्तन था। मुझे हसी आ गई। क्या मेरा जीवन पीजन-हॉल की तरह नही। विराट मे हम सूक्ष्म होकर जीने हैं। कितनी अहमियत के साथ भूल जाते हैं विराट को। कसी है मेरी मन स्थिति।

इसान का जीवन कबूतर की तरह है। जहा भी गया कबूतरो की तरह इसान दाने बिखेरने के वक्त आते हैं। दाने खतम होने का वक्त आया। उडान भरते है। देखकर मनुष्य की जीवन लीला जीवन की परिधियो म घुल मिलकर आख मूद लेता हू। सोचता हू कबूतर दाने चुग रहे है।

कुछ प्रश्न अनायास कोई कर बठता है तो सोचता हू कि यह भोलापन है। हैं सोचना गलत है। पाव आटे के आदमी को यहा बोलने का अधिकार नही। मैं लौट जाता हू पीजन-हॉल मे।

मैं अन्तमन से चाहता हू। मुझे छेडे नही कोई। मैं शातचित्त भाव से बठ जाता हू। ऑन होते ही चलने लगता हू। आफ होते ही बठ जाता हू। किसी से कुछ नही कहता।

आदमी भी पक्षियो की तरह पाला जाता है। बुलवाया जाता है, वही आदमी अच्छा है। वही पक्षी विद्वान है।

मैं समझता हू अभिव्यक्ति स्वर का क्या हुआ। क्या मैंन ससार म इसी कारण

जन्म लिया है।

इसलिए इस छोटी दुनिया मे, मन म अपनी बीती से बातचीत कर, सबको ही वह देता हू। आप कितने अच्छे ह। बस ! इतना ही काफी है, बल्व जगाने के लिए। उत्तर मिलता है। आज क्या बात है ?

कुछ बालने के बहाने कुछ शफोकेशन मिटाने के लिए।

मैं इसलिए सभ्य हू। अपने पीजन-हॉल मे चला जाता हू। आगत का स्वागत करने के लिए बस ! आज की सभ्यता का यही चरम बिन्दु है। यह विकास है। आज का जीवन पीजन हॉल नही ! क्षमा कीजियेगा। बल्व बुझ जाता है। सभ्यता की चरम परिणिति के साथ।

●

हम प्रकृति से सीखें

•

श्रीमती शकुन्तला जैन

चिड़िया के घोंसले में प्रकाश किरण ने आख खोली और चिड़िया की बन्द आखें, बन्द पाखें खुल गई। उसका शरीर झूमने लगा। भोर के विमल प्रकाश ने उसे इतना आह्लादित कर लिया कि वह नाच नाचकर चीं चीं कर अपने संगी-साथियों को जगाने लगी पक्षी कतार बाध आकाश मार्ग पर उड चले।

एक ही कार्यालय में एक सहकर्मी दूसरे सहकर्मी से ईर्ष्या करता है खुले में उसका उससे कोई विरोध नहीं विरोध है अपनी मित्र मण्डली में, जहा वह उसके आदर्शों की धज्जियां उडा पाता है, वह स्वय अपने आदर्श की बेल पर फूल नहीं खिला पाया, अभाव रहा नियमित भाव रूपी जल और क्रिया रूपी दिनकर प्रकाश का। अपने मन के आगन में फूली इस काटेदार सूनी अफूली बेल के ठूठ सौदर्य को जब जब वह देखता है, उसका हृदय टीसने लगता है और इस टीस के दर्द पर निष्क्रिय आलोचना का मरहम लगा लेता है। मनुष्य अपनी पाचों इन्द्रियों के हाथों फस जाता है। निन्दा विवर में पक्षी अपनी लघु इन्द्रियों के सहारे उड जाता है उन्मुक्त नील गगन में। मानव का गदला मन ही उसके विकास-पर्वत का कोहरा है, जो सदगुणों के रुपहले, सुनहले प्रकाश से प्रकाशित मुकुट को उस पर्वत को नहीं पहनने देता। हम अपने मन दर्पण में झाकें, हमने ईर्ष्या, द्वेष, अहम मत्सर की गन्दगी को अपने मन रूपी चेहरे से साफ किया है या नहीं? यदि नहीं तो अभी अवसर है, अवसर रहते हारना कैसा? उठो और चलो। जो चल पडते हैं वे ही प्राप्ति का आनन्द लाभ उठाते हैं, जो बैठे रहते हैं, वे कुम्भकर्ण की नींद सो जाते हैं और अवसर का सवेरा चुपके चुपके हौले हौले पाव दबाकर चला जाता है, कभी न लौटने के लिए।

••

सम्पर्क सूत्र

1 वासुदव चतुर्वेदी, अनु० अधि० रा० शै० प्र० अ० सस्थान, सहेली माग, उदयपुर
2 सीताराम स्वामी, श्री ज्योतिर्विज्ञान कार्यालय, रतनगढ (चुरू)
3 रूपनारायण काबरा, व्या०, रा० उ० मा० वि० जोबनेर-303329
4 गिरधारीलाल व्यास, छबीली घाटी, बीकानेर 334001
5 रविन्द्र डी० पडया व्या० रा० उ० मा० वि० खडगदा 314027
6 प्रेम शेखावत 'पछी' रा० मा० वि० करीरी-303803
7 अरविन्द तिवारी, रा० मा० वि० बासनी 341021
8 जगदीश प्रसाद सैनी, रा० मा० वि० प्रीतमपुरी सीकर
9 गौरी शकर आय, कवि कुटीर, चौमहला 326515
10 त्रिलोक गोयल, अग्रसेन नगर, अजमर
11 मुरारी लाल कटारिया व्या० रा० उ० मा० वि० गुमानपुरा, कोटा
12 भोगीलाल पाटीदार, व० अ० रा० उ० मा० वि० बनकोडा, डूगरपुर
13 रमश भारद्वाज 4112 चौकडी वालो का मुहल्ला, नसीराबाद
14 प्रेम खकरधज, रा० मा० वि०, खरवा (पाली)
15 गोपीलाल 'शिक्षक' रा० उ० प्रा० वि० जाम्बूडा, पो० करावली वाया सलूम्बर, जि० उदयपुर
16 श्रीमती प्रभारानी शर्मा, व्या० मरुधर बालिका विद्यापीठ विद्यावाडी, रानी (पाली) 306115
17 बसन्ती लाल सुराना, व्या० महिला आश्रम उ० मा० वि० भीलवाडा 311001
18 रमश गग, व्या० रा० उ० मा० वि० निम्बाहडा
19 काशी लाल शर्मा व० अ० रा० उ०मा० वि० राजेन्द्र माग भीलवाडा 311001

20 भगवती लाल व्यास, 35 धाराल कॉलोनी, फतहपुरा, उदयपुर

21 पुष्पलता कश्यप, रा० प्रा० बालिका वि० उदयमन्दिर (आसन) जोधपुर (राज०)

22 चन्द्रदास चारण नवयुग ग्रंथ कुटीर के पीछे, कोटगट, बीकानेर

23 ब्र० ना० कौशिक, बिहाणी शिक्षा महाविद्यालय श्रीगंगानगर 335001

24 समीर शाद' अध्या० रा० प्रा० वि० थड छबडा कोटा 325220

25 ओमप्रकाश गुजर, 137 गारफ कोस स्कीम एयर फोस, जाधपुर

26 निशान्त c/o बसन्त लाल हेमराज पीलीबंगा 335803

27 शशिबाला शमा, रा० मा० बालिका वि० रावतभाटा चित्तौडगढ

28 श्रीमती सुमन सक्सेना व्या० रा० के० उ० मा० बा० वि० अजमेर

29 श्रीमती दयावती शर्मा, श्री रामदेव उच्च प्रा० बालिका वि० सगरिया

30 माधव नागदा, रा० उ० मा० वि० राजसमद 313326

31 श्याम सुन्दर व्यास, शि० प्र० अ० पचायत समिति भूपालसागर, चित्तौड

32 रामगोपाल शर्मा, रा० मा० वि० भाणूदा वाया रतनगढ (चुरू)

33 विश्वम्भर प्रसाद विद्यार्थी विवेक कुटीर, सुजानगढ (चुरू)

34 श्रीमती शकुन्तला जैन रा० उ० मा० बालिका वि० दवीजी की गली अलवर

शिक्षक दिवस प्रकाशनो की सूची

वष 1967से1973 तक इस योजना के अ तगत 31 सकलन प्रकाशित किय गये हैं। य 31 प्रकाशन शिक्षा निदेशालय के प्रकाशन अनुभाग ने सम्पादित किये थे। 1974 से सकलनो का सम्पादन भारतीय ख्याति के लेखको स करवाया गया। बाद के सम्पूर्ण सकलनो का विवरण इस प्रकार है—

1974 'रोशनी बाट दो' (कविता) स० रामदेव आचाय, 'अपने आस पास', (कहानी) स० मणि मधुकर, 'रग रग बहुरग' (एकाकी) स० डा० राजा नद, 'आधी अर आस्था थ भगवान महावीर (दा राजस्थानी उपन्यास) स०यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' 'बारखडी'(राजस्थानी विविधा)स०वद व्यास।

1975 'अपने से बाहर अपने म,' (कविता) स० मगल सक्सेना, 'एक और अन्तरिक्ष' (कहानी) स०डॉ० नवलकिशोर, 'सभाळ'(राजस्थानी कहानी) स० विजयदान दथा, 'स्वग भ्रष्ट' (उपन्यास) ले०भगवती प्रसाद व्यास, स० डॉ० रामदरश मिश्र, 'विविधा' स० राजेन्द्र शर्मा।

1976 'इस बार' (कविता) स० नन्द चतुर्वेदी, सकल्प स्वरा के' (कविता) स० हरीश भादानी 'बरगद की छाया' (कहानी) स० डा० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय चेहरा के बीच' (कहानी व नाटक) स० योगन्द्र किसलय' 'माध्यम' (विविध) स० विश्वनाथ सचदव।

1977 'सृजन के आयाम' (निबन्ध) स० डॉ० दवी प्रसाद गुप्त, 'वयो' (कहानी व लघु उपन्यास) स० श्रवणकुमार, चेत रा चितराम (राजस्थानी विविधा) स० डॉ० नारायणसिह भाटी, 'समय के सदभ (कविता) स० जुगमन्दिर तायल, रग वितान' (नाटक) स० सुधा राजहस।

1978 'अधेरे के नाम सधि पत्र नही' (कहानी सकलन) स० हिमाशु जोशी 'नखाण' (राजस्थानी विविधा) स० रावत सारस्वत, 'रचेगा सगीत' (कविता सकलन) स० नन्दकिशोर आचाय, 'दो गाव' (उपन्यस) लेखक मुबारक खान आजाद, स० डा० आदश सक्सेना, 'अभिव्यक्ति की तलाश' (निबन्ध) स० डॉ० रामगापाल गोयल।

1979 'एक कदम आग (कहानी सकलन) स०ममता कालिया, लगभग जीवन (कविता सकलन) स०लीलाधर जगूडी, जीवन यात्रा का कोलाज/ न० ? हिन्दी विविधा) स० डा० जगदीश जोशी, कोरणी कलम री, (राजस्थानी (विविधा)स० अन्नाराम सुदामा, यह किताब बच्चो का (बाल साहित्य) स० डॉ० हरिकृष्ण देवसरे।

1980 पानी की लकीर (कविता सकलन) स० अमृता प्रीतम, 'प्रयास'

10980
5-5-89

(कहानी सक्लन) स० शिवानी, मजूषा' (हिन्दी विविधा) स० राकेश जैन, 'अतस रा आखर (राजस्थानी विविधा) स० नृसिह राजपुरोहित, खिलत रह गुलाब'(बाल साहित्य) स० जयप्रकाश भारती।

1981 अधेरा का हिसाब'(कविता सक्लन)स० सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, 'अपने स परे' (कहानी सकलन) स० मन्नू भण्डारी एक दुनिया बच्चा की (बाल साहित्य) स० पुष्पा भारती 'सिरजण (राजस्थानी विविधा) स० तेजसिंह जोधा वन्द मातरम्' (हिन्दी विविधा) स० विवेकी राय।

1982 धमक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे'(कहानी सक्लन) स० मणाल पाण्डे 'कौमी एकता की तलाश और अन्य रचनाए' (हिन्दी विविधा) स० शिवरतन थानवी, 'अपना-अपना आकाश' (कविता सक्लन) स० जगदीश चतुर्वेदी, 'कूपळ' (राजस्थानी विविधा) स० कल्याण सिंह शेखावत 'फला के य रग (बाल साहित्य) लक्ष्मीचन्द्र गुप्त।

1983 'भीतर बाहर (कहानी सकलन) स० मदुल गग, 'रती के दिन रात (हिन्दी विविधा) स० प्रभाकर माचवे 'घायल मुटठी का दद' (कविता सक्लन) स० डॉ० प्रकाश आतुर, 'पाखुरिया माटी की' (बाल साहित्य) स० कन्हैयालाल नन्दन हिवडै रा उजास' (राजस्थानी विविधा) स० श्रीलाल नथमल जोशी।

1984 'अपना अपना दामन (कहानी सक्लन) स० मजुल भगत वस्तुस्थिति' (कविता सकलन) स० गिरधर राठी सचयनिका (विविधा) स० याज्ञवल्क्य गुर फूल सारू पाखडी (राजस्थानी)स० शक्तिदान कविया, सारे फूल तुम्हारे है (बाल साहित्य) स० स्नेह अग्रवाल।

1985 'रास्ते अपन अपने (कहानी सग्रह) स० राजेन्द्र अवस्थी सुनो ओ नदी रेत की (कविता सग्रह) स० बलदव वशी, बबूल की महक (बाल साहित्य) स० मस्तराम कपूर 'मन अचत के फूल (हिन्दी विविधा) स० कमल किशार गोयनका, 'माणक चोक राजस्थानी (विविधा) स०, मनोहर शर्मा।

1986 'ढाई अक्खर (कहानी सग्रह) स० आलमशाह खान, रेत का घर (कविता सग्रह) स० प्रकाश जैन रेत क रतन (बाल साहित्य) स० मनोहर प्रभाकर 'रत रा हेत (राजस्थानी विविधा) स० हीरालाल माहेश्वरी बूद-बूद स्याही (हिन्दी विविधा) स०पुरुषोत्तमलाल तिवारी।

1987 बीच का आदमी तथा अन्य कहानिया (कहानी सग्रह) स० शानी, 'निर्निमेष '(कविता सग्रह) स० मघराज मुकुल, मातिया का थाल (बाल साहित्य) स० मनोहर वर्मा, माटी की सुवास (हिन्दी विवधा) स० सावित्री डागा सिरजण री सौरम (राजस्थानी बिविधा) स० नन्द भारद्वाज।
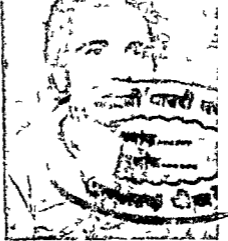
सावित्री डागा

जन्म बीकानेर। शिक्षा एम० ए०, पी एच० डी०, जोधपुर। प्रकाशित कृतियां—अमिट निशानी (1959), मुक्तावली, सीपी मुक्ता, सन्दर्भों से कटे हुए (कविता, राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरस्कृत, 1977) इसी सन्दर्भ है, एक प्यास जिन्दगी, आधुनिक हिन्दी मुक्तक काव्य में नारी, (शोध) सार्थकता की तलाश (साहित्यिक निबंध), कदा पन पड़ता है। सम्पादन 'अनुभूति से सहानुभूति तक,' शाकाहारी कविताएं आदि। शीघ्र प्रकाश्य—अपना मोक्ष।

रचनाएं प्रकाशित—विदेश सोवियत नारी' (रूस) देश की प्रायः सभी साहित्यिक स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित प्रशंसित एवं कई भाषाओं में अनूदित भी। कई संकलनों में प्रकाशित।

संस्थाएं—संस्थापिका "सम्भावना" (महिलाओं की साहित्यिक संस्था) अध्यक्ष प्र० ले० सं० जोधपुर। राजस्थान साहित्य अकादमी व अन्य कई राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं में सक्रिय सदस्य।

सन्दर्भ ग्रंथ—भारतीय लेखक कोश, Reference India, Reference Asia II आदि में परिचय प्रकाशित।

कार्यक्षेत्र—अध्ययन, अध्यापन, लेखन सम्पादन, शोध आदि। एसोशिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय।

अभिरुचि—संगीत, प्रकृति दर्शन, चित्रकला।

सम्पर्क—118, नेहरू पार्क, जोधपुर, राजस्थान।